17 अप्रैल, 2025
वैशाख, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी
संवत 2082
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
गुरुवार, वर्ष 10, अंक 177

* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

वायु सेना के कौशल और शौर्य को करीब से देखेगी जनता : संजय सेठ

FLORENCE
GROUP OF INSTITUTIONS
(A Unit of :Haji Abdur Razzaque Educational Society)
ADMISSION OPEN

COLLEGE OF NURSING
2 YEARS M.Sc. Nursing
2 YEARS Post Basic B. Sc. Nursing
4 YEARS B.Sc. Nursing
3 YEARS GNM (General Nursing And Midwifery)
2 YEARS ANM (Auxiliary Nurshing And Midwifery)

COLLEGE OF PARA MEDICAL SCIENCE
4 YEARS BMLT
2 YEARS DMLT
2 YEARS OT ASSISTANT
2 YEARS ECG
2 YEARS OPHTHALMIC ASST.
2 YEARS CRITICAL CARE (ICU)
2 YEARS RADIO-IMAGING
2 YEARS ANESTHESIA TECH.
1 YEARS DRESSERS

COLLEGE OF PHARMACY
2 YEARS D-PHARM
4 YEARS B-PHRRM

Separate Hostel For Boys & Girls
9031231082, 7903999411, 6205145470
E-mail: fsnirba@gmail.com
Website: www.florenceinstirba.com

न्यूज रील्स

चीन के 125% के जवाब में ट्रंप का 245% टैरिफ

वॉशिंगटन। अमेरिका और चीन के बीच टैरिफ लड़ाई और आगे बढ़ गयी है। अमेरिका ने अब चीन पर 100% और टैरिफ लगा दिया है। इसके साथ अमेरिका निर्यात होने वाले चीनी सामान पर कुल टैरिफ 245% हो गया है। चीन ने 11 अप्रैल को अमेरिकी सामान पर 125% टैरिफ लगाया था, जिसके जवाब में ट्रंप ने नया टैरिफ लगाया है। इससे पहले चीन ने कहा था कि अब वह अमेरिका की तरफ से लगाये जाने वाले किसी भी अतिरिक्त टैरिफ का जवाब नहीं देगा। अमेरिका की तरफ से नये टैरिफ के ऐलान के बाद चीन ने कहा कि हम अमेरिका के साथ ट्रेड वॉर करने से नहीं डरते।

देश के नये चीफ जस्टिस बनेंगे जस्टिस बीआर गवई

नयी दिल्ली। भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में जस्टिस बीआर गवई के नाम की आधिकारिक सिफारिश की है। उनके नाम को मंजूरी के लिए केंद्रीय कानून मंत्रालय को भेज दिया गया है। इसके साथ ही जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई का भारत का 52वां मुख्य न्यायाधीश बनना तय हो गया है। परंपरा है कि मौजूदा सीजेआइ अपने उत्तराधिकारी के नाम की सिफारिश तभी करते हैं, जब उन्हें कानून मंत्रालय से ऐसा करने का आग्रह किया जाता है। मौजूदा सीजेआइ संजीव खन्ना का कार्यकाल 13 मई को खत्म हो रहा है। सीजेआइ खन्ना के बाद वरिष्ठता सूची में जस्टिस गवई का नाम है। इसलिए जस्टिस खन्ना ने उनका नाम आगे बढ़ाया है। हालांकि उनका कार्यकाल सिर्फ 7 महीने का होगा।

अध्यक्ष के रूप में हेमंत सोरेन का कार्यकर्ताओं के लिए पहला संबोधन

आपकी मेहनत ही हमारी ताकत है और आपके सपने ही हमारी प्रेरणा : हेमंत

- अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार झामुमो कार्यालय पहुंचने पर हुआ जोरदार स्वागत

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। केंद्रीय अध्यक्ष बनने के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन बुधवार को हरमू रोड स्थित झामुमो के कार्यालय पहुंचे। वहां पार्टी के महासचिव विनोद पांडेय, सुप्रियो भट्टाचार्य समेत अन्य लोगों ने उनका स्वागत किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं विनम्रतापूर्वक इस जिम्मेदारी को स्वीकार करता हूं। उन्होंने सोशल मीडिया पर कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने लिखा, आपकी मेहनत ही हमारी ताकत है और आपके सपने ही हमारी प्रेरणा है।

पार्टी कैंप कार्यालय में मुख्यमंत्री करीब दो घंटे तक तक रहे। आगे की रणनीति पर अपने वरिष्ठ नेताओं के साथ चर्चा की। इस दौरान उन्होंने कहा कि झामुमो को मजबूत करने पर जोर दिया जायेगा। आज पहली बार पार्टी के दफ्तर पहुंचे हैं। अब वह लगातार यहां मिलते रहेंगे। झामुमो को हर स्तर पर मजबूत करना है।

झामुमो कोटे के मंत्री एक दिन दफ्तर में बैठेंगे: सुप्रियो

हेमंत सोरेन के पार्टी कार्यालय से जाने के बाद सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि केंद्रीय अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय पहुंचे थे। उन्होंने कई निर्देश दिये हैं। सुप्रियो ने बताया कि पार्टी दफ्तर में सप्ताह में एक दिन झामुमो कोटे के एक मंत्री बैठेंगे, ताकि पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ-साथ आम जनता की समस्याओं का तत्काल निपटारा हो सके।

यह साधारण पद नहीं, जनता की उम्मीदों का प्रतिनिधित्व है

पार्टी कार्यालय में हेमंत ने कहा कि आज जब मैं झारखंड मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष पद का दायित्व संभाल रहा हूं, तो मेरे मन में अनेक भावनाएं उमड़ रही हैं। यह कोई साधारण पद नहीं, बल्कि झारखंड की जनता के सपनों, संघर्षों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व है। हमारे संरक्षक शिबू सोरेन ने जिन विचारधाराओं की छांव तले झामुमो की नींव रखी थी, आज उसे आगे बढ़ाने का अवसर मिलना मेरे लिए गर्व का क्षण है। मैं विनम्रतापूर्वक इस जिम्मेदारी को स्वीकार करता हूं। प्रण लेता हूं कि झारखंड के हर गांव, हर गरीब, हर वंचित और हर युवा की आवाज बनूंगा। हमारी पार्टी का इतिहास संघर्षों से भरा है, लेकिन हमारा संकल्प अडिग है। आज फिर से हमें एकजुट होकर झारखंड की अस्मिता, विकास और न्याय के लिए संघर्ष करना है।

कार्यकर्ताओं से किया वादा: मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं सभी कार्यकर्ताओं, नेताओं और झारखंडवासियों से वादा करता हूं कि आपका विश्वास कभी टूटने नहीं दूंगा। पुनः मैं झामुमो की सर्वोच्च सोच को दोहराता हूं कि आइये हम सब मिलकर एक ऐसे समाज, राज्य एवं देश का निर्माण करें, जहां समानता हो, न्याय हो और हर नागरिक को गौरवपूर्ण जीवन मिले।

सोशल मीडिया पर कार्यकर्ताओं को दिया धन्यवाद: मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पर झामुमो कार्यालय की तस्वीर साझा करते हुए लिखा कि मेरे प्यारे कार्यकर्ताओं और साथियों, आप सभी के अथक संघर्ष, विश्वास और समर्पण के बिना यह सफर संभव नहीं था। आज जब मैं पार्टी अध्यक्ष का दायित्व संभाल रहा हूं, तो मैं आप सभी का आभारी हूं, जिन्होंने हर मुश्किल घड़ी में पार्टी और झारखंड के हितों को सर्वोपरि रखा। आपकी मेहनत ही हमारी ताकत है, और आपके सपने ही हमारी प्रेरणा। हम सब मिलकर झारखंड की सेवा, विकास और न्याय के लिए नये जोश के साथ आगे बढ़ेंगे।

झामुमो की केंद्रीय समिति में पांच राज्यों के सदस्य शामिल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। 15 अप्रैल को झामुमो के केंद्रीय महाधिवेशन में घोषित केंद्रीय समिति के सदस्यों की सूची बुधवार को जारी कर दी गयी। पार्टी ने इस बार झारखंड के अलावा बिहार, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश से भी केंद्रीय समिति का सदस्य बनाया है। जिन प्रमुख नेताओं को केंद्रीय समिति का सदस्य बनाया गया है, उनमें दुमका से शिबू सोरेन, नलिन सोरेन, बसंत सोरेन, लुइस मरांडी, आलोक कुमार सोरेन आदि शामिल हैं।

झामुमो केंद्रीय समिति के सदस्यों की पूरी सूची

दुमका: शिबू सोरेन, नलिन सोरेन, बसंत सोरेन, लुइस मरांडी, आलोक कुमार सोरेन, जोयेस बेसरा, अब्दुल सलाम अंसारी, शिवलाल मरांडी, सबिता टूडी, सुनीता मरांडी, सत्तार खान, जोसेफ हेंब्रम और कादिर रजा।

गोड्डा: ताला मरांडी, सिमोन मालतो, विनोद मुर्मू, सुनील मरांडी, पुष्पेंद्र टुडू, विकास मुर्मू, इंद्रजीत पंडित, मो इरफान, श्रवण कुमार मंडल, और राजेंद्र दास।

पाकुड़: स्टीफन मरांडी, समद अली, श्याम यादव, हरिवंश चौबे, उपासना मरांडी, प्रतिमा पांडेय, सुनील टुडू, निशा शबनम हांसदा, पिंकू शेख, उमर फारुख और पोलिना मुर्मू।

कोडरमा: गोपाल प्रसाद यादव, बैद्यनाथ मेहता, संजय पांडेय, गंगा प्रसाद यादव, इस्लाम अंसारी, रामेश्वर मुर्मू।

हजारीबाग: कमल नयन सिंह, सोनाराम मांझी, राजा खान, मो इजहार, गौरव पटेल, राजेश शर्मा उर्फ बिटु शर्मा, सुनील शर्मा, सैयनाथ गंझू, रामकिशोर मुर्मू, जानकी यादव, संजीव कुमार बेदिया।

गिरिडीह: सुदित्य कुमार सोनू, सरफराज अहमद, कल्पना सोरेन मुर्मू, निजामुद्दीन अंसारी, हीरालाल महतो, बरकत अली, केदार हाजरा, बबली मरांडी, अजीत कुमार पप्पू, प्रणव वर्मा, प्रमिला मेहरा, अखिलेश महतो, दिलीप मंडल, कोलेश्वर सोरेन, नुनूराम किस्कू, शत्रुघन मंडल, सुनील यादव।

चतरा: पंकज कुमार प्रजापति, अमरदीप प्रसाद, सुरेश साव, वंदना सिंह, बाबूलाल साव, मनोज चंद्रा, सरोज देवी, पूरण राम, असलम अंसारी।

खूंटी: सुदीप गुड़िया, राम सूर्या मुंडा, स्नेहलता कंडुलना, उषा धान, सुशांति कोंगारी, बीरेन कंडुलना, हेमंत टोपनो, भोलानाथ लाल, मकसूद अंसारी, मगन मंजीत तिडू, अमरनाथ मुंडा।

सिमडेगा: मो इरशाद, नोवस केरकेट्टा, धर्मदास टोप्नो,, प्रफुल्लित डुंगडुंग, सुनील खेस, फिरोज अली, नुसरत खातुन, बिरजो कंडुलना, संजरव डांग।

(शेष पेज 05 पर)

वक्फ कानून पर रोक से सुप्रीम कोर्ट का इनकार

- केंद्र सरकार से पूछा, क्या हिंदू धार्मिक ट्रस्टों में मुस्लिमों को जगह देंगे

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार के वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को दो घंटे सुनवाई हुई। इस कानून के खिलाफ 100 से ज्यादा याचिकाएं लगायी गयी हैं। सुप्रीम कोर्ट ने इन पर केंद्र से जवाब मांगा है, लेकिन कोर्ट ने कानून के लागू होने पर रोक नहीं लगायी है। सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ कानून के विरोध में देशभर में हो रही हिंसा पर चिंता भी जतायी। इस पर सॉलिसिटर जनरल (एसजी) ने कहा कि ऐसा नहीं लगना चाहिए कि हिंसा का इस्तेमाल दबाव डालने के लिए किया जा सकता है। कोर्ट ने कहा कि हम इस पर फैसला करेंगे।

सुनवाई के दौरान कपिल सिब्बल ने कहा कि वक्फ कानून के तहत बोर्ड में अब हिंदुओं को भी शामिल किया जायेगा। यह अधिकारों का हनन है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से पूछा कि क्या वह मुसलमानों को हिंदू धार्मिक ट्रस्टों का हिस्सा बनने की अनुमति देने को तैयार है। हिंदुओं के दान कानून के मुताबिक, कोई भी बाहरी बोर्ड का हिस्सा नहीं हो सकता है।

सीजेआइ संजीव खन्ना और जस्टिस पीवी संजय कुमार, जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच मामले पर सुनवाई कर रही है। केंद्र की ओर से एसजी तुषार मेहता पैरवी कर रहे हैं। वहीं कानून के खिलाफ कपिल सिब्बल, राजीव धवन, अभिषेक मनु सिंघवी, सीयू सिंह दलीलें रख रहे हैं।' सुप्रीम कोर्ट अब गुरुवार दो बजे सुनवाई करेगा। सुनवाई में अपीलकर्ताओं ने वक्फ बोर्ड बनाने, पुरानी वक्फ संपत्तियों के रजिस्ट्रेशन, बोर्ड मेंबरों में गैर-मुस्लिम और विवादों के निपटारों को लेकर मुख्य दलीलें दीं। बताते चलें कि संसद से चार अप्रैल को पारित हुए वक्फ संशोधन बिल को पांच अप्रैल को राष्ट्रपति की मंजूरी मिली थी। सरकार ने आठ अप्रैल से अधिनियम के लागू होने की अधिसूचना जारी की। तब से इसका लगातार विरोध हो रहा है।

मुजफ्फरपुर में बस्ती में आग, जिंदा जले 4 बच्चे

मुजफ्फरपुर। बिहार के मुजफ्फरपुर में बुधवार को एक दलित बस्ती के 50 से अधिक घरों में आग लग गयी। हादसे में चार बच्चों की मौत हो गयी है। मृतकों में छोटू पासवान की बेटी अंशिका कुमारी (05), राज पासवान की बेटी ब्यूटी कुमारी (08), सृष्टि कुमारी (06), विपुल कुमार (10) शामिल हैं। वहीं, 15 से 20 बच्चे आग से बचने के लिए इधर-उधर भाग गये थे। दो घंटे बाद गायब सभी बच्चे अपने घर पहुंच गये। मुजफ्फरपुर जिला प्रशासन का कहना है कि घटना में पांच व्यक्ति की मौत अफवाह थी। बताया जा रहा है कि शॉर्ट सर्किट की वजह से हाइ टेंशन तार गोलक पासवान के घर पर गिरा, जिसकी वजह से आग लगी। फिर देखते ही देखते पूरे झुग्गी इलाके में फैल गयी। इस दौरान कई झुग्गियों में रखे सिलेंडर ब्लास्ट कर गये।

योगी सबसे बड़ा 'भोगी' है: ममता बनर्जी

- इमामों के सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पर भड़कीं
- बंगाल सीएम ने कहा मुर्शिदाबाद दंगा में भाजपा-बीएसएफ की मिलीभगत

आजाद सिपाही संवाददाता

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने वक्फ एक्ट को लेकर इमामों के साथ एक बैठक के दौरान भाजपा नेताओं पर जमकर निशाना साधा। उनके निशाने पर उत्तर प्रदेश के मुख्यंत्री योगी आदित्यनाथ भी आये। ममता ने यूपी के सीएम पर निशाना साधते हुए कहा कि योगी सबसे बड़ा 'भोगी' है।

बताते चलें कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इससे पहले मंगलवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर तीखा हमला बोला था। उन्होंने वक्फ अधिनियम को लेकर उनके राज्य में हुई हिंसा पर उनकी चुप्पी पर सवाल उठाया था। योगी ने कहा था कि बंगाल जल रहा है। राज्य की मुख्यमंत्री चुप हैं। वह दंगाइयों को 'शांति का दूत' कहती हैं। लेकिन जो लोग केवल बल को समझते हैं, वे शब्दों को नहीं सुनेंगे।

ममता बनर्जी ने इस दौरान नये वक्फ बिल को अत्याचारी कानून करार दिया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से अपील भी की। उन्होंने कहा कि मैं प्रधानमंत्री मोदी से अपील करती हूं कि वे किसी भी 'अत्याचारी कानून' को अनुमति न दें और अपने गृह मंत्री पर नियंत्रण रखें। इमामों के साथ बैठक में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि वक्फ (संशोधन) अधिनियम देश के संघीय ढांचे के खिलाफ है। भाजपा पर आरोप लगाते हुए ममता बनर्जी ने कहा कि भाजपा ने रामनवमी के दौरान दंगे कराने की योजना बनायी, लेकिन विफल रही। मुर्शिदाबाद में हुए सांप्रदायिक दंगे पूर्व नियोजित थे। मैं लोगों को विभाजित नहीं होने दूंगी, मैं एकता चाहती हूं। मुर्शिदाबाद दंगा में भाजपा-बीएसएफ की मिलीभगत है।

हजारीबाग में जमीन विवाद में वकील के घर पर हमला

पेट्रोल बम और हथियारों से लैस भीड़ ने किया हमला, कई गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। कोर्रा थाना क्षेत्र अंतर्गत जबरा मौजा में 15 अप्रैल की मध्यरात्रि करीब एक बजे जमीन विवाद को लेकर एक अधिवक्ता मनोहर लाल के घर पर हमला किया गया। पीड़ित के अनुसार 40 से 50 अज्ञात और नामजद व्यक्तियों की भीड़ ने हथियारों और पेट्रोल बम से लैस होकर उनकी कृषि भूमि एवं मकान पर हमला कर दिया। इस हमले में लाखों की संपत्ति को नुकसान हुआ। पीड़ित परिवार ने किसी तरह अपनी जान बचायी। पीड़ित की भाभी शांतिदेवी की जमीन पर बने मकान और बाउंड्री को पूरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया गया। हमलावरों में अर्जुन शर्मा, नरगेश राणा, निर्मल मेहता, विजय प्रसाद महतो, अरविंद मेहता समेत कई नामजद लोग शामिल थे। भागते समय निर्मल मेहता ने अपने हथियार से फायरिंग की, जबकि कई अन्य ने पेट्रोल बम फेंका। मौके पर मौजूद तीन आरोपियों, गौतम सिंह, रौशन कुमार और पंकज कुमार को स्थानीय लोगों ने पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया। इन आरोपियों ने अन्य हमलावरों के नाम भी बताये, जिनमें पवन सोनी, रितिक सोनी, आयुष ठाकुर, अमन, राहुल यादव, पंकज यादव, शंकर सोनी, संदीप साव, गोलू, कुणाल राम और गणपत मेहता शामिल हैं। सूचना मिलने पर कोर्रा थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल से बरामद पेट्रोल बम और मोटरसाइकिलों को जब्त कर लिया। पकड़े गये तीनों आरोपियों को पुलिस ने अपनी हिरासत में लिया है।

रांची समेत पूरे देश में कांग्रेस का इडी ऑफिस के बाहर प्रदर्शन

संदर्भ: नेशनल हेराल्ड केस में सोनिया-राहुल पर चार्जशीट का विरोध

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (इडी) ने कांग्रेस के नेशनल हेराल्ड अखबार और एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) से जुड़े मनी लांड्रिंग केस में मंगलवार को पहली चार्जशीट दाखिल कर दी। इसमें सोनिया गांधी, राहुल गांधी, सैम पित्रोदा और सुमन दुबे के नाम शामिल हैं। इसके विरोध में कांग्रेस ने रांची समेत देशभर में इडी दफ्तरों के बाहर बुधवार को विरोध प्रदर्शन किया। दिल्ली में पार्टी मुख्यालय के सामने प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्ताओं को दिल्ली पुलिस ने हिरासत में लिया है। वहीं, रांची में भी कांग्रेस नेताओं ने इडी कार्यालय का घेराव किया। कांग्रेस कार्यकर्ता, नेता और मंत्री ने इडी कार्यालय के बाहर जमकर नारेबाजी की। इस दौरान इडी कार्यालय के बाहर सैकड़ों की संख्या में प्रदर्शनकारियों की भीड़ इकट्ठा हुई। सुबह 10 बजे से दोपहर दो बजे तक इडी कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन चलता रहा।

रांची में इडी कार्यालय का घेराव करते कांग्रेसी । (खबर पेज 03 पर)

बताते चलें कि मामले की सुनवाई 25 अप्रैल को दिल्ली के राउज एवेन्यू कोर्ट में होगी। कोर्ट ने इडी से मामले की केस डायरी भी मांगी है। 2012 में भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने सोनिया, राहुल और उनकी सहयोगी कंपनियों से जुड़े लोगों के खिलाफ इस मामले की शिकायत की थी। 12 अप्रैल 2025 को जांच के दौरान कुर्क संपत्तियों को जब्त करने की कार्रवाई की गयी। इडी ने दिल्ली, लखनऊ और मुंबई में 661 करोड़ रुपये की अचल संपत्तियों को कब्जे में लेने के लिए नोटिस जारी किया था।

कांग्रेस ने इसे बदले की राजनीति बताया है। जयराम रमेश ने कहा कि नेशनल हेराल्ड की संपत्ति जब्त करना कानून के शासन का मुखौटा पहने हुए राज्य प्रायोजित अपराध है। सोनिया गांधी, राहुल गांधी और कुछ अन्य लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल करना प्रधानमंत्री और गृह मंत्री की ओर से बदले की राजनीति और धमकी के अलावा कुछ नहीं है। हालांकि, कांग्रेस और उसका नेतृत्व चुप नहीं रहेगा। सत्यमेव जयते। उधर, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनवाला ने कहा कि अब इडी का मतलब डकैती तथा वंशवाद का अधिकार नहीं है। वे जनता का पैसा, संपत्ति हड़प लेते हैं और कार्रवाई होने पर विक्टिम कार्ड खेलते हैं। उन्होंने नेशनल हेराल्ड मामले में भी जनता की संपत्ति को अपना बना लिया।

गुरुग्राम जमीन घोटाले में वाड्रा से दो घंटे पूछताछ हुई

चंडीगढ़ (आजाद सिपाही)। गुरुग्राम जमीन घोटाला केस में कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा से लगातार दूसरे दिन प्रवर्तन निदेशालय (इडी) ने दो घंटे पूछताछ की। गुरुवार को उन्हें फिर से पूछताछ के लिए बुलाया गया है। वाड्रा सुबह 11 बजे इडी ऑफिस पहुंचे थे। उनके साथ प्रियंका गांधी भी थीं। वह पूछताछ तक वेटिंग रूम में बैठी रहीं। इससे पहले मंगलवार को भी इडी ने वाड्रा से करीब छह घंटे पूछताछ की थी। वाड्रा पूछताछ के लिए पैदल ही दफ्तर पहुंचे थे। इडी ऑफिस से निकलने के बाद वाड्रा ने कहा कि मैं कभी भी अपने आपको सॉफ्ट टारगेट नहीं बुलाऊंगा। आप (केंद्र सरकार) मुझे परेशान करोगे या कोई प्रेशर डालोगे, तो मैं और उभरकर आऊंगा, स्ट्रांग बनूंगा। हम लोगों की बात रखते हैं, इसलिए टारगेट पर हैं। हम किसी से डरते नहीं हैं। हम हमेशा लोगों के लिए लड़ते रहेंगे।

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 17 अप्रैल, 2025
www.azadsipahi.in

हेमंत सोरेनः छात्र नेता से झामुमो के अध्यक्ष पद तक का सफर

- राजनीति में कदम रखने के बाद कभी संघर्षों से पीछे नहीं हटे हेमंत
- शुरू से ही गंभीर राजनीति करते रहे हैं, सीधे लोगों से कनेक्ट करते हैं
- हर राजनीतिक झंझावात का डट कर मुकाबला किया और सफल हुए

देश के सबसे मजबूत क्षेत्रीय राजनीतिक दलों में शुमार झारखंड मुक्ति मोर्चा को 38 साल के बाद हेमंत सोरेन के रूप में नया अध्यक्ष मिला है। हेमंत सोरेन ने अपने पिता शिबू सोरेन से यह जिम्मेदारी ग्रहण की है। इससे पहले वह एक दशक से अधिक समय तक पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष रहे और उस दौरान उन्होंने झामुमो को नयी ऊंचाई पर पहुंचाया। एक रूढ़िवादी पार्टी, जिसे लीक पर चलना पसंद था और जो आदिवासियत के रंग में रंगी थी, उसका हेमंत सोरेन ने पूरी तरह रूपांतरण कर दिया। इसमें सबसे खास बात यह रही कि झामुमो नया तो बना, लेकिन उसका पुराना तेवर, पुरानी परंपराएं और पुराना रंग भी बरकरार रहा। इस लिहाज से हेमंत सोरेन ने जो कुछ किया, उसका कोई जोड़ कम से कम भारत में तो नहीं मिलता है। हेमंत सोरेन के साथ सबसे खास बात यह है कि वह गंभीर किस्म की राजनीति करते हैं और कोई भी फैसला करने से पहले उस पर कई बार सोचते हैं। उनका यह गुण झामुमो को नयी ऊर्जा देगा, क्योंकि शिबू सोरेन ने अपने राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में हेमंत सोरेन को संघर्ष और हिम्मत की जो घुट्टी पिलायी है, उससे हेमंत कभी पीछे नहीं हटेंगे। हेमंत सोरेन की सियासी कामयाबी किसी दंतकथा जैसी लगती है, क्योंकि उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा को उस ऊंचाई पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां कभी उसे हेमंत के पिता और राजनीतिक गुरु शिबू सोरेन ने पहुंचाया था। उन्हें बार-बार राजनीतिक झंझावातों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हर झंझावात का बखूबी सामना करते हुए अपने को एक लौह व्यक्तित्व के रूप में स्थापित कर दिया। एक व्यक्ति के तौर पर हेमंत सोरेन अंतर्मुखी हैं, लेकिन जब बात राजनीति की होती है, तो वह अपने अंतर्मुखी व्यक्तित्व को एक सीधे-सपाट व्यक्ति में बदल देते हैं, जिससे साबित होता है कि राजनीति उनकी व्यक्तिगत पसंद भी है। 49 वर्ष के हेमंत आज एक सियासी शख्सियत ही नहीं, चमत्कारी राजनेता बन चुके हैं। घर के भीतर हेमंत सोरेन एक आम पिता, पति और पुत्र होते हैं, लेकिन उनका एक खास गुण यह है कि वह कभी अपने कर्तव्यों को नहीं भूलते और न अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हटते हैं। हेमंत ने राजनीति की शुरुआत छात्र मोर्चा से की और आज झामुमो के अध्यक्ष हैं। कैसा रहा उनका यह सफर, बता रहे हैं **आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

राकेश सिंह

1947 में आजादी मिलने के कुछ दिन बाद देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू अमेरिका गये, तो वहां उनसे पूछा गया कि भारत का प्रधानमंत्री बनने के बाद उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती क्या थी। पंडित नेहरू ने जवाब दिया कि एक रूढ़िवादी और परंपरावादी देश-समाज को आधुनिक सोच का देश-समाज बनाना ही मेरी सबसे बड़ी चुनौती थी। पंडित नेहरू का यह कथन आज हेमंत सोरेन के लिए भी सही साबित हो रहा है, क्योंकि उन्होंने अपनी पार्टी को भी एक रूढ़िवादी और परंपरावादी पार्टी के रंग और तेवर को बरकरार रखते हुए देश की सबसे मजबूत क्षेत्रीय पार्टियों में शुमार करने में कामयाबी पायी है। झारखंड मुक्ति मोर्चा को 38 साल के बाद हेमंत सोरेन के रूप में नया अध्यक्ष मिला है, तो उसका उत्साह स्वाभाविक रूप से आसमान पर है। झामुमो अध्यक्ष पद की कुर्सी पर विराजमान होने से पहले हेमंत सोरेन को ऐसे राजनीतिक झंझावात का सामना करना पड़ा कि हर व्यक्ति इसका सामना नहीं कर सकता, लेकिन हेमंत सोरेन ने न सिर्फ उन राजनीतिक झंझावातों और साजिशों का सामना करते हुए संघर्ष के रास्ते झारखंड में ऐसी लंबी राजनीतिक लकीर खींच दी, जिसने उन्हें देश के संघर्षशील नेताओं की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया है।

कौन हैं हेमंत सोरेन

हेमंत का जन्म 10 अगस्त, 1975 को शिबू सोरेन और रूपी सोरेन के दूसरे पुत्र के रूप में हुआ। उनके बड़े भाई दुर्गा सोरेन की असामयिक मौत ने हेमंत को राजनीति में धकेल दिया। चूंकि शिबू सोरेन हमेशा घर से बाहर रहते थे और अलग झारखंड राज्य बनाने के लिए राजनीतिक आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे, हेमंत की बाल्यावस्था को उनकी मां ने सजाया-संवारा। पूरा परिवार पटना (एकीकृत बिहार की राजधानी) के अलावा रांची और दुमका में रहता था, हालांकि यह परिवार मूल रूप से रामगढ़ के पास नेमरा गांव का रहनेवाला है। हेमंत ने पटना हाइ स्कूल से इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की और बीआइटी मेसरा में इंजीनियरिंग में नामांकन लिया। बाद में उन्हें बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी। तब तक राजनीति में उनके नाम की पुकार होने लगी थी।

हेमंत एक दयालु, गंभीर और कोमल हृदय के व्यक्ति हैं। अपने पिता की तरह उनके भीतर मानवीय संवेदनाएं हिलोरें मारती रहती हैं। ऐसा शायद इसलिए है, क्योंकि हेमंत अपना खाली समय किताबों के साथ बिताते हैं। उन्हें पढ़ना बहुत पसंद है। संवेदनाओं को वह जल्दी अभिव्यक्त नहीं करते, लेकिन उन संवेदनाओं से वह हिम्मत ग्रहण करते हैं। चुनौतियों से भरे शुरुआती जीवन से लेकर मुख्यमंत्री बनने तक का उनका सफर संघर्षपूर्ण रहा। जमीन घोटाले में जेल भेज दिये जाने के बाद उनकी छवि और मजबूत हुई। जेल से वह तपे-तपाये नेता बन कर उभरे और झारखंड में सबसे लोकप्रिय नेता के रूप में अपने को स्थापित कर लिया। लोगों की सहानुभूति का कारवां उनके साथ चल पड़ा। पत्नी कल्पना सोरेन के साथ मिल कर उन्होंने पार्टी को चुनावी सफलता दिलायी। झामुमो का कार्यकारी अध्यक्ष रहते हुए वर्ष 2024 के विधानसभा चुनाव में पार्टी को दोबारा सत्ता में लाने वाले हेमंत सोरेन के हाथों में अब संगठन की पूरी बागडोर है। हेमंत सोरेन ने दृढ़ संकल्प, राजनीतिक कौशल और लचीलेपन के साथ झामुमो को एक नये मुकाम तक पहुंचाने में सफलता हासिल की। रणनीतिक कौशल और राजनीति में साम-दंड-भेद नीति से हेमंत सोरेन ने स्टीफन मरांडी, साइमन मरांडी, हेमलाल मुर्मू और चंपाई सोरेन जैसे वरिष्ठ नेताओं के आंतरिक प्रतिरोध के बावजूद खुद को शिबू सोरेन के उत्तराधिकारी के रूप में स्थापित करने में सफलता हासिल की। इसका परिणाम यह निकला कि फिलहाल चंपाई सोरेन को छोड़ कर झामुमो के सभी पुराने नेता फिर से पार्टी में लौट आये हैं और हेमंत सोरेन के नेतृत्व में पूरी आस्था व्यक्त करते हुए पार्टी के लिए काम कर रहे हैं। अपने तपे-तपाये चेहरे के साथ हेमंत सोरेन अब पार्टी में सर्वमान्य चेहरा बन कर उभर गये हैं।

34 साल की उम्र में पहली बार राज्यसभा के लिए चुने गये

हेमंत सोरेन के राजनीतिक जीवन की शुरुआत झारखंड छात्र मोर्चा के अध्यक्ष के रूप में हुई। बड़े भाई दुर्गा सोरेन के असामयिक निधन के बाद पिता शिबू सोरेन की मदद के लिए हेमंत ने पढ़ाई छोड़ दी और राजनीति के मैदान में उतर गये। 2009 में 34 साल की उम्र में वह पहली बार राज्यसभा के लिए चुने गये। उसी साल उन्होंने दुमका विधानसभा सीट भी जीती। 35 साल की उम्र में वह पहली बार उप मुख्यमंत्री बने और 38 साल की उम्र में मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचे।

बरहेट से लगातार तीन बार जीत मिली

इस बीच नेमरा से दुमका होते हुए 2014 में हेमंत सोरेन बरहेट पहुंचे और पिछले तीन चुनावों से वे बरहेट से ही जीत रहे हैं। हेमंत सोरेन का नेमरा से बरहेट तक का यह राजनीतिक सफर काफी दिलचस्प है। अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान हेमंत पर खनन और भूमि घोटाले सहित कई गंभीर आरोप लगाये गये। जनवरी 2024 में उन्हें मनी लांड्रिंग मामले में अंततः जेल भेज दिया गया, जिसके कारण उन्हें करीब पांच महीने के लिए सीएम पद छोड़ना पड़ा। हालांकि, उनकी जेल की अवधि ने एक दृढ़ नेता के रूप में उनकी छवि को और मजबूत किया। संघर्ष के रास्ते चलते हुए उन्होंने अपने को लौह पुरुष के रूप में स्थापित कर लिया। इस बीच, उनकी पत्नी कल्पना सोरेन एक राजनीतिक ताकत के रूप में उभरीं और साथ मिल कर उन्होंने झामुमो को चुनावी सफलता दिलायी।

शुरुआती जीवन चुनौतियों भरा

हेमंत सोरेन का शुरुआती जीवन चुनौतियों से भरा रहा। उनके पिता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के पास खेती के अलावा कोई और रोजगार नहीं था। इस वजह से परिवार को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा। महाजनों के शोषण के खिलाफ लड़ाई और झारखंड आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण शिबू सोरेन को वर्षों जंगल की शरण में रहना पड़ा। लेकिन वे टूटे नहीं, उस परिस्थिति में हेमंत सोरेन की मां रूपी सोरेन ने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने की पूरी कोशिश की।

शिबू सोरेन 1970 के दशक में अलग झारखंड राज्य की मांग को लेकर झामुमो की स्थापना में सक्रिय रूप से शामिल थे। जिस समय हेमंत सोरेन का जन्म हुआ था, उनके पिता टुंडी स्थित एक आश्रम में संताली समुदाय को जागरूक करने के लिए अभियान चला रहे थे। हेमंत सोरेन की मां रूपी सोरेन अपने पैतृक गांव नेमरा में रह कर अपनी बेटी अंजली सोरेन, बड़े बेटे दुर्गा सोरेन, दूसरे बेटे हेमंत सोरेन और छोटे बेटे बसंत सोरेन का पालन-पोषण करती रहीं।

गांव के ही सरकारी प्राथमिक स्कूल में मिली शिक्षा

बड़े बेटे दुर्गा सोरेन को अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए गुहियाजोरी गांव स्थित संत जोसेफ हाइ स्कूल में दाखिला कराया गया। यह स्कूल कभी संताल परगना का सबसे अच्छा शिक्षण संस्थान माना जाता था। वहीं, हेमंत सोरेन ने गांव के ही सरकारी प्राथमिक स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। बाद में, उन्हें उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा के लिए पटना के एमजी हाइ स्कूल में दाखिला दिलाया गया, जहां उन्होंने 12वीं तक की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने 1990 में मैट्रिक और 1994 में इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने रांची के बीआइटी मेसरा में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में दाखिला लिया, लेकिन राजनीति में आने के लिए उन्होंने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी।

छात्र मोर्चा अध्यक्ष के रूप में राजनीतिक करियर की शुरुआत

2003 में हेमंत सोरेन ने झामुमो की छात्र शाखा, झारखंड छात्र मोर्चा के अध्यक्ष के रूप में अपना करियर शुरू किया। हेमंत सोरेन का सपना इंजीनियर बनने का था, लेकिन पिता के राजनीति में रहने के कारण घर की परिस्थितियां बदल गयीं। एक मामले में उनके पिता शिबू सोरेन को गिरफ्तार कर लिया गया। वहीं उनके बड़े भाई दुर्गा सोरेन भी किडनी की बीमारी से पीड़ित रहने लगे। परिवार में ऐसी समस्याएं आने से हेमंत सोरेन विचलित हो गये।

शिबू सोरेन के सीएम नहीं बनने से गहरा सदमा लगा

वर्ष 2000 में अलग झारखंड राज्य बनने के बाद विधायकों की पर्याप्त संख्या नहीं होने के कारण शिबू सोरेन को मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया। इस घटना ने परिवार के साथ-साथ हेमंत सोरेन को भी झकझोर कर रख दिया, क्योंकि शिबू सोरेन के नेतृत्व में ही लंबे समय तक अलग राज्य के लिए आंदोलन चलाया जा रहा था और जब अलग राज्य का गठन हुआ, तो शिबू सोरेन की जगह भाजपा के बाबूलाल मरांडी पहले मुख्यमंत्री बन गये। इस घटना के बाद हेमंत सोरेन ने झामुमो कार्यकर्ताओं और झारखंड आंदोलनकारियों के साथ शिबू सोरेन को मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प लिया। पिता शिबू सोरेन के मुख्यमंत्री नहीं बनने से आहत होकर हेमंत सोरेन जैसे कई युवा झामुमो से जुड़ने लगे।

हेमंत सोरेन को पहले चुनाव में मिली हार

झामुमो को मजबूत बनाने के लिए युवाओं को जोड़ने के उद्देश्य से हेमंत सोरेन सक्रिय रूप से काम करने लगे। इसके परिणामस्वरूप पार्टी नेतृत्व ने 2005 में पार्टी के कद्दावर नेता प्रो स्टीफन मरांडी के बदले युवा हेमंत सोरेन को दुमका सीट से प्रत्याशी घोषित किया। इससे नाराज होकर प्रो स्टीफन मरांडी ने बगावत कर दी और हेमंत सोरेन के खिलाफ निर्दलीय चुनाव में उतर गये। इस चुनाव में स्टीफन मरांडी ने झामुमो के टिकट पर पहली बार चुनाव लड़ रहे युवा हेमंत सोरेन को हरा दिया।

2009 में बड़े भाई दुर्गा सोरेन की मौत के बाद बने उत्तराधिकारी

2009 में उनके बड़े भाई दुर्गा सोरेन की अचानक मृत्यु हो गयी। 2009 में उनकी मृत्यु के पहले तक दुर्गा सोरेन को ही शिबू सोरेन का राजनीतिक उत्तराधिकारी माना जाता था, लेकिन इस घटना ने हेमंत सोरेन के राजनीतिक जीवन में एक नया मोड़ ला दिया। दुर्गा सोरेन की कमी को अब हेमंत सोरेन ने भरपाई करने का बीड़ा उठाया। हेमंत सोरेन अपने शोकग्रस्त परिवार को सहारा देने के लिए आगे आये और जून 2009 में राज्यसभा के लिए चुने गये। हालांकि, उसी वर्ष बाद में उन्होंने दुमका विधानसभा सीट जीती और राज्य की राजनीति पर ध्यान केंद्रित करने के लिए राज्यसभा से इस्तीफा दे दिया।

2010 में पहली बार उपमुख्यमंत्री का मिला पद

2010 में झामुमो ने भाजपा के साथ मिल कर गठबंधन सरकार बनायी, जिसमें हेमंत सोरेन अर्जुन मुंडा के नेतृत्व में उपमुख्यमंत्री के रूप में शामिल हुए। हालांकि जनवरी 2013 में उन्होंने स्थानीय मुद्दों पर नीतिगत असहमति का हवाला देते हुए मुंडा सरकार से समर्थन वापस ले लिया, जिसके कारण राष्ट्रपति शासन लागू हो गया।

2013 में हेमंत सोरेन पहली बार सीएम बने

छह महीने बाद हेमंत सोरेन ने अपना पहला राजनीतिक कार्ड खेला, जब उन्होंने कांग्रेस और राजद के साथ गठबंधन सरकार बनायी। जुलाई 2013 में उन्होंने पहली बार झारखंड के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली, लेकिन 17 महीने तक मुख्यमंत्री के रूप में संक्षिप्त कार्यकाल के बाद 2014 के विधानसभा चुनावों में झामुमो को हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, विपक्ष के नेता के रूप में हेमंत सोरेन ने अपनी राजनीतिक रणनीति को फिर से परिभाषित किया। उन्होंने आदिवासी पहचान को प्रभावित करने वाले भूमि कानूनों जैसे मुद्दों पर रघुबर दास के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के खिलाफ आंदोलन किया।

2019 में झामुमो-कांग्रेस-राजद गठबंधन को बहुमत

हेमंत सोरेन की रणनीति और उनके प्रयासों के कारण 2019 के विधानसभा चुनाव में झामुमो-कांग्रेस-राजद गठबंधन ने भाजपा को सत्ता से बेदखल करते हुए 47 सीटें हासिल कीं। हेमंत सोरेन 29 दिसंबर, 2019 को दूसरी बार मुख्यमंत्री बने।

जेल जाने के बावजूद हेमंत सोरेन की पकड़ मजबूत हुई

अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान हेमंत सोरेन पर खनन और भूमि घोटाले सहित कई गंभीर आरोप लगे। जनवरी 2024 में उन्हें मनी लांड्रिंग मामले में जेल भेजा गया, जिसके कारण उन्हें पांच महीने के लिए पद छोड़ना पड़ा। हालांकि, उनकी जेल की अवधि ने एक दृढ़ नेता के रूप में उनकी छवि को और मजबूत किया। जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने तीसरी बार फिर से सीएम के रूप में शपथ ली। इस बीच, उनकी पत्नी कल्पना सोरेन एक राजनीतिक ताकत के रूप में उभरीं और साथ मिल कर उन्होंने झामुमो को चुनावी कामयाबी दिलायी। संघर्ष, कुशल नेतृत्व और दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति के कारण ही हेमंत सोरेन आज झामुमो के अध्यक्ष बनाये गये हैं। पार्टी को उनसे और भी काफी अपेक्षाएं हैं। हेमंत सोरेन ने भी संकल्प लिया है कि वे पार्टी हित में अपना सब कुछ न्योछावर कर देंगे।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	30.7 °C	17.9 °C
सूर्यास्त (आज)	:	18.10 बजे
सूर्योदय (कल)	:	05.27 बजे

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 17 अप्रैल, 2025
www.azadsipahi.in

आर्मी ग्राउंड पहुंचे रक्षा राज्य मंत्री, एयर शो की तैयारियों का लिया जायजा

वायु सेना के कौशल और शौर्य को करीब से देखेगी जनता : संजय सेठ

- सेना में सेवा को उत्साहित युवाओं के उत्साहवर्द्धन के लिए हो रहा कार्यक्रम
- वायु सेना के अधिकारियों ने दी ब्रीफिंग, ऐतिहासिक होगा यह शो

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ तंजानिया दौरे के बाद बुधवार को रांची पहुंचे। यहां रक्षा राज्य मंत्री सीधे नामकुम आर्मी ग्राउंड गये, जहां सूर्य किरण की टीम के द्वारा दो दिवसीय एयर शो आयोजित किया गया है। रक्षा राज्य मंत्री की पहल और प्रयास से हो रहे इस कार्यक्रम में उन्होंने वायु सेवा के अधिकारियों से बातचीत की। कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की और इस एयर शो की रूपरेखा से संबंधित जानकारी प्राप्त की। विदित हो कि 19 और 20 अप्रैल को सुबह 9:00 बजे रांची में विश्वस्तरीय एयर शो का आयोजन सूर्य किरण टीम द्वारा किया जा रहा है। भारतीय वायुसेना की यह टीम विमानों के द्वारा कई रोमांचकारी करतब दिखायेगी। इस दौरान संजय सेठ ने कहा कि सेना के जवानों का शौर्य और कौशल को करीब से देखने का यह ऐतिहासिक, अविस्मरणीय एवं स्वर्णिम अवसर होगा। इसे ऐतिहासिक और अविस्मरणीय बनाने के लिए वायुसेना अनथक परिश्रम कर रही है। इस कार्यक्रम में सभी रांचीवासी सादर आमंत्रित हैं। रक्षा राज्य मंत्री ने कहा कि देश की यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलने के साथ ही आरंभ से उनका यह प्रयास रहा कि रांची और झारखंड की जनता सेना के शौर्य और कौशल को करीब से देख सके, उसे महसूस कर सके और सेना में सेवा देने के लिए युवाओं की उत्सुकता और बढ़ सके। इसी उद्देश्य के साथ उन्होंने पिछले वर्ष सेना को जानो कार्यक्रम का तीन दिवसीय आयोजन कराया था। यह कार्यक्रम भी उसी कड़ी का एक हिस्सा है। रांचीवासी वायु सेवा के शौर्य को करीब से देखेंगे। इससे हमारे क्षेत्र के युवाओं का सेना में जाने का उत्साह और दुगना होगा। रक्षा राज्य मंत्री ने रांचीवासियों से इस आयोजन को ऐतिहासिक बनाने का आह्वान किया है।

रांची में पहली बार एयर शो सीएम को दिया गया निमंत्रण

आजाद सिपही संवाददाता

रांची। रांची में पहली बार भारतीय वायुसेना का एयर शो होने जा रहा है। इस खास कार्यक्रम के लिए रांची के उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने झारखंड के मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन को आमंत्रण दिया है। यह एयर शो 19 और 20 अप्रैल 2025 को खोजा टोली, नामकुम के आर्मी ग्राउंड में आयोजित किया जायेगा। इस शो में भारतीय वायुसेना की सूर्यकिरण एरोबेटिक टीम शामिल होगी। यह टीम आसमान में हवाई जहाज से जबरदस्त करतब दिखोयगी, जिसे लोग देख कर हैरान रह जायेंगे। एयर शो 19 और 20 की सुबह 9:45 बजे से 10:45 बजे तक चलेगा। यानी हर दिन एक घंटे तक यह कार्यक्रम होगा।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन बुधवार को करमटोली स्थित रांची प्रेस क्लब पहुंचे। मुख्यमंत्री वहां डॉ राजन कुमार सिंह के पुत्र कुशल के वैवाहिक समारोह में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कुशल को सुखद दांपत्य जीवन की मंगलकामनाएं एवं शुभाशीष दी। मौके पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने डॉ राजन कुमार सिंह एवं उनके परिजनों को हार्दिक बधाई दी।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष परिश्रम-प्रयास से आवश्यक कार्य में सफलता मिलेगी। नौकरी-व्यापार में उन्नति।

वृष रोजी-रोजगार में सफलता मिलेगी,किसी खास व्यक्ति के सहयोग से महत्वपूर्ण काम बनेगा

मिथुन परिस्थिति में सुधार होगा,बकाये रकम की प्राप्ति होगी, वस्त्र-आभूषण,धन-द्रव्य की प्राप्ति होगी।

कर्क कर्मक्षेत्र में यशस्वी कार्य करने का अवसर मिलेगा, महत्वकांक्षा पूरी होगी।

सिंह रुका हुआ काम पूरा होगा, हर्षदायक समाचारों की प्राप्ति होगी, वाहन की सवारी सावधानी से करें दुर्घटना की आशंका।

कन्या नौकरी में उन्नति होगी, महत्वपूर्ण कार्य पूरा होगा, आर्थिक लाभ, घर-गृहस्थी में सुख-शांति का वातावरण रहेगा।

तुला परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होगा. स्वजन-मित्रों का सहयोग, नौकरी में बदलाव होने की संभावना।

वृश्चिक संतान पक्ष से सुखद समाचार की प्राप्ति होगी,व्यवसाय की स्थिति में सुधार,संतोषजनक धनलाभ होगा.

धनु इच्छित कार्य सफल होगा, महत्वपूर्ण समाचारों की प्राप्ति होगी, विरोधियों पर विजय, मन प्रसन्न रहेगा।

मकर आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, रोग-ऋण-शत्रुबाधा का शमन, घर-गृहस्थी में सुख-शांति का वातावरण बनेगा।

कुंभ स्वास्थ्य बाधा,दिमागी तनाव, इष्ट-मित्रों-स्वजनों से मार्मिक पीड़ा, परिश्रम-प्रयास से आवश्यक काम पूरा होगा।

मीन आयु-आरोग्य की रक्षा होगी, बकाये रकम की प्राप्ति, श्रेष्ठजनों के सहयोग से रोजी-रोजगार में उन्नति होगी।

कांग्रेस का इडी ऑफिस के बाहर जोरदार प्रदर्शन

- प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो ने भाजपा पर किया तीखा प्रहार

आजाद सिपही संवाददाता

रांची। नेशनल हेराल्ड केस में सोनिया गांधी और राहुल गांधी पर दर्ज मामले के विरोध में बुधवार को कांग्रेस नेताओं ने रांची स्थित प्रवर्तन निदेशालय (इडी) कार्यालय का घेराव किया। कांग्रेस कार्यकर्ता, नेता और मंत्री ने इडी कार्यालय के बाहर जमकर नारेबाजी की। सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक इडी कार्यालय के बाहर विरोध-प्रदर्शन चलता रहा।

कांग्रेस की सक्रियता देख बौखला गयी है भाजपा : के राजू

विरोध प्रदर्शन के दौरान झारखंड प्रभारी के राजू ने कहा कि भाजपा इस देश में लगातार लोकतंत्र और संविधान की हत्या कर रही है। नेशनल हेराल्ड केस में सोनिया गांधी और राहुल गांधी दोनों को क्लीन चिट मिल चुकी है, लेकिन आगामी चुनाव में कांग्रेस की सक्रियता देख भाजपा बौखला गयी है।

चुनाव आते ही रेस हो जाती है भाजपा की इडी : केशव महतो

प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कहा कि जब कभी देश के किसी भी राज्य में चुनाव होने वाले होते हैं, भाजपा की इडी सक्रिय हो जाती है। केंद्र सरकार विपक्ष को कुचलने का प्रयास कर रही है, ताकि विपक्ष जन मुद्दों पर खामोश रहे और प्रधानमंत्री देश की संपत्ति अपने पूंजीपति मित्रों को बेचते रहें। उन्होंने कहा देश के सभी भ्रष्टाचारियों को प्रधानमंत्री ने अपने दल में शामिल कर रखा है।

कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव ने कहा कि सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल करना, प्रधानमंत्री और गृहमंत्री की ओर से केवल एक राजनितिक बदला और धमकी है। कांग्रेस के उपनेता राजेश कच्छप ने कहा कि यह मामला केवल राजनीति दृष्टिकोण से प्रेरित है। राहुल गांधी की सच्चाई से डरकर भाजपा ऐसी कार्रवाई कर रही है।

मंत्री, विधायक, नेता और सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ता रहे मौजूद

इस विरोध प्रदर्शन के दौरान झारखंड प्रभारी के राजू, झारखंड के सह प्रभारी डॉ सिरिवेला प्रसाद, केशव महतो कमलेश, नेता प्रदीप यादव, राजेश कच्छप, बंधु तिर्की, जलेश्वर महतो, मंत्री डॉ इरफान अंसारी, सुबोधकांत सहाय, सुरेश बैठा, रामचंद्र सिंह, नमन विक्सल कोंगाडी, अंबा प्रसाद, राजेश ठाकुर, डॉ प्रदीप बलमुचू, केएन त्रिपाठी, गुंजन सिंह एवं अन्य कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल रहे।

टीएसी की बैठक स्थगित

रांची (आजाद सिपाही)। ट्राइबल एडवाइजरी काउंसिल(टीएसी) की बुधवार को होने वाली बैठक अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दी गयी है। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की ओर से प्रेस विज्ञप्ति जारी कर यह जानकारी दी गयी है। बताया गया है कि 16 अप्रैल को प्रोजेक्ट भवन, एनेक्सी भवन सभागार में जनजातीय परामर्शदात्री समिति की होने वाली बैठक अपरिहार्य कारण वश स्थगित कर दी गयी है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में यह बैठक होनी थी।

आम लोगों की समस्याओं से रूबरू हुए सीएम

आजाद सिपही संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बुधवार को उनके कांके रोड स्थित आवास पर आम लोगों ने मुलाकात की। झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष बनने के अगले ही दिन मुख्यमंत्री ने अपने घर का दरवाजा आम लोगों के लिए खोल दिया। आम लोगों ने मुख्यमंत्री से मुलाकात कर अपनी समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। मुख्यमंत्री स्वयं एक-एक लोगों से रूबरू होकर, उनकी समस्याओं एवं परेशानियों को जाना और उनसे आवेदन प्राप्त किये। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सभी आवेदनों पर समुचित समाधान एवं निराकरण का भरोसा लोगों को दिलाया। मौके पर मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के त्वरित निराकरण के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि जन समस्याओं के समाधान के लिए उनकी सरकार निरंतर कार्य कर रही है। समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए राज्य सरकार संकल्पबद्ध है। मौके पर कई विभिन्न संगठनों के लोगों ने भी मुख्यमंत्री से मुलाकात की।

नेशनल हेराल्ड मामले में चोरी के साथ सीनाजोरी कर रही कांग्रेस : बाबूलाल

आजाद सिपही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में इडी द्वारा कांग्रेस प्रमुख सोनिया गांधी और राहुल गांधी पर चार्जशीट दाखिल किये जाने के बाद कांग्रेस पर निशाना साधा। मरांडी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी चोरी भी करती है और धरना-प्रदर्शन के रूप में लूट को छिपाने के लिए सीनाजोरी भी करती है। उन्होंने इडी की कार्रवाई को उचित कार्रवाई बताया। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में धरना-प्रदर्शन का अधिकार है। कांग्रेस पार्टी देश भर में धरना-प्रदर्शन कर रही है। लेकिन उन्हें जमीन और फंड लूटने का अधिकार नहीं है। बाबूलाल मरांडी बुधवार को पार्टी प्रदेश कार्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस एक राजनीतिक पार्टी है जिसे कई प्रकार की छूट मिलती है, लेकिन राजनीतिक पार्टी किसी निजी संस्था को पार्टी का फंड नहीं दे सकती। यह पूरी तरह से गैर कानूनी है। कांग्रेस ने नेशनल हेराल्ड की पूरी संपत्ति को गांधी परिवार के हाथों में लाने के लिए एक कॉरपोरेट साजिश रची। यंग इंडिया नाम की एक कंपनी बनायी गयी, जिसमें 38 प्रतिशत हिस्सा सोनिया गांधी का और 38 प्रतिशत राहुल गांधी का रखा गया। नौ करोड़ के इक्विटी शेयर इस कंपनी को ट्रांसफर किये गये। उन्होंने कहा कि शेयर के ट्रांसफर के बाद यंग इंडिया कंपनी के हाथ में नेशलन हेराल्ड की पूरी संपत्ति आ गयी। मरांडी ने कहा कि कांग्रेस ने नेशनल हेराल्ड को अपने निजी व्यापार में बदल दिया और अपना एटीएम बना लिया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी इसकी घोर भर्त्सना करती है और कांग्रेस पार्टी की प्रतिक्रिया और इडी को धमकाने की भाषा बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। प्रेसवार्ता में प्रदेश मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक और प्रदेश प्रवक्ता अजय साह भी उपस्थित थे।

साहिबगंज में अवैध खनन पर प्रशासन की बड़ी कार्रवाई, 8 मशीन जब्त

आजाद सिपाही संवाददाता

साहिबगंज। मंडरो अंचल में प्रशासन ने अवैध खनन के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। जिला प्रशासन ने एक्शन लेते हुए 8 मशीन जब्त की हैं। उपायुक्त के निर्देश पर मंगलवार रात छापेमारी अभियान चलाया गया। कार्रवाई का नेतृत्व अनुमंडल पदाधिकारी, साहिबगंज अमर जॉन आइंद ने किया। टीम जब बेलभद्री मौजा स्थित खनन स्थल पर पहुंची, तो वहां कार्यरत सभी खनन माफिया भाग खड़े हुए, जिससे उनकी पहचान नहीं हो सकी और कागजातों की जांच भी संभव नहीं हो पायी है। उनके साथ अंचल अधिकारी बासुकीनाथ टुडू, राजस्व उप निरीक्षक संजय गुप्ता, अंचल निरीक्षक मोहम्मद फारूख और क्यूआरटी टीम शामिल रही।

छापेमारी की कार्रवाई के दौरान यह पाया गया कि खनन स्थल पर कार्यरत 8 मशीन को दाग संख्या-20 के पास झाड़ियों एवं पहाड़ की तलहटी में छुपा दिया गया था और उनके रास्ते पर जानबूझकर मिट्टी डालकर अवरुद्ध किया गया था। जांच में सामने आया है कि लगभग 5 से 6 अलग-अलग स्थानों पर अवैध खनन हो रहा था। प्रशासन ने जब्त की गयी सभी मशीनों को मिर्जाचौकी थाना प्रभारी की अभिरक्षा में सौंप दिया है। इसके साथ ही अज्ञात खननकर्ता, खनन पट्टाधारी एवं मशीन चालक/मालिक के विरुद्ध झारखंड लघु खनिज समन्वयन नियमावली 2004, खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम 1957 एवं अन्य सुसंगत विधिक प्रावधानों के अंतर्गत मामला दर्ज करने का निर्देश जारी हुआ है। प्रशासन की इस त्वरित कार्रवाई को क्षेत्र में अवैध खनन के विरुद्ध एक कड़े संदेश के रूप में देखा जा रहा है।

पूर्व सांसद राजकिशोर महतो के बेटे का निधन

रांची (आजाद सिपाही)। गिरिडीह के पूर्व सांसद राजकिशोर महतो के मंझले पुत्र राजेश महतो उर्फ डब्बू बाबू का निधन हो गया। वह लंबे समय से बीमार थे। उनकी उम्र 53 साल थी। बता दें कि राजेश महतो झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक सदस्यों में से एक स्वर्गीय बिनोद बिहारी महतो के पोता थे। राजेश महतो का परिवार धनबाद के प्रमुख राजनीतिक घरानों में एक है। गौरतलब है कि 4 साल पहले भी सांसद के बड़े बेटे रजनीश महतो उर्फ बबलू कुमार का निधन हो गया था। वह करीब 50 साल के थे। उनको सांस लेने में तकलीफ थी। यह भी मालूम हो कि 2020 में पूर्व सांसद राजकिशोर महतो का भी निधन हो गया था। वह टुंडी और सिंदरी विधानसभा से विधायक भी रहे हैं।

मंत्री शिल्पी नेहा से मिले राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के अध्यक्ष

झारखंड में डेयरी विकास को मिलेगी नयी दिशा

आजाद सिपही संवाददाता

रांची। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक डॉ मीनेश शाह ने दो दिवसीय झारखंड दौरे के दौरान झारखंड के कृषि, पशुपालन और सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की से मुलाकात की। इस मौके पर उन्होंने मेधा डेयरी सहित एनडीडीबी की कार्य योजना पर चर्चा की। डॉ शाह ने बताया कि रांची के होटवार में झारखंड सरकार द्वारा संपोषित परियोजना जिसमें 20 मीट्रिक टन प्रतिदिन क्षमता का पाउडर प्लांट और एक प्रॉडक्ट प्लांट चल रहा है और गिरिडीह में 50 हजार लीटर की क्षमता वाला एक प्लांट लगाने की योजना है। यहां डेयरी से संबंधित प्रारंभिक गतिविधियों की शुरूआत कर दी गयी है।

राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत सेंटर की स्थापना : झारखंड में राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना के तहत एक सेंटर स्थापित करने की योजना है, जहां राज्य के किसानों को उच्च नस्ल की गायें उपलब्ध करायी जा सकें। इससे किसानों को गाय खरीदने के लिए दूसरे राज्यों में जाने की आवश्यकता नहीं होगी। मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की से मुलाकात के दौरान वेटनरी डॉक्टरों की उपलब्धता को लेकर भी चर्चा हुई। जिससे अब पशुपालकों को समय पर वेटनरी डॉक्टर उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक कदम उठाये जायेंगे। झारखंड दौरे के दौरान राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के अध्यक्ष, के द्वारा सारठ डेरी, देवघर, प्लांट का भी निरीक्षण किया गया। दूध उत्पादकों से मिलकर उनसे सुझाव प्राप्त किया और क्षेत्र में डेरी सहकारिता को मजबूत करने का भरोसा दिया।

हरमू नदी और बड़ा तालाब की सफाई पर हाइकोर्ट ने सरकार और रांची नगर निगम से मांगा जवाब

आजाद सिपही संवाददाता

रांची। झारखंड हाइकोर्ट ने जल स्त्रोतों, नदी, रांची के बड़ा तालाब की साफ-सफाई और संरक्षण के संबंध में लिये गये स्वतः संज्ञान पर सुनवाई की। मामले में चीफ जस्टिस एमएस रामचंद्र राव की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने बुधवार को राज्य सरकार से रांची के बड़ा तालाब और हरमू नदी की साफ-सफाई पर जवाब मांगा है। अगली सुनवाई नौ जून को होगी।

इससे पहले रांची नगर निगम की ओर से अधिवक्ता एलसीएन शाहदेव ने कोर्ट को बताया कि बीते 10-11 अप्रैल को निगम की ओर से हरमू नदी की सफाई करायी गयी है। निगम की ओर से समय-समय पर हरमू नदी की सफाई का कार्य किया जा रहा है। इस संदर्भ में उनकी ओर से हरमू नदी की सफाई से संबंधित फोटोग्राफ प्रस्तुत किया गया। कोर्ट ने निगम को मौखिक रूप से कही गयी इन बातों को शपथ पत्र के माध्यम से दाखिल करने का निर्देश दिया। वहीं हस्तक्षेपकर्ता झारखंड सिविल सोसायटी की ओर से अधिवक्ता खुशबू कटारुका ने कोर्ट को बताया कि बड़ा तालाब में जब तक इसकी गहराई में जमे गाद को नहीं हटाया जायेगा, तब तक पूरी तरह से बड़ा तालाब की सफाई नहीं हो सकेगी। उनकी ओर से यह भी बताया गया कि हरमू नदी में लोगों के घर से निकला हुआ सॉलिड कचरा जा रहा है। ऐसे में हरमू नदी की सफाई भी जरूरी है। इस पर सरकार की ओर से बताया गया कि बड़ा तालाब में वर्षों से जमे गाद को निकालने के लिए नगर विकास विभाग ने जुडको से संपर्क किया था लेकिन जुडको ने इसमें विशेषज्ञता नहीं होने की बात कहते हुए असमर्थता जतायी है। इसके बाद नगर विकास विभाग की ओर से जल संसाधन विभाग को बड़ा तालाब से गाद निकालने के संबंध में पत्र लिखा गया है। कोर्ट ने इस संदर्भ में राज्य सरकार को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया।

विवाहिता का शव बरामद, हत्या का आरोप

कोडरमा (आजाद सिपाही)। जिले के डोमचांच प्रखंड अंतर्गत फुलवरिया पंचायत के ग्राम बिगहा में बुधवार सुबह एक घर से संदिग्ध अवस्था में विवाहित महिला का शव बरामद हुआ है। मृतका की पहचान ललिता देवी (उम्र लगभग 30 वर्ष, पति अंशु मेहता, ग्राम बिगहा, पोस्ट फुलवरिया, थाना नवलशाही) के रूप मे हुई है। महिला के ससुराल वालों के अनुसार महिला का शव दुपट्टा के सहारे ऊपर लटका हुआ था, उसने आत्महत्या कर ली। वहीं दूसरी ओर मायके वालों ने हत्या का आरोप लगाते हुए बताया कि ललिता देवी की विवाह 2011 में प्रेम विवाह हुआ था। जिसके बाद से ही दोनों के बीच आए दिन विवाद होते रहता था। साथ ही बताया कि 2016 में भी अपेंडिक्स की दवा के साथ मिलाकर जहर खिला दिया गया था परंतु मायके वालों के द्वारा सदर अस्पताल ले जाया गया था जहां स्वस्थ हुई थी। जिसके कुछ साल बाद फिर एक बार जहर देकर मारने का प्रयास किया गया था परंतु उस समय भी सदर अस्पताल में ही ठीक हुई थी। मायके वालों ने बताया कि इस बार रस्सी के सहारे गला दबाकर हत्या कर दिया गया और उसे आत्महत्या का रूप दिया जा रहा है। बता दें कि मृतका को 9 वर्ष का पुत्र और 12 वर्ष की एक पुत्री है। इधर घटना की सूचना मिलते ही नवलशाही पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंचकर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल कोडरमा भेज दिया है। दूसरी ओर पुलिस घटना की जांच पड़ताल कर रही है।

शिक्षा विभाग की हुई मासिक बैठक

कोडरमा (आजाद सिपाही)। समाहरणालय सभागार में उप विकास आयुक्त ऋतुराज की अध्यक्षता में शिक्षा विभाग की मासिक समीक्षा बैठक संपन्न हुआ। बैठक में बच्चों के बीच यूनिफॉर्म वितरण, स्कूलों में बच्चों के नामांकन, पोस्ट ऑफिस में बच्चों का खाता खुलवाने, समेत पीएम पोषण शक्ति निर्माण योजना अंतर्गत प्रगति प्रतिवेदन पर विस्तार से समीक्षा किया गया। उप विकास आयुक्त ने सभी स्कूली बच्चों का पोस्ट ऑफिस में खाता खुलवाने का निर्देश दिये। बच्चों के बीच यूनिफॉर्म वितरण को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिये और कहा कि सभी कार्यों के लिए उपयोगिता प्रमाण पत्र उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे। उप विकास आयुक्त ने विद्यालय में बच्चों के नामांकन से संबंधित जानकारी ली और सभी बीपीओ को क्षेत्र भ्रमण कर विद्यालय में बच्चों के नामांकन कराने के लिए आवश्यक कार्य करेंगे। उप विकास आयुक्त ने विद्यालय के सभी कार्यों की मॉनिटरिंग करने के लिए मॉनिटरिंग टीम का गठन करेंगे। विद्यालय के बच्चों का आपार कार्ड बनाने का निर्देश दिये। बैठक में जिला शिक्षा अधीक्षक अजय कुमार, सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी और शिक्षा विभाग के कर्मचारी मौजूद रहे।

जनशिकायत समाधान कार्यक्रम में आये कई मामले

जयनगर (आजाद सिपाही)। प्रखंड के जयनगर पूर्वी पंचायत सचिवालय में महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक झारखंड रांची के प्राप्त मार्गदर्शन में पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह के निर्देश पर नागरिकों के शिकायतें का त्वरित और प्रभावी निराकरण किये जाने के उद्देश्य से पुलिस और नागरिकों के बीच बेहतर समन्वय को लेकर जनशिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें चंदवारा थाना क्षेत्र से सुनील कुशवाहा ने आवेदन दिया है कि मेरी पत्नी के नाम से जमीन है गोतिया लोग जबरन कब्जा करना चाहते हैं। मंदिर का दीवार तोड़ कर झंडा कबाड़ दिया। वहीं चंदवारा थाना क्षेत्र के रेवल कुशवाहा ने आवेदन दिया है कि एनएच चौड़ीकरण विवाद के कारण मुआवजा का राशि नहीं दिया जा रहा है। वहीं जयनगर थाना क्षेत्र के रूपलाल दास ने आवेदन दिया है कि गोतिया के द्वारा जबरन हिस्से की जमीन को जबरन हड़प रहा है। वहीं सिराज खान ने आवेदन दिया है कि फर्जी हुकुम नामा बनाकर जमीन पर कब्जा करना चाहता है। मौके पर डीएसपी रतिभान सिंह ने आवेदकों को आश्वासन दिया कि उपरोक्त आवेदन पत्र के आलोक में जांच कर अभिलंब कार्रवाई की जायेगा। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी गौतम कुमार, चंदवारा अंचल अधिकारी अशोक कुमार भारती, जयनगर थाना प्रभारी बबलू कुमार, चंदवारा थाना प्रभारी धानेश्वर कुमार, पुलिस अवर निरीक्षक विकास कुमार, प्रमोद पासवान, पारा लीगल वालंटियर अर्जुन दास, दिनेश रजक, सपना कुमारी सहित कई लोग मौजूद थे।

विकास राणा बने झामुमो के केंद्रीय समिति सदस्य, दी बधाई

झारखंड मुक्ति मोर्चा को मजबूत करना एकमात्र लक्ष्यः विकास राणा

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। विकास राणा को झारखंड मुक्ति मोर्चा का केंद्रीय समिति सदस्य नियुक्त किया गया। इसके लिए पार्टी के संस्थापक संरक्षक दिशोम गुरु शिबू सोरेन, झारखंड मुक्ति मोर्चा के नवनिर्वाचित केंद्रीय अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, विधायक कल्पना सोरेन सहित झारखंड मुक्ति मोर्चा के सभी वरिष्ठ नेतागण का आभार व्यक्त किया। 13वां केंद्रीय महाधिवेशन, रांची में केंद्रीय समिति सदस्य नियुक्त होने के बाद विकास राणा ने कहा कि नवनिर्वाचित केंद्रीय अध्यक्ष हेमंत सोरेन के कुशल नेतृत्व में संगठन मजबूत होगा। पार्टी ने मुझे दायित्व देकर जो सम्मान दिया है उसे पूरी निष्ठा और ईमानदारी से पूरा करूंगा। झारखंड मुक्ति मोर्चा को मजबूत करना मेरा लक्ष्य है। विकास राणा को झारखंड मुक्ति मोर्चा का केंद्रीय सदस्य नियुक्त किये जाने पर बधाई देने वालों में मुख्य रूप से आनंद सिंह, आफताब आलम, अजय कुमार, विवेक राणा, वीरेंद्र राणा, मो सलीम, अजय साव, मो खलील, नगर अध्यक्ष नवीन प्रकाश, नगर सचिव निसार अहमद, जितेन्द्र कुमार, कमाल कुरैशी, नईम राही, राजकिशोर प्रसाद सहित अन्य लोग शामिल हैं।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन, 95 मामले आये

पांच मामलों का ऑन द स्पॉट निष्पादन

पारिवारिक विवाद और जमीन से जुड़े मामले रहे अधिक

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन के निर्देश और डीजीपी अनुराग गुप्ता के नेतृत्व में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बुधवार को हजारीबाग नया समाहरणालय, बरही और बड़कागांव थाना परिसर में एक साथ जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डीआइजी अनुसंधान संध्या रानी मेहता की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सुबह 11 बजे से फरियादी तय कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने लगे। हजारीबाग के नया समरणालय परिसर में जिला के वरीय पदाधिकारी कार्यक्रम में शामिल हुए। जहां फरियादी अपनी समस्या लेकर एसपी अरविंद कुमार सिंह से मुलाकात कर उन्हें आवेदन दिया। सभी के आवेदन सूचीबद्ध किये गये ताकि निर्धारित समय पर समस्या का समाधान किया जा सके। वहीं कई मामलों का ऑन स्पॉट समाधान भी किया गया। डीआइजी संध्या रानी मेहता ने कहा कि यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिसमें समस्याओं का समाधान ऑन स्पॉट करने की कोशिश की जाती है। वैसा समस्या जिसका समाधान नहीं होता है उसे सूचीबद्ध किया जा रहा है। हजारीबाग एसपी स्वयं सारे मामले देख रहे हैं और संबंधित थाना को दिशा निर्देश भी दे रहे हैं। तीनों स्थानों पर कुल 95 मामले प्राप्त हुए, जिसमें 5 मामले को ऑन स्पॉट निष्पादित किया गया है। अधिकांश मामले जमीन विवाद से संबंधित प्राप्त हुई है। इस संदर्भ में लंबित सभी मामलों को निष्पादन हेतु संबंधित थाना प्रभारी को अग्रतर कार्रवाई करने का निर्देश पदाधिकारियों ने दिया। मौके पर प्रभारी एसडीओ बैजनाथ कामती, एएसपी अमित कुमार, सदर एसडीपीओ अमित आनंद, सीसीआर डीएसपी मनोज सिंह समेत सभी इंस्पेक्टर और थाना प्रभारी उपस्थित हुए।

घर में हो रही थी शादी की तैयारी

अचानक आ धमकी पुलिस, रुक गयी शादी

चाइल्ड लाइन और अधिकारियों की पहल से बालिका वधू बनने से बची

आजाद सिपाही संवाददाता

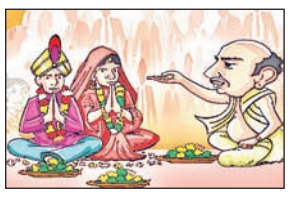

हजारीबाग/टाटीझरिया। बाल विवाह कानून जुर्म है इसके बावजूद के ऐसे परिवार के लोग हैं जो अपनी बेटी की शादी कम उम्र में ही कर दे रहे हैं। हजारीबाग में एक दिन में चार ऐसे मामले आए हैं जहां से नाबालिक बच्चियों को बाल विवाह होने से बचा लिया गया। टाटीझरिया में तो महज एक घंटा के पहले ही बाल संरक्षण की टीम और प्रशासन के सहयोग से बच्ची को बाल विवाह होने के पहले ही बचा लिया गया। अगर आपके आस-पास बाल विवाह को अंजाम दिया जा रहा है तो आप चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 पर कॉल कर सकते हैं। चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर के कारण ही हजारीबाग की चार बेटियों को बाल विवाह होने से रोका जा सकता है। हजारीबाग में पद स्थापित जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी संजय प्रसाद ने बताया कि हजारीबाग में आज के दिन चार बच्चियों को उनके भविष्य खराब होने के पहले रोका जा सका है। उनमें एक टाटीझरिया प्रखंड की थी, जिसकी शादी के महज एक से डेढ़ घंटा पहले बचा लिया गया। वहीं विष्णुगढ़ प्रखंड के एक गांव की रहने वाली एक नाबालिक को बाल विवाह होने से बचाया गया। 19 अप्रैल को उसकी शादी होनी थी। जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी संजय प्रसाद ने लोगों से अपील की है कि अगर आपके आसपास बाल विवाह की सूचना मिलती है तो इसकी जानकारी चाइल्ड हेल्प नंबर 1098 में अवश्य दे।

जेजेए हजारीबाग जिला इकाई का हुआ विस्तार

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। झारखंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन (जेजेए) हजारीबाग जिला इकाई का विस्तार किया गया। जिला अध्यक्ष कृष्णा गुप्ता ने नये जिला इकाई का विस्तार करते हुए प्रदेश कमिटी को उसकी जानकारी दे दी है। कमिटी में कृष्णा गुप्ता जिला अध्यक्ष, अर्जुन सोनी और गौरव प्रकाश को उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गयी है। वहीं अजय मिश्रा को सचिव और दीपक कुमार सिंह को कोषाध्यक्ष बनाया गया है। जबकि सागर कुमार को सयुंक्त सचिव बनाया गया है। वहीं कार्यकारिणी सदस्य के रूप में लखन पासवान, अभय सिंहा, उमाकांत शर्मा, रंजन चौधरी, रवि सिंह, राजेश मिश्रा, मो. मकबुल अंसारी, अमरकांत, विवेक सिंह, मो. एजाज आलम और सुमन सिंहा को रखा गया है।

पूर्व विधायक ने हेमंत सोरेन को दी बधाई

झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष चुने जाने पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बधाई दी गयी

आजाद सिपाही संवाददाता

जयनगर। प्रखंड बरकट्ठा विधानसभा के पूर्व विधायक जानकी प्रसाद यादव ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष चुने जाने पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दिया। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ पद नहीं, झारखंड के संघर्षशील विरासत की एक कठिन जिम्मेदारी है। झामुमो के हम सभी सिपाहियों को विश्वास है कि आप दिशोम गुरु शिबू सोरेन के सपनों का झारखंड गढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। आपका विजन, जन सरोकारों के प्रति आपकी प्रतिबद्धता, संघर्षशील नेतृत्व एवं आपका सर्वजनप्रिय व्यक्तित्व झामुमो को और मजबूत करेगा। आपके नेतृत्व में पार्टी को एक नई दिशा और द्रुत गति मिलेगी। वहीं झामुमो के केंद्रीय कार्यकारी अध्यक्ष चुने जाने पर गांडेय विधानसभा क्षेत्र की विधायक कल्पना मुर्मू सोरेन को हार्दिक शुभकामनाएं दी।

महायज्ञ को लेकर निकाली गयी भव्य कलश यात्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

सतगवां। प्रखंड के ईटाय में बुधवार को भव्य कलश यात्रा के साथ श्री श्री 1008 शिव परिवार 7 दिवसीय महायज्ञ का शुभारंभ हो गया। गाजे-बाजे, डीजे और घोड़े के साथ निकली इस कलश यात्रा में आसपास के हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। कलशयात्रा में डीजे साउंड के साथ रथ पर सवार भगवान सीता-राम, हनुमान की झांकी निकाली गयी। झांकी ने भी लोगों का ध्यान खींचा। इसके पूर्व बुधवार की सुबह यज्ञ आचार्य शास्त्री विजय पांडेय के निर्देशन में वैदिक ब्राह्मणों के द्वारा विधि-विधान के अनुसार यज्ञ स्थल से कलश यात्रा प्रारंभ हुई। कलश यात्रा जयनगर से टांड होते हुए ईटाय, पथरिया के रास्ते होते हुए घाघरा नदी घाट पर पहुंची। जहां 11 विद्वान पंडितों वैदिक में विनय पाठक, विजय पाठक, उपेंद्र पाण्डेय, स्थानीय पवन पाण्डेय, मनीष पांडेय, बच्चू पांडेय, मनोज पाण्डेय आदि की देखरेख में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच कलश में जल भरने का कार्यक्रम पूर्ण कराया गया। आयोजन समिति से जुड़े लोगों ने बताया कि 17 अप्रैल से प्रारंभ हुआ यह शिव प्राण प्रतिष्ठा सह महायज्ञ आगामी 22 अप्रैल को संपन्न होगा। महायज्ञ के दौरान वृन्दावन से पधारे कथावाचिका श्रद्धालुओं के बीच प्रवचन करेंगी व प्रयागराज से पधारे 25 सदस्यीय टीम के द्वारा भव्य रामलीला का कार्यक्रम की प्रस्तुति की जायेगी। लश यात्रा में स्थानीय पूर्व मुखिया जयशंकर प्रसाद, विश्व हिन्दू परिषद के प्रखंड अध्यक्ष बबलू सिंह, शिवराज सिंह, सुजीत कुमार, देवकांत पंडित, सज्जन सिंह, राजू कुमार, सचिन सिंह, शुभम कुमार, अंकित कुमार, विवेक कुमार, छाकों सिंह, श्रवण सिंह, राहुल सिंह, शशिभूषण सिंह, राजेश कुमार, सहित कई गणमान्य लोग शामिल हुए।

हाथियों का झुंड पहुंचा झुमरीतिलैया, लोगों में दहशत

आजाद सिपाही संवाददाता

आधी रात दीवार टूटने और हाथियों की आवाज से मची अफरा-तफरी

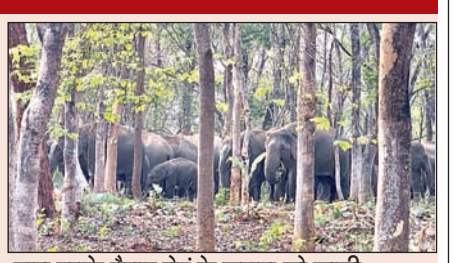

झुमरीतिलैया नगर परिषद क्षेत्र के वार्ड संख्या 28 मडुआटांड और यदुटांड़ के इलाके में मंगलवार की देर रात अचानक हाथियों के झुंड ने खेतों में लगे गेहूं के फसल और बाउंड्री को क्षतिग्रस्त करना शुरू कर दिया। दीवार टूटने और हाथियों की आवाज से लोगों की नींद खुली तो लोगों के बीच अफरा तफरी मच गयी। इस इलाके में आज तक हाथियों को नहीं देखा गया। झुंड में बच्चे और बड़े हाथी मिलकर 20 से 25 की संख्या में है। स्थानीय लोगों ने तत्काल इसकी सूचना वन विभाग कोडरमा को दी इसके बाद विभाग के द्वारा पटाखा छोड़कर और आग जलाकर हाथियों को रिहायसी इलाकों से दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीण महावीर यादव ने बताया कि सिंचाई का बेहतर साधन नहीं होने के बाद भी उन्होंने गेहूं का फसल लगाया था। हाल के दिनों में हुई बारिश की वजह से उन्होंने तैयार फसल को खेत में ही तिरपाल से ढंक कर रखा था। हाथियों के झुंड के द्वारा उनके तैयार गेहूं के फसल को काफी नुकसान पहुंचाया गया है। हाथियों के झुंड ने बिजली विभाग के द्वारा लगाये गये चार से पांच विद्युत पोल को भी क्षतिग्रस्त कर दिया है। किसान रंजीत यादव ने बताया कि खेत में सिंचाई का साधन नहीं होने पर कुआं बनाकर उन्होंने काफी मेहनत से गेहूं का फसल तैयार किया था। हाथियों के झुंड ने करीब 15 एकड़ में लगे गेहूं के फसल को रौंद दिया है जिससे उन्हें लाखों रुपये का नुकसान हुआ है।

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। कोडरमा के ग्रामीण इलाकों में पिछले करीब डेढ़ महीने से हाथियों का विचरण देखा जा रहा है। वन विभाग हाथियों को कोडरमा जिले से बाहर करने के प्रयास में जुटी हुई है। हाल के दिनों में वन विभाग ने हाथियों के झुंड को बिहार के जंगलों में प्रवेश कराया था। लेकिन एक बार फिर हाथियों के झुंड ने वापस कोडरमा में दस्तक दी है। इस बार हाथियों का झुंड शहरी इलाके में प्रवेश कर गया है। फिलहाल हाथियों का झुंड एक बड़े बाउंड्री कैंपस में है। जहां लगे 400 केले के पौधे को हाथी अपना आहार बनाकर विश्राम कर रहे हैं।

महुआ के सुगंध की तरफ आकर्षित होते हैं हाथीः वन विभाग के पंकज कुमार ने बताया कि पिछले दिनों जिले के ग्रामीण इलाकों में हाथियों के झुंड को देखा गया था। शहरी इलाके में हाथियों ने पहली बार प्रवेश किया है। अभी महुआ का सीजन है, हाथी इसकी सुगंध की तरफ आकर्षित होते हैं और उसी तरफ आगे बढ़ते हैं। उन्होंने लोगों से प्रशासन को सहयोग करने की अपील की है। हाथियों के द्वारा नुकसान पहुंचाने पर विभाग के द्वारा मुआवजा देने का प्रावधान है।

विश्व स्वास्थ्य दिवस का आयोजन

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। बच्चों के स्वस्थ जीवन और अच्छे स्वास्थ्य व्यवहार को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एनएमएल पकरी बरवाडीह कोयला खनन परियोजना द्वारा उत्क्रमित मध्य विद्यालय, महटीकरा में विश्व स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया गया। यद्यपि विश्व स्वास्थ्य दिवस हर वर्ष 7 अप्रैल को मनाया जाता है, किंतु विद्यालय में लगातार छुट्टियों के कारण इस वर्ष यह कार्यक्रम 16 अप्रैल को आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. निधि ने विद्यार्थियों को स्वच्छता और व्यक्तिगत साफ-सफाई के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को बताया कि हर रविवार नाखून काटना, साफ कपड़े पहनना, बालों और शरीर की सफाई रखना, शौच के बाद और भोजन से पहले हाथ धोना जैसी आदतें हमारे स्वास्थ्य के लिए कितनी जरूरी हैं। कुछ बच्चों ने मंच पर आकर अपनी रोजमर्रा की अच्छी आदतों को साझा किया, जिससे अन्य बच्चों को भी प्रेरणा मिली। कार्यक्रम में विद्यालय के कुल 155 विद्यार्थी, शिक्षक गण और प्रधानाध्यापक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में बच्चों को स्वास्थ्य किट वितरित की गयी, जिसमें टूथपेस्ट, ब्रश, जीभी, डेटॉल साबुन और नेल कटर शामिल था। किट पाकर बच्चे बहुत उत्साहित हुए और उन्होंने यह संकल्प लिया कि वे हमेशा स्वच्छता का पालन करेंगे और स्वस्थ जीवनशैली अपनायेंगे। यह पहल पकरी बरवाडीह कोयला खनन परियोजना की समुदाय के समग्र विकास और स्वास्थ्य के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

19-20 अप्रैल को पदमा प्रखंड की सभी पंचायतों में आयोजित किया जायेगा शिविरः सुनील कुमार

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। जिले में चल रहे सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान सह इच्छुक व्यक्तियों का ड्राइविंग लाइसेंस अप्लाई कार्यक्रम के संदर्भ में पदमा प्रखंड सभागार में बैठक आयोजित किया गया। बैठक में मुख्य तौर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी निधि रजवार, जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा हिट एंड रन के कमेटी के सदस्य सुनील कुमार, पदमा प्रखंड प्रमुख, सभी पंचायत से मुखिया, पंचायत समिति सदस्य के साथ सड़क सुरक्षा सहयोगी मित्र उपस्थित रहे। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी पदमा ने बताया कि प्रखंड के सभी लोगों के लिए बेहतर अवसर है सड़क सुरक्षा से संबंधित सभी को जानकारी होना चाहिए। योग्य व्यक्तिय जो वाहन चलाते हैं उनके पास ड्राइविंग लाइसेंस होना चाहिए, बिना मतलब का लोग फाइन भरते हैं। वहीं सुनील कुमार ने बैठक में आये सभी को संबोधित करते हुए ₹सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान-2025 से संबंधित विषयों को बताते हुए सभी प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि आपके पंचायत के पंचायत भवन में दिनांक 19-20 अप्रैल को समय 10:30 से 5 बजे संध्या तक शिविर आयोजन किया जायेगा। उक्त शिविर में सड़क सुरक्षा मानकों से संबंधित और मोटर वाहन अधिनियम 1988 के बारे में विशेष जानकारियां दी जायेगी। साथ ही साथ इच्छुक व्यक्तियों और वाहन चलाने योग्य हो चुके व्यक्तियों को ड्राइविंग लाइसेंस बनवाया जायेगा। उन्हें सरकार के द्वारा निर्धारित आवेदन शुल्क खुद भुगतान करना पड़ेगा।

पुजारी के आकस्मिक निधन से शोक

केरेडारी (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के पंचायत पचडा के अंकरोलिया स्थित मां शंकेशवरी धाम के मुख्य पुजारी सह महायज्ञ समिति के अध्यक्ष रुपलाल साव उम्र (75) आकस्मिक निधन होने से पुरे पंचयात में शोक की लहर है। वही पचड़ा बड़की नदी श्मशान घाट में पांच तत्वों में विलीन हुए मां शकेशवरी धाम मंदिर के मुख्य पुजारी रुपलाल साव अपने सहयोग से मंदिर नव निर्माण कर महायज्ञ करने का निर्णय लिया गया था। यह महायज्ञ अगले माह 23 मई 29 तक महा शतचंडी यज्ञ सात दिवसीय होना तय हुआ था जिसका महायज्ञ समिति का अध्यक्ष भी बनाया गया थो पचड़ा के बुद्धिजीवी गण बताते हैं कि रुपलाल साव बचपन से ही मां शकेशवरी धाम मंदिर में पूजा अर्चना किया करते थे। उन्हे मुख्य पुजारी बना दिया गया। अपने बलबूते मंदिर निर्माण किये थे जिसका अगले माह मंदिर का महायज्ञ कर प्राण प्रतिष्ठा किया जाना था। शोक व्यक्त करने में पचडा पंचायत समिति सह केरेडारी प्रमुख सुनीता देवी, मुखिया महेश प्रसाद साव, जिला परिषद प्रतिनिधि निरंजन साव, समाजसेवी प्रेम रंजन पासवान, दशरथ साव, रतन साव, मुकेश ठाकुर कुमार का नाम शामिल है।

बड़कागांव थाना में जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। बुधवार को बड़कागांव थाना परिसर में एसडीपीओ पवन कुमार की नेतृत्व में जिलास्तरीय जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में बड़कागांव थाना, डाडीकलां ओपी, सीकरी ओपी, केरेडारी थाना, गिद्दी थाना और उरीमारी थाना के प्रभारी उपस्थित रहें। बड़कागांव थाना क्षेत्र से दो, सीकरी ओपी क्षेत्र से तीन और केरेडारी थाना क्षेत्र से एक मामला जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में आये। मौके पर मुख्य रूप से एसडीपीओ पवन कुमार, इंस्पेक्टर अनिल कुमार, बड़कागांव थाना प्रभारी नेमधारी रजक, डाडीकलां ओपी प्रभारी पिंटू कुमार, सीकरी ओपी प्रभारी सुनील सिंह, केरेडारी थाना प्रभारी विवेक कुमार, गिद्दी थाना प्रभारी कुंदन कुमार, उरीमारी थाना प्रभारी रथू राम आदि उपस्थित थे।

6 वर्षीय बच्चे की हत्या की आरोपी सौतेली दादी को भेजा गया जेल

कोडरमा (आजाद सिपाही)। तिलैया थाना अंतर्गत पार गझंडी में 6 वर्षीय बच्चे के हत्या के आरोपी सौतेली दादी को जेल भेज दिया गया। बताया जाता है कि पुनम देवी पार गझंडी, थाना तिलैया, के द्वारा तिलैया थाना को सूचित किया गया कि उनके पुत्र विक्रम कुमार उम्र 6 वर्ष को इनके परिवार के लोगो द्वारा हत्या कर शव को जंगल में गड्ढा खोदकर दफना दिया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह के द्वारा मामले का उद्भेदन और कांड में संलिप्त अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु पुनि सह थाना प्रभारी, तिलैया के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए दंडाधिकारी की उपस्थिति में शव को विधिवत कब्र से निकाला गया और मृत्यु समीक्षा रिर्पोट तैयार कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। इस संबंध में वादिनी पुनम देवी द्वारा समर्पित आवेदन के आधार पर तिलैया थाना कांड संख्या-123/25 तहत कांड दर्ज किया गया। अनुसंधान के क्रम में कांड के प्राथमिकी अभियुक्त रेखा देवी जो कि मृतक के सौंतेली दादी है को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त रेखा देवी ने अपना अपराध स्वीकारोक्ति बयान में द्वेष की भावना से रस्सी से अपने सौतेला पोता विक्रम कुमार के गले में चारों तरफ लपेट कर हत्या को अंजाम देने की बात बतायी है। हत्या में प्रयुक्त रस्सी को अभियुक्त रेखा देवी के निशानदेही पर बरामद किया गया है।

पेज 01 का शेष

झामुमो केंद्रीय समिति के सदस्यों की पूरी सूची

सरायकेला-खरसांवा: दशरथ गगराई, गणेश चौधरी, सुधीर चंद्र महतो, दशमत मार्डी, गुरुचरण किस्कू, चारुचांद किस्कू, राजीव महतो, कृष्णा वास्के, विशु हेंब्रम, सुधीर किस्कू, उत्तम मंडल, गुरुचरण मुखी।

पूर्वी सिंहभूम: रामदास सोरेन, मोहन कर्मकार, सविता महतो, संजीव सरदार, समीर कुमार मोहंती, मंगल कालिंदी, हिदातुल्ला खान, राजू गिरि, सुमन महतो, शेख बदरुद्दीन, प्रमोद लाल, पवन सिंह, मनोज यादव, कुणाल षाडंगी, लक्ष्मण टुडू, बारी मुर्मू।

गढ़वा: अनंत प्रताप देव, मिथिलेश कुमार ठाकुर, मो ताहिर अंसारी, तनवीर आलम खान, मनोज ठाकुर, शंभू चंद्रवंशी, धीरज कुमार दूबे, नीतेश कुमार सिंह, राजकिशोर यादव, जेपी मिंज, अनिता दत्त, शांति देवी, अंजलि गुप्ता, जवाहर पासवान, जैननुल्लाह खान, संजीव कुमार भुइंया और कामेश्वर बैठा।

जामताड़ा: रवींद्र नाथ महतो, नरेंद्र मुर्मू, परेश यादव, रबींद्रनाथ दूबे, अशोक मंडल, कैलाश प्रसाद साव, कुणाल कंचन, वकील सोरेन, सफ्फार अंसारी उर्फ लालू, जमीरुद्दीन अंसारी, बासुदेव मरांडी, सलीम जहांगीर और आनंद टुडू।

देवघर: हफीजुल हसन, उदय शंकर सिंह, नरसिंह मुर्मू, परिमल कुमार सिंह, जयप्रकाश मंडल, डुग्गू टुडू, नीलम देवी, कुमार राहुल सिंह और नंद किशोर दास।

साहेबगंज: हेमंत सोरेन, विजय हांसदा,पंकज मिश्रा, मो ताजउद्दीन, धनंजय सोरेन, संजय गोस्वामी, मुजीबुर रहमान, राजाराम मरांडी, संजीव सामु हेंब्रम, संजय कुमार मिश्रा, शाहजहां अंसारी, अमरनाथ यादव, एखलाकुर रहमान और सुरेंद्र यादव।

धनबाद: मथुरा प्रसाद महतो, नीलम मिश्रा, सुकलाल मरांडी, जग्गू महतो, रमेश टुडू, काजी सिराज अहमद, कामेश्वर कुमार महथा।

बोकारो: रूपी सोरेन, योगेंद्र प्रसाद महतो, बबीता महतो, संतोष रजवार, उमाकांत रजक, मंटु कुमार यादव, हीरालाल मांझी, जय नारायण महतो, मनोहर मुर्मू, बबली सोरेन और अशोक मुर्मू।

रामगढ़: फागु बेसरा, राजकुमार महतो, विनोद किस्कू, गीता विश्वास, भुनेश्वर प्रसाद, सोनाराम मांझी, महेंद्र मुंडा, हरिलाल बेदिया, बरतु करमाली, चित्रगुप्त महतो, सागीर हुसैन।

रांची: विनोद कुमार पांडेय, सुप्रियो भट्टाचार्य, अभिषेक प्रसाद पिंटू, मनोज कुमार पांडेय, नंदकिशोर मेहता, अशोक कुमार सिंह, सुनील श्रीवास्तव, महुआ माजी, विकास सिंह मुंडा, अमित कुमार महतो, मधु मंसूरी, पवन जेडिया, तनुज खत्री और अश्विनी शर्मा।

गुमला: भूषण तिर्की, जिगा सुसारन होरो, चमरा लिंडा, रंजीत सिंह, कलीम अख्तर, राजेश खड़िया, कलिस्ता बरवा, संजीव उरांव, शशि साहु, विक्की दूबे, नुरुल होदा और सुशील दीपक मिंज।

लोहरदगा: चिलगु भगत, नवल सिंह, अख्तर अंसारी, युवंती देवी, तिवारी उरांव।

पश्चिमी सिंहभूम: दीपक बिरुआ, जोबा मांझी, निरल पूर्ति, सुखराम उरांव, जगत मांझी, भुवनेश्वर महतो, मोनिका बोयपाई, सुभाष बनर्जी, दिनेश चंद्र महतो, अभिषेक सिंकू, मिथुन गगराई, निसार हुसैन और रामलाल मुंडा।

लातेहार: बैद्यनाथ राम, अरुण दूबे, नागदेव उरांव, मो इश्तयाक खान, ममता सिंह, राजेंद्र लोहरा, मो मुश्तकीम, सुदामा प्रसाद।

पलामू: राजीव कुमार तिवारी, चंदन प्रकाश सिन्हा, सुशीला मिश्रा, सलोनी टोप्पो, सन्नू सिद्दिकी।

पश्चिम बंगाल: परेश मरांडी, बिटु मुर्मू, कमलकांत बास्के, गीता मोदक, गोपीनाथ सोरेन, गोलापी टुडू।

बिहार: ओंकारनाथ बरनवाल, पटवारी हांसदा, अंजेला हांसदा, सुकल मुर्मू, अशोक कुमार साह और भोला बास्के।

ओड़िशा: अंजनी सोरेन मरांडी, दुबराज नाग, लेथा तिर्की, अशोक महतो और दिवाकर सोरेन।

उत्तर प्रदेश: सीडी शर्मा।

पहले पत्नी का गला रेता, फिर आत्महत्या का किया प्रयास, दोनों की स्थिति गंभीर

चतरा (आजाद सिपाही)। शहर के अंसार नगर में बुधवार की दोपहर पति-पत्नी के बीच किसी बात को लेकर शुरू हुआ विवाद जानलेवा बन गया। आरोपी पति ने पहले अपनी पत्नी का ही गला रेत कर हत्या करने का प्रयास किया। जब उसकी पत्नी लहूलुहान होकर गिर पड़ी तब आरोपी पति ने भी अपनी गला रेत कर आत्महत्या करने का प्रयास किया। दोनों की स्थिति गंभीर बनी हुई है। सदर अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को बेहतर उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज रिम्स रेफर किया गया है। जानकारी के अनुसार शहर के अंसार नगर मुहल्ला निवासी मो रिजवान और उसकी पत्नी नेहा परवीन के बीच बुधवार की दोपहर किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। मोहम्मद रिजवान ने अपनी पत्नी को कमरे में बंद किया और फिर चाकू से उसका गला रेत दिया। इसके बाद उसने अपना भी गला रेत लिया। हो हंगामा सुनकर आसपास के लोग मोहम्मद रिजवान के घर पहुंचे और दरवाजा तोड़कर दोनों को बाहर निकाला। इसके बाद खून से लथपथ दोनों पति-पत्नी को इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को बेहतर इलाज के लिए रिम्स भेजा गया है। सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ मनीष कुमार ने बताया कि दोनों के शरीर से काफी रक्त श्राव हुआ है। जिसके कारण दोनों की स्थिति गंभीर बनी हुई है। सदर थाना प्रभारी विपिन कुमार ने बताया कि इस मामले में अब तक किसी और से किसी तरह की कोई सूचना नहीं है। मौके पर उपस्थित लोगों ने बताया कि अवैध संबंध के शक को लेकर दोनों पति-पत्नी में पिछले कुछ माह से विवाद चल रहा था। आशंका जाहिर किया जा रहा है कि इसी विवाद को लेकर बुधवार को पति-पत्नी के बीच झगड़ा हुआ और दोनों ने सुसाइड करने का प्रयास किया।

सुरेंद्र यादव की बेटी की शादी की पूरी जिम्मेदारी उठायेंगे सांसद कालीचरण

चतरा (आजाद सिपाही)। सांसद कालीचरण सिंह हंटरगंज प्रखंड के विभिन्न गांवों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने पोस्तिया गांव निवासी स्वर्गीय सुरेन्द्र यादव के परिजनों से मुलाकात किया और उनके बेटी की शादी की पूरी जिम्मेदारी उठाने की बात कही। सांसद ने पीड़ित परिवारों समेत ग्रामीणों की समस्याएं भी सुनीं और उन्हें समाधान का आश्वासन दिया। सांसद ने कल्याणपुर गांव गये। जहां तीन दिन पूर्व बज्रपात से मृतक अमरेश सिंह के परिवार के सदस्यों से मुलाकात की और उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान की। गांव में बिजली और सड़क की समस्या के बारे में ग्रामीणों से बात की। मौके पर ही समाधान के बारे में अधिकारियों से बात की। इसके बाद सांसद बलुरी गांव पहुंचे, जहां उन्होंने स्व. राम रघुवीर सिंह के ब्रह्मभोज में सम्मिलित होकर श्रद्धांजलि अर्पित की। यहां भी उन्होंने ग्रामीणों से बातचीत की। अपने दौरे के दौरान वह गोखना गांव पहुंचे, जहां उन्होंने सुधीर सिंह के बेटे की शादी में भाग लिया, नवदंपति को आशीर्वाद दिया और परिवार को शुभकामनाएं दीं। इस दौरान हंटरगंज भाजपा मंडल अध्यक्ष अरुण चौरसिया, नीतीश सिंह, राजेश सिंह, अरुण सिंह, गुंजीत सिंह समेत अन्य मौजूद थे।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में आये 52 आवेदन, 3 मामलों का ऑन द स्पॉट निपटारा

जमीन विवाद सुलझाने के लिए दूसरे विभागों से बनाया जा रहा सामंजस्य: एसपी

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। झारखंड के डीजीपी के निर्देश पर रामगढ़ जिले में चौथी जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन बुधवार को शहर के छावनी फुटबॉल मैदान में आयोजित किया गया। इस दौरान कार्यक्रम में कुल 52 शिकायतकर्ताओं ने आवेदन दिये। एसपी अजय कुमार ने खुद सभी मामलों को देखा और जनता से बात की। उन्होंने बताया कि 52 शिकायतकर्ताओं ने आवेदन दिये, इसमें 70 फीसदी मामले जमीन के विवाद से जुड़े हुए थे। इसके अलावा पारिवारिक विवाद के मामले भी इस कार्यक्रम में उजागर हुए हैं जिनका समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है। कार्यक्रम में ऑन द स्पॉट तीन मामलों का भी निपटारा किया गया।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का था चौथा चरण : एसपी अजय कुमार ने बताया कि जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का यह चौथा चरण था। इससे पहले माह सितंबर, दिसंबर 2024, फरवरी और अप्रैल 2025 माह में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ है। पहले के सभी कार्यक्रमों में मिली शिकायतों का समाधान शत प्रतिशत हो चुका है। इस शिविर में भी पानी के लिए भाई-भाई का विवाद, रामगढ़ थाना क्षेत्र में घर के कमरों के लिए भाइयों में विवाद और कहीं पति-पत्नी के बीच का विवाद भी आया है। पुलिस उन मामलों में भी पहल कर रही है। इस कार्यक्रम में रामगढ़ एसडीपीओ परमेश्वर प्रसाद, पतरातू एसडीपीओ गौरव गोस्वामी, गोला सर्किल इंस्पेक्टर पंकज कुमार, मांडू सर्किल इंस्पेक्टर सुरेश लिंडा, यातायात थाना प्रभारी गजेंद्र पांडे, इंस्पेक्टर अजय कुमार, रामगढ़ थाना प्रभारी सह इंस्पेक्टर कृष्ण कुमार, मांडू थाना प्रभारी सदानंद कुमार, बरकाकाना ओपी प्रभारी उमाशंकर, पतरातू थाना प्रभारी शिवलाल गुप्ता, भुरकुंडा थाना प्रभारी निर्भय गुप्ता, गोला थाना प्रभारी कुमार अभिषेक सहित अन्य थाना व ओपी प्रभारी उपस्थित थे।

70 फीसदी मामले जमीन विवाद से संबंधित

एसपी अजय कुमार ने बताया कि सभी थाना प्रभारी के द्वारा शिविर में लोगों की शिकायत सुनी गयी। 70 फीसदी मामले जमीन विवाद को लेकर सामने आये थे। इन विवादों को सलटाने के लिए दूसरे विभागों से सामंजस्य बनाये जा रहा है। जनता की समस्या जल्द से जल्द दूर हो इसके लिए जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में एसडीओ अनुराग कुमार तिवारी, एलआरडीसी दीप्ति कुजूर, सभी अंचल के अधिकारी मौजूद रहे। कुछ समस्याएं ऐसी हैं जिनका निपटारा तत्काल नहीं किया जा सकता। जमीन से संबंधित मामले कोर्ट में भी लंबित हैं। कुछ मामले पहले भी थाने में आ चुके हैं। लेकिन पुलिस ने उसी को न्याय देगी जिनके सारे दस्तावेज सही हैं। यही वजह है कि दूसरे विभागों को भी इस मामले में शामिल किया जा रहा है।

इन थाना में आये इतने मामले

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में जिले के विभिन्न थाना और ओपी क्षेत्र से लोग पहुंचे। अपने अपने थाने में लगे काउंटर में उन्होंने आवेदन दिया। जिनमें सबसे अधिक रामगढ़ थाना के 25, रजरप्पा थाना के 8, गोल थाना के 3, महिला थाना के 2, पतरातू थाना के 2, मांडू थाना के 1, भुरकुंडा थाना के 1, कुज्जू ओपी के 7, बेस्ट बोकारो ओपी के 2 और पुलिस केंद्र रामगढ़ के 1 मामले आये।

चोरों ने तोड़ा चार दुकानों का ताला, उड़ाये कीमती सामान

चोरों के आतंक से परेशान व्यापारियों ने छावनी परिषद पर फोड़ा ठीकरा

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। शहर में चोरों का आतंक बढ़ता ही जा रहा है। इस बार चोरों ने पुराने बस स्टैंड के डेली मार्केट में चार दुकानों का ताला तोड़ दिया। चारों दुकान से लगभग 50 हजार रुपये की संपत्ति के चोरी होने का अनुमान है। घटना की सूचना मिलते ही बुधवार को रामगढ़ थाना पुलिस मौके पर पहुंची और पूरे मामले की तफ़्तीश शुरू कर दी है। सबसे बड़ी बात यह है कि चोरों ने इस घटना को अंजाम देने के लिए वहां लगे सीसीटीवी कैमरे को भी क्षतिग्रस्त कर दिया।

कॉस्मेटिक और मोबाइल दुकान से उड़ाया कीमती सामान : रामगढ़ थाना के सब इंस्पेक्टर बीरबल हेंब्रम इस पूरे मामले की तस्वीर कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार चोरों ने कॉस्मेटिक और मोबाइल दुकान से कीमती सामान उड़ा लिया। सुनील कुमार के मोबाइल दुकान से लगभग 30 हजार रुपए की संपत्ति चोरी हुई है। यहां से नए और पुराने मोबाइल, ब्लूटूथ, स्पीकर और इयरबड की चोरी की गयी। इसके अलावा मो सोहेल और मो फिरोज के कॉस्मेटिक दुकान से लगभग 10 से 15 हजार की संपत्ति के चोरी होने का अनुमान है। मोहम्मद जावेद की दुकान का भी ताला चोरों ने तोड़ दिया।

छावनी परिषद को दुकानदारों ने ठहराया जिम्मेदार : दुकानदारों ने पुलिस को बताया कि चोरी के लिए छावनी परिषद के कर्मचारी जिम्मेदार हैं। उन्होंने बताया कि पुराने बस स्टैंड में लगने वाले डेली मार्केट में छावनी परिषद के द्वारा दुकान बनाया गया था। दुकान में लगाया गया शटर बेहद कमजोर है। यहां तक कि उसका लॉक भी बेहद ऑर्डिनरी है। इस लॉक को लेकर पहले भी शिकायत छावनी परिषद के अधिकारियों से की गई थी। बैंक का लोन लेकर दुकान तो व्यापारियों ने ले लिया, लेकिन सुरक्षा मानकों पर दुकान खरा नहीं उतर रहा। अब छावनी परिषद के अधिकारियों के लापरवाही का खामियाजा दुकानदारों को भुगतना पड़ रहा है। बेहद आराम से चोर लॉक तोड़ रहे हैं और उनका कीमती सामान चोरी कर ले रहे हैं।

सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल है चाड़ी का सलाना उर्स : मंत्री डॉ इरफान

आजाद सिपाही संवाददाता

गोला। गोला प्रखंड स्थित चाड़ी गांव में हजरत दाता अब्दुर्रहीम शाह रहमतुल्लाह अलैह की याद में प्रति वर्ष मनाये जानेवाला सालाना उर्स सांप्रदायिक सौहार्द की एक मिसाल है। उर्स में सभी समुदाय के लोग बड़ी आस्था के साथ पहुंचते हैं और बाबा के दरबार में अपनी मिन्नत पर चादरपोशी करते है। यह बातें सूबे के स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने उर्स के मौके पर आयोजित कव्वाली कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि कही। उन्होंने कहा कि यह उर्स क्षेत्र का प्रसिद्ध उर्स माना जाता है। बाबा दाता अब्दुर्रहीम शाह सभी की मिन्नतें पूरी करते हैं। कार्यक्रम का उद्घाटन सूबे के स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी पुर्व राज्य सभा सांसद धीरज कुमार साहू विधायक ममता देवी के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। उर्स कमेटी के लोगों ने मंत्री को पगड़ी बांधकर स्वागत किया। मशहूर कव्वाल रईस अनीश शाबरी एंड जुनैद सुल्तानी पार्टी के बीच कव्वाली मुकाबला हुआ। कार्यक्रम में हजारों की के भीड़ शामिल हुए और कव्वाली का आनन्द लेते हुए चादरपोशी किया। गोला थाना पुलिस के द्वारा भीड़ को संभालने के लिए जगह जगह पर पुरुष और महिला होमगार्ड को भी ड्युटी में लगाया गया था। मौके पर उर्स कमेटी के अंजुमन कमिटी के सदर मो नेजाम, सेक्रेटरी मो मोनाजिर, खजांची मो असलम, उर्स कमेटी के सदर मो इनायतुल्लाह, सेक्रेटरी मो शाहिद, खजांची मो मिकाइल, मो अजीम, मो जाकिर, मो जिलानी, मो शकील अहमद, मो मोबिन, मो आजाद, जहीर अहमद, मो इकराम के अलावा कांग्रेस के शहजादा अनवर, मुखिया नुरुल्लाह अंसारी आदी शामिल थे।

राशन कार्ड धारक 30 अप्रैल तक करायें केवाइसी, नहीं तो कट जायेगा नाम: डीसी

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। जिले में राशन कार्ड धारी का ई-केवाईसी लगातार जारी है। ई-केवाईसी के लिए 30 अप्रैल आखिरी तारीख तय की गयी है। अगर इस दिन तक जो व्यक्ति अपना ई-केवाईसी नहीं करवायेंगे, उनका नाम राशन कार्ड से काट दिया जायेगा। इस संबंध में बुधवार को डीसी चंदन कुमार ने एक आदेश भी जारी किया है। उन्होंने कहा है कि रामगढ़ जिला अंतर्गत राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना और झारखंड राज्य खाद्य सुरक्षा योजना से आच्छादित सभी राशन कार्डधारियों व सदस्यों का ई-केवाईसी किया जाना है। वर्तमान में रामगढ़ जिला अंतर्गत कुल कार्ड की संख्या 1,49,062 में कुल सदस्यों की संख्या 6,65,261 है। इनमे से अभी तक 5,13,722 सदस्यों का ही ई-केवाईसी हो पाया है। शेष 1,51,839 सदस्यों का 30 अप्रैल 2025 तक शत प्रतिशत ई-केवाईसी किया जाना अतिआवश्यक है। शेष सभी राशन कार्डधारी और सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 30 अप्रैल तक अनिवार्य रूप से अपने नजदीकी जन वितरण प्रणाली दुकानदारों से सम्पर्क कर ई-पोस मशीन से ई-केवाईसी करा लें। जिनके द्वारा निर्धारित तिथि तक ई-केवाईसी नहीं कराया जायेगा, वैसी स्थिती में माह मई से उनका नाम राशन कार्ड से विलोपित हो जायेगा।

सीसीएल पुंडी परियोजना को चालू करने के लिए कवायद शुरू

मांडू (आजाद सिपाही)। वर्षों से बंद पड़े पुंडी परियोजना को पुनः चालू करने के लिए कवायद शुरू हो गयी है। इसको लेकर तकनीकी निदेशक (पीएंडपी) शंकर नागचारी ने बुधवार को परियोजना के अधिगृहित क्षेत्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान पुंडी पंचायत के सीसीएल अधिगृहित क्षेत्र भूताही में पहुंचकर प्लान को देखा। साथ ही उपस्थित कोलियरी के पदाधिकारियों से जानकारी लेते हुए कई आवश्यक दिशा निर्देश दिये। बताया जाता है कि सीसीएल कुजू क्षेत्र के पुंडी परियोजना को चालू करने को लेकर अधिकारियों का निरीक्षण किया जा रहा है। मौके पर कुजू महाप्रबंधक आरके सिंहा, पुंडी परियोजना पदाधिकारी अभिमन्यु सिंह, कार्मिक प्रबंधक रॉबर्ट शांडिल, मुरली मनोहर, मैनेजर चंद्रा, संजय कुमार, शमशाद अली,संजीत मंडल, रामप्रसाद बेदिया, ध्रुव कुमार, राजकुमार मांझी, नजरुल अंसारी आदि मौजूद थे।

तार की चपेट में आने से एक की मौत, मुआवजा को लेकर शव के साथ सड़क जाम

कुजू (आजाद सिपाही)। 11 हजार बिजली प्रवाहित तार की चपेट में आने एक अधेड़ व्यक्ति की मौत हो गयी। इसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने 50 लाख रुपया मुआवजा और नौकरी की मांग को लेकर सड़क जाम कर दिया। मामला ओपी क्षेत्र के पैंकी तेतरिया टोला की है। यह क्षेत्र इंडस्ट्रियल एरिया होने की वजह से विभिन्न छोटे-बड़े वाहनों की जाम लग गयी। बताया जाता है कि तेतरिया टोला, पैंकी निवासी 52 वर्षीय भीम महतो पिता स्व जानकी महतो, पुल के नीचे से शौच कर वापस लौट रहा था। इसी बीच प्रवाहित बिजली तार की चपेट में आ गये। जिससे उनकी मौत हो गयी। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंचे आक्रोशित ग्रामीणों ने 50 लाख रुपया मुआवजा और नौकरी की मांग को लेकर सड़क जाम कर दिया। वहीं, घटना की खबर फैलते ही मौके पर मांडू विधायक निर्मल महतो, मनोज महतो, राजकुमार महतो, चितू महतो समेत ग्रामीणों ने विभाग से सहयोग करने की बात कही। ग्रामीणों ने बताया कि उक्त बिजली प्रवाहित तार नये पुल के निर्माण से सड़क के काफी नजदीक आ गया है। विभाग द्वारा करमा कोलियरी बिजली सप्लाई किया गया है। सूचना की खबर के बाद पहुंचे बिजली विभाग के कार्यपालक अभियंता प्रत्युष कुमार और अन्य अधिकारियों द्वारा जाम कर रहे ग्रामीणों के साथ वार्ता कर मामले को सुलझाने का प्रयास किया जा रहा है। समाचार लिखे जाने तक वार्ता जारी है। इधर, मृतक की पत्नी शारदा देवी, उनके बच्चे और अन्य परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है।

रजरप्पा में अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ केंद्रीय समिति की बैठक संपन्न

सीसीएल कर्मियों और असंगठित मजदूरों के हक और अधिकार के लिए करें काम : सांसद चंद्रप्रकाश

सीसीएल में एजेकेएसएस काफी मजबूत और नंबर 1 संगठन है सदस्यों की संख्या बढ़ाये: केंद्रीय अध्यक्ष रोशन चौधरी

यूनियन और पार्टी के लिए क्षेत्र में कार्य करें संगठन के मजबूती पर ध्यान दें: विधायक तिवारी महतो

आजाद सिपाही संवाददाता

रजरप्पा। रजरप्पा सीसीएल रजरप्पा प्रोजेक्ट ऑफिसर क्लब में अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ केंद्रीय समिति की बैठक आयोजित की गयी। जिसके मुख्य अतिथि गिरिडीह सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी शामिल हुए जबकि विशिष्ट अतिथि में बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी, मांडू विधायक निर्मल महतो उर्फ तिवारी महतो शामिल हुए, उक्त बैठक में झारखंड के विभिन्न कोलियरी क्षेत्र से प्रतिनिधि शामिल हुए, मुख्य रूप से अध्यक्ष सचिव और अन्य पदाधिकारी शामिल हुए। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि गिरिडीह सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी ने कहा कि संगठन की मजबूती के लिए सीसीएल मजदूर कर्मियों को अधिक से अधिक संरक्षण देने की आवश्यकता है मजदूरों के हित के लिए क्षेत्र मे काम करें, कोलियरी क्षेत्र में कार्यरत सीसीएल कर्मी मजदूरों को शोषण मुक्त बनाने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि आज हम 30% कोयला विदेश से आयात करते हैं सीसीएल का उत्पादन लक्ष्य अधिक होने से ही हमारी उपलब्धि होगी आज हमारा देश को विदेश से कोयला की खरीदारी करता है विदेश में भारत से कम कोयला का उत्पादन है फिर भी उच्च तकनीकी की वजह से कोयला का उत्पादन बेहतर करते हैं नई तकनीकी की आवश्यकता है, बेहतर उत्पादन होगा तो देश में खर्च पर कम भार पड़ेगा कोयला का उत्पादन वृद्धि होने से ही हमारा देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ और मजबूत होगी, तथा कोयला के क्षेत्र में हम आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ के केंद्रीय अध्यक्ष सह बड़का का विधानसभा के विधायक रोशन लाल चौधरी ने कहा कि अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ का गठन पहली बार रजरप्पा में हुई थी रजरप्पा मे ही संगठन का बुनियाद खड़ा किया गया था, जो पूरे झारखंड में मजदूर हित के लिए सभी ट्रेड यूनियन में अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ एक विशाल शक्तिशाली संगठन बनकर खड़ा है एक नंबर यूनियन की श्रेणी में है।

मांडू विधायक निर्मल महतो उर्फ तिवारी महतो ने कहा कि संगठन मजबूती के लिए सक्रिय बनकर अहम भूमिका निभाने का काम करें संगठन की ओर से सारी सुविधाएं दी जायेगी संगठन में जुड़ने के लिए लोगों को जिम्मेवारी लेकर मजबूती प्रदान करें उन्होंने कहा कि झारखंड प्रदेश में विभिन्न तरह के मजदूरों का संगठन आउटसोर्सिंग कार्य मे चल रहा है वैसे क्षेत्र में भी हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है उन्होंने कहा कि संगठन में यूनियन और पार्टी के लिए भी कम करें अधिक से अधिक लोगों को संगठन संख्या बल को बढ़ाने की जरूरत नितांत आवश्यकता है।

केंद्रीय महामंत्री सतीश सिंह ने कहा कि संगठन में सदस्यों की संख्या को बढ़ाने के लिए गंभीरता से सदस्यता अभियान में तेजी लाया जाए क्षेत्र के पदाधिकारीगण अपनी अपनी जिम्मेवारी के साथ काम करें। मजदूर हित को प्राथमिकता दें मजदूर की समस्याओं को यथाशीघ्र समाधान करने का प्रयास करें ताकि लोग संगठन से बहुत अधिक जुड़ सके। कार्यक्रम का संचालन यूनियन के हरि रत्नम ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन मदन महतो ने की। इस मौके पर रजरप्पा क्षेत्रीय अध्यक्ष रविंद्र प्रसाद वर्मा, केंद्रीय उपाध्यक्ष मुन्ना श्रीवास्तव, शिव शंकर कुमार, नांहु सिंह, सुजीत प्रसाद, रमेश प्रसाद, योगेश राणा, सुरेश महतो, नरेश महतो, हेमलाल महतो, संतोष ठाकुर, हरेंद्र कुमार, सत्येंद्र कुमार, संजय मिश्रा, भजनलाल महतो, नागेंद्र सहित सैकड़ों की संख्या में यूनियन के नेता शामिल थे।

विधायक ने सड़क का किया शिलान्यास

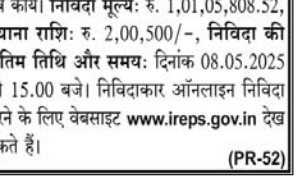

पतरातू(आजाद सिपाही)। पतरातू प्रखंड के जयनगर में ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल के डीएफटी योजना अंतर्गत पीसीसी रोड का शिलान्यास बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी के द्वारा विधिवत पुजा अर्चना कर किया गया। मौके पर विधायक रौशन लाल चौधरी ने कहा कि यह सड़क ग्रामीणों के आवागमन के लिए बेहतर सुविधा प्रदान करेगी। मौके पर जिप सदस्य सह सांसद प्रतिनिधि राजाराम प्रजापति, मुकेश प्रजापति अवधेश सिंह अशोक पाठक अजय रवि फूलचंद प्रजापति सदाक अंसारी दीपक प्रजापति उपकार प्रजापति प्रदीप महतो सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे।

दक्षिण पूर्व रेलवे - निविदा

निविदा सूचना सं.: डीआरएमईएनजीजीआरएनसी-19-2025, भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए, मंडल रेल प्रबंधक (इंजी.), राँची-834003 द्वारा निम्नलिखित कार्यों के लिए ई-निविदा आमंत्रित की जाती है: **सूचना सं. : डीआरएमईएनजीजीआरएनसी-19-2025, कार्य का नाम :** मुरी में स्वर्णरेखा नदी में इनटेक वेल और पम्प हाउस सह डीजी रूम के निर्माण का शेष कार्य। **निविदा मूल्य:** रु. 1,01,05,808.52, **बयाना राशि:** रु. 2,00,500/-, **निविदा की अंतिम तिथि और समय:** दिनांक 08.05.2025 को 15.00 बजे। निविदाकार ऑनलाइन निविदा करने के लिए वेबसाइट www.ireps.gov.in देख सकते हैं।

(PR-52)

चोकसी के प्रत्यर्पण की मुश्किलें

पंजाब नेशनल बैंक के साथ 13,500 करोड़ रुपये का लोन घोटाला करने के मुख्य आरोपी मेहुल चोकसी की बेल्जियम में गिरफ्तारी भारत के बढ़ते वैश्विक दबदबे का सबूत है। मुंबई आतंकी हमले के गुनहगार तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण के बाद हाल में यह दूसरी बड़ी सफलता मिली है। हालांकि राणा की तरह चोकसी को भारत लाने की राह इतनी आसान नहीं होगी।

असफल प्रयासः मेहुल और उसके भांजे नीरव मोदी ने भारतीय बैंकिंग सिस्टम की खामियों और अंदर तक फैले भ्रष्टाचार का फायदा उठाकर इतना बड़ा घोटाला किया और जब तक इसका पता चलता, सुरक्षा एजेंसियां उन तक पहुंचतीं, दोनों देश छोड़कर भाग चुके थे। जनवरी 2018 में उनके फरार होने से लेकर अभी तक -सात साल और करीब चार महीने के दौरान दोनों को लेकर अलग-अलग खबरें आती रहीं। इस दौरान प्रत्यर्पण के कई प्रयास हुए और अब भी चल रहे हैं, लेकिन सफलता नहीं मिली है।

डोमिनिका में गलतीः मेहुल और उसके वकीलों ने अभी तक अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों का अपने हिसाब से खूब दुरुपयोग किया है। मई 2021 में जब वह डोमिनिका में गिरफ्तार हुआ, तब भारतीय एजेंसियां उसे वापस लाने के बिल्कुल करीब पहुंच गयी थीं, लेकिन उस समय भी उसने कानूनी पेचीदगियों का फायदा उठाया। तब उसकी तरफ से कहा गया था कि वह एंटीगुआ का नागरिक है और चूंकि एंटीगुआ और भारत के बीच प्रत्यर्पण संधि नहीं है, इसलिए उसे नयी दिल्ली के हवाले नहीं किया जा सकता। उसका यह भी आरोप था कि भारतीय एजेंसियों के इशारे पर उसे एंटीगुआ से अगवा करके डोमिनिका लाया गया। इन्हीं पेंच ने उसे बचा लिया था।

पंजाब नेशनल बैंक घोटाले के मुख्य आरोपी मेहुल चोकसी की बेल्जियम में गिरफ्तारी भारत के बढ़ते वैश्विक प्रभाव का प्रमाण है। तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण के बाद यह दूसरी बड़ी सफलता है, लेकिन चोकसी को भारत लाना आसान नहीं होगा।

सावधानी बरतनी होगीः बेल्जियम के साथ भारत की प्रत्यर्पण संधि है, लेकिन डोमिनिका में जो हुआ, वह एक बार फिर भारत के सामने मुश्किलें खड़ी कर सकता है। तब चोकसी के आरोपों ने भारत के पक्ष को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कमजोर किया था। यहां तक कि बाद में इंटरपोल ने अपना रेड कॉर्नर नोटिस भी वापस ले लिया था।

भरोसा दिलाना होगाः प्रत्यर्पण को लेकर यूरोपीय देशों का रवैया बेहद सख्त है। जब तक उन्हें तसल्ली न हो जाये कि आरोपी को निष्पक्ष सुनवाई का मौका मिलेगा, तब तक वे किसी को प्रत्यर्पित नहीं करते। मेहुल चोकसी के मामले में बेल्जियम को भरोसा दिलाना होगा कि उसका किया घोटाला बेहद गंभीर है, और उसे भारतीय कानूनों के अनुसार सजा जरूर मिलनी चाहिए। भारत को बेल्जियम के साथ अपने रिश्ते के प्रभाव का इस्तेमाल करने से भी नहीं चूकना चाहिए।

अभिमत
आजाद सिपाही

मुर्शिदाबाद हिंसा के जरिये पूरे बंगाल में हिंसा फैलाने का प्लान तुर्की में बनाया गया था। इसके जरिये बंगाल के हालात भी ठीक बांग्लादेश की तरह करने की कोशिश थी। हिंसा को लेकर बाकायदा एक लिस्ट तैयार की गयी थी कि कौन कहां नुकसान करेगा और लूटपाट मचायेगा। इसके साथ ही इनाम देने को लेकर योजनाएं बनायी गयीं। हिंसा के दौरान इस बात का खास ध्यान देने का अलर्ट किया गया कि रेल और नॉर्मल ट्रांसपोर्ट न चल पाये।

अराजकता में डूबे बंगाल में नाउम्मीदी का अंधेरा

ललित चौधरी

बंगाल में वक्फ कानून को लेकर हिंसा का सिलसिला जिस तरह तेज और सांप्रदायिक होता जा रहा है, जिस तरह से हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है, उन्हें मुर्शिदाबाद से पलायन को विवश किया जा रहा है, वह मुस्लिम तुष्टीकरण और दुष्प्रचार की खतरनाक राजनीति का प्रतिफल तो है ही, वह कुशासन एवं अराजकता की भी चरम पराकाष्ठा भी है। नये वक्फ कानून को लेकर कुछ राजनीतिक दल मुस्लिम समाज को हिंसा एवं तोड़फोड़ के लिए जानबूझ कर सड़कों पर उतारने में लगे हुए हैं। वे उन्हें अराजकता एवं उन्माद के लिए उकसा भी रहे हैं और तरह-तरह से प्रोत्साहन दे रहे हैं। अराजकता फैलाने वाले किस तरह बेखौफ हैं, इसकी पुष्टि इससे होती है कि वे सरकारी-गैर सरकारी वाहनों को तोड़ने, जलाने के साथ पुलिस पर भी हमले कर रहे हैं। बंगाल के विभिन्न जिलों में वक्फ कानून के विरोध के बहाने फैलायी जा रही अराजकता इसलिए भी थमने का नाम नहीं ले रही है, क्योंकि खुद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इस कानून के खिलाफ खड़ी होकर राजनीतिक रोटियां सेंक रही हैं। पश्चिम बंगाल में हिंसा का बढ़ना, हिंदुओं में डर पैदा होना, भय का वातावरण बनना, आम जनजीवन का अनहोनी होने की आशंकाओं से घिरा होना चिंताजनक भी है और राष्ट्रीय शर्म का विषय भी है।

वक्फ कानून में संशोधन का विरोध विडंबनापूर्ण होने के साथ देश में अराजकता फैलाने का माध्यम बना हुआ है।

यह बंगाल पुलिस के नाकारापन एवं ममता सरकार के मुस्लिम तुष्टिकरण का ही दुष्परिणाम है कि मुर्शिदाबाद के साथ ही अन्य शहरों में भी वक्फ कानून के विरोध की आड़ में हिंसा, तोड़फोड, आगजनी हो रही है। खतरनाक यह है कि इस दौरान हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि कलकत्ता उच्च न्यायालय ने वक्फ कानून विरोधियों की अराजकता से उपजे हालात का संज्ञान लिया। मामला सुप्रीम कोर्ट भी पहुंच गया है। ममता बनर्जी एवं उनकी सरकार देश में एकमात्र ऐसी सत्तारूढ़ पार्टी एवं नेता बन गयी है जिसका देश के संविधान, न्यायपालिका एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भरोसा नहीं रह गया है।

वक्फ कानून का विरोध करने सड़क पर उतरे तत्वों के दुस्साहस का पता इससे चलता है कि वे सीमा सुरक्षा बल के जवानों को भी निशाना बनाने से नहीं हिचक रहे हैं। उनके इसी दुस्साहस के चलते मुर्शिदाबाद के हिंदुओं ने खुद को असहाय पाया। बंगाल में कानून के शासन ने सुनियोजित हिंसा के दुष्चक्र के समक्ष एक बार फिर समर्पण कर दिया। बंगाल में इसके पहले भी ऐसा हो चुका है। मई 2021 में विधानसभा चुनावों के बाद वहां तृणमूल समर्थक तत्वों ने अपने राजनीतिक विरोधियों को इतना आतंकित किया था कि वे जान बचाने के लिए असम में शरण लेने को मजबूर हुए थे। तब भी वहां पुलिस मूकदर्शक बनी हुई थी। ताजा हिंसक हालातों में राज्य सरकार और उसके नेता यह झूठ देश के गले में उतारने में लगे हुए हैं कि बंगाल में स्थितियां नियंत्रण में हैं।

वक्फ कानून में संशोधन का विरोध विडंबनापूर्ण होने के साथ देश में अराजकता फैलाने का माध्यम बना हुआ है। वक्फ कानून में संशोधन के तहत किसी मस्जिद, मदरसे आदि को लेकर किसी भी तरह के नुकसान, कब्जा करने या दखल की बात नहीं कही गयी है। इसके विरोधी चाहे जो तर्क दें, इससे कोई इंकार नहीं कर सकता कि वक्फ बोर्ड भ्रष्टाचार का अड्डा बने हुए थे और सरकारी-निजी जमीनों पर मनमाने तरीके से दावा कर दिया करते थे। उनकी इस मनमानी का शिकार अनेक मुस्लिम भी थे। यह पहली बार नहीं है, जब किसी कानून के खिलाफ सड़कों पर उतरकर उपद्रव, हिंसा, आगजनी की जा रही हो। इसके पहले नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ भी ऐसा ही किया गया था। तब यह झूठ फैलाया जा रहा था कि इस कानून के जरिये मुसलमानों की नागरिकता छीन ली जायेगी। अब यह झूठ फैलाया जा रहा है कि नये वक्फ कानून के जरिये सरकार मस्जिदों और कब्रिस्तानों पर कब्जा करना चाहती है। यह निरा झूठ और शरारत ही है। वक्फ कानून के विरोधी भले ही लोकतंत्र और संविधान की दुहाई दे रहे हों, लेकिन ये उसकी धज्जियां ही उड़ा रहे हैं। वे वक्फ कानून पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले की प्रतीक्षा करने के लिए तैयार नहीं।

मुर्शिदाबाद हिंसा के जरिये पूरे बंगाल में हिंसा फैलाने का प्लान तुर्की में बनाया गया था। इसके जरिये बंगाल के हालात भी ठीक बांग्लादेश की तरह करने की कोशिश थी। हिंसा को लेकर बाकायदा एक लिस्ट तैयार की गयी थी कि कौन कहां नुकसान करेगा और लूटपाट मचायेगा। इसके साथ ही इनाम देने को लेकर योजनाएं बनायी गयी। हिंसा के दौरान इस बात का खास ध्यान देने का अलर्ट किया गया कि रेल और नॉर्मल ट्रांसपोर्ट न चल पाये। मौका मिलने पर हिंदुओं की हत्या करना भी टारगेट था। कुछ हिंदुओं को मारा भी गया है। हिंदुओं के घरों के साथ मंदिरों पर हमले किये गये। इससे यही स्पष्ट हो रहा है कि नये वक्फ कानून का विरोध करने वाले न केवल सांप्रदायिक घृणा में डूबे हैं, अराजकता एवं उन्माद पर सवार हैं, आतंकी माहौल बनाकर हिंदुओं को भयभीय-आतंकित करना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें यह भरोसा है कि ममता बनर्जी की सरकार और उनकी पुलिस उनके खिलाफ कुछ नहीं करने वाली। ज्यादा चिंताजनक तो यह है कि अराजक लोग चाहते हैं कि पलायन करने के लिए मजबूर लोग फिर कभी अपने घरों को न लौट पायें। इन जटिल एवं अनियंत्रित होते अराजक हालातों में शांति, सौहार्द एवं सामान्य हालातों को निर्मित करने के लिए आवश्यक है कि केंद्र सरकार बंगाल में हस्तक्षेप करने के लिए आगे आये, बल्कि यह भी अपेक्षित है कि सुप्रीम कोर्ट वहां के हालात का स्वतः संज्ञान ले। उसे वक्फ कानून विरोधी हिंसक तत्वों के उपद्रव के लिए ममता सरकार को जवाबदेह बनाना ही होगा।

ममता वोट बैंक की राजनीति के लिए कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था की धज्जियां बार-बार उड़ाती रही हैं। ममता ने देश की एकता-अखंडता और सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों को नजरअंदाज किया है, कानून से खिलवाड़ जितना पश्चिम बंगाल में हुआ है उतना शायद ही देश के किसी दूसरे राज्यों में हुआ हो। ममता अपने बलबूते चुनाव जीतने का माद्दा रखती हैं, तो फिर हिंसा का सहारा क्यों लेती हैं? अराजकता फैलाकर अपने ही शासन को क्यों दागदार बनाती हैं? क्यों अपने प्रांत की जनता को डराती हैं। क्या ये प्रश्न ममता की राजनीतिक छवि पर दाग नहीं हैं? ममता एवं तृणमूल कांग्रेस का एकतरफा रवैया हमेशा से समाज को दो वर्गों में बांटता रहा है एवं सामाजिक असंतुलन तथा रोष का कारण रहा है। ताजा हिंसक हालात इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि किसी भी एक वर्ग की अनदेखी कर कोई भी दल राजसत्ता का आनंद नहीं उठा सकता। राज्य में शीर्ष संवैधानिक पद पर रहते हुए भी ममता बनर्जी ने अलोकतांत्रिक, गैर-कानूनी एवं राष्ट्र-विरोधी कार्यों को अंजाम दिया है। बंगाल में तो भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता के जबड़े फैलाये, हिंसा की जीभ निकाले, मगरमच्छ सब कुछ निगल रहा है। ममता अपनी जातियों, ग्रुपों और वोट बैंक को मजबूत कर रही हैं, देश को नहीं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

कोल्हान की खबरें

वज्रपात से तीन जगहों का ट्रैफिक सिग्नल खराब

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। सरायकेला-खरसावां जिला के टाटा-कांड्रा मुख्य सड़क पर लगे ट्रैफिक सिग्नल तीन जगहों पर खराब हो चुकी है। मिली जानकारी के अनुसार पिछले दिनों आए तेज आंधी और तूफान के साथ हुए वज्रपात से तीन जगहों के शेर ए पंजाब, एस टाईप और आदित्यपुर टोल ब्रिज के समीप सिग्नल क्षतिग्रस्त हो गया हैं। क्षतिग्रस्त होने के कारण सिग्नल भी काम करना बंद कर दिया है। इस संदर्भ में यातायात प्रभारी अजय कुमार तिवारी ने जानकारी दी कि ट्रैफिक सिग्नल जेडएफ कंपनी ने सीएसआर के तहत लगाया है। जिसमें सिग्नल के कई पाट्र्स खराब हो चुके हैं। सिग्नल का पाट्र्स चेन्नई से मंगाया जा रहा है। वही ट्रैफिक सिग्नल ठीक करने के लिए चेन्नई से मिस्त्री भी आ रहा है, इसको लेकर प्रबंधन को पत्राचार भी किया गया है। दो से तीन दिनों में उम्मीद है कि सिग्नल काम करना शुरू कर देगा। वैसे उक्त स्थलों पर ट्रैफिक नियंत्रण के लिए अतिरिक्त बल की तैनाती की गयी है।

अवैध खनन को लेकर जिला प्रशासन की कार्रवाई

पटमदा (आजाद सिपाही)। जमशेदपुर के ग्रामीण इलाके पटमदा थाना अंतर्गत सिसदा गांव में अवैध खनन करने को लेकर जिला प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए हिटाची को जब्त किया है। अंचलाधिकारी डॉ राजेंद्र कुमार दास के नेतृत्व में एक टीम द्वारा बुधवार को अवैध पत्थर खनन के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया जा रहा था। अंचलाधिकारी ने बताया जिला प्रशासन के निर्देश एवं गुप्त सूचना के आधार पर कई पत्थर खदानों का निरीक्षण किया गया, जिसमें एक खदान में खनन कार्य होने की जानकारी मिली और खदान से एक हिटाची को जब्त करते हुए जांच की जा रही है। अभियान में खनन निरीक्षक अरविंद उरांव, पटमदा डीएसपी वचनदेव कुजूर, पटमदा थाना प्रभारी करमपाल भगत आदि शामिल थे। सूत्रों के मुताबिक जमशेदपुर निवासी पत्थर व्यवसायी एवं पटमदा थाना क्षेत्र के गाड़ीग्राम में क्रशर प्लांट चलाने वाले सुभाष शाही ने सिसदा गांव निवासी अभिनव सिंह से रैयती जमीन को लीज एग्रीमेंट पर लेकर पिछले कई वर्षों से खनन कार्य कर रहे थे। अंचलाधिकारी ने बताया कि मामले में प्राथमिकी दर्ज की जायेगी एवं आगे की कार्रवाई होगी।

केंद्र सरकार के खिलाफ कांग्रेस का प्रदर्शन राष्ट्रपति के नाम आयुक्त को सौंपा मांगपत्र

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी व झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के आह्वान पर पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी ने नेशनल हेराल्ड की संपत्ति को इडी द्वारा गलत उद्देश्य से जब्त किये जाने ओर सोनिया गांधी, राहुल गांधी एवं अन्य वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं के विरुद्ध आरोप पत्र दाखिल करने के विरोध में जोरदार प्रदर्शन किया। बुधवार को जिला अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे के नेतृत्व में कांग्रेस प्रतिनिधि मंडल ने जीएसटी कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन के दौरान राष्ट्रपति के नाम आयुक्त को मांग पत्र सौंपा। मौके पर जिला अध्यक्ष श्री दुबे ने कहा नेशनल हेराल्ड की स्थापना 1938 में पं जवाहरलाल नेहरू द्वारा की गयी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की आवाज रही। पत्र न्याय, स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध रहा। जो आज भी कांग्रेस पार्टी के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं। ईडी की यह कार्यवाही नियमित प्रक्रिया नहीं, बल्कि विपक्ष को दबाने का कुप्रयास है। यह एकतंत्रीय राज्यप्रायोजित अपराध का उदाहरण है। केंद्र की सत्ताधारी भाजपा सरकार द्वारा कांग्रेस नेतृत्व को डराने और परेशान करने के लिए जांच एजेंसियों का दुरुपयोग निंदनीय है। यह प्रदर्शन राष्ट्रव्यापी आक्रोश का हिस्सा है। जिसमें राष्ट्रपति से हस्तक्षेप की अपील की गयी। प्रदर्शन के दौरान आनन्द बिहारी दुबे के साथ प्रदेश सचिव राकेश तिवारी, केके शुक्ल, सामंता कुमार, कमलेश कुमार पाण्डेय, ज्योतिष यादव,कार्यकारी अध्यक्ष धर्मेन्द्र सोनकर, राजकिशोर यादव, अवधेश सिंह, योगेन्द्र सिंह यादव, मनोज झा, शफी अहमद खान, संजय यादव, रजनीश सिंह, अरुण कुमार सिंह, जसवंत सिंह जस्सी, संजय तिवारी,जिला महामंत्री रंजीत सिंह, राकेश साहू, ज्योति मिश्र, सुरेन्द्र शर्मा, रविंद्र शर्मा, राजगीर यादव, फरहत बेगम सहित अन्य कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल रहे।

हेमंत सोरेन के झामुमो अध्यक्ष बनने पर महिला नेताओं ने दी बधाई

संगठन को और सशक्त करने का लिया संकल्प

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड मुक्ति मोर्चा के महाधिवेशन में हेमंत सोरेन को पार्टी का अध्यक्ष चुने जाने पर प्रदेश की महिला सांसदों, विधायकों, पूर्व मंत्रियों एवं महिला समिति की केंद्रीय सदस्यों ने विधायक कल्पना सोरेन मुर्मू से मुलाकात कर उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर सभी ने हेमंत सोरेन को झामुमो का अध्यक्ष बनाए जाने पर हार्दिक बधाई दी और उनके नेतृत्व में पार्टी के महिला संगठन को और मजबूत करने पर चर्चा की। इस विशेष मुलाकात में लोकसभा सांसद जोबा माझी, राज्यसभा सांसद महुवा माझी, विधायक सविता महतो, विधायक लुईस मरांडी, पूर्व सांसद सुमन महतो एवं वरिष्ठ नेता झरना पाल उपस्थित रहे। सभी नेताओं ने हेमंत सोरेन के नेतृत्व पर विश्वास जताते हुए कहा उनके मार्गदर्शन में महिला संगठन को नई दिशा और गति मिलेगी। मौके पर सभी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा की नीतियों और सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने, महिलाओं को संगठित करने पर बल दिया। सभी ने सरकार द्वारा चलायी जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समर्पित भाव से राज्य के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए संकल्प लिया। विधायक कल्पना सोरेन मुर्मू ने सभी का आभार प्रकट करते हुए कहा झारखंड में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व को और सशक्त करने के लिए पार्टी प्रतिबद्ध है। उन्होंने उपस्थित सभी महिलाओं से संगठनात्मक मजबूती के लिए एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया।

एशिया सभागार में पांच थाना क्षेत्र के लिए जन शिकायत सामाधन का शिविर लगा

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। बुधवार को सरायकेला जिला के आदित्यपुर स्थित एशिया सभागार में कांड्रा, गम्हरिया, आदित्यपुर, आरआइटी एवं राजनगर थाना क्षेत्र के लिए जन शिकायत सामाधन शिवर लगाया गया। जिसमें एसपी मुकेश कुमार लुणायत, एसडीओ निवेदिता नियति, एसडीपीओ समीर कुमार संवैया, सीओ कुमार अरविंद बेदिया मौजूद रहे। लोगों की शिकायतों को सुनते हुए समाधान को लेकर संबंधित विभाग एवं थानों को निर्देशित किया। पिछले दो शिविर की सफलता एवं लोगों की आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए इस बार जिला पुलिस की ओर से पूरे जिले को 4 जोन में बांटा गया। जिससे दूर दराज से आने वाले फरियादियों को और सुविधा न पहुंचे एवं शिविर का लाभ अधिक से अधिक लोग उठा सके। इस बार भी ज्यादातर मामले जमीन विवाद से संबंधित आए जिसे संबंधित विभागों को हस्तांतरित कर दिया गया। एसपी मुकेश कुमार लुणायत ने जानकारी दी कि इस तरह के शिविर आयोजित होने से लंबित कांडों के निष्पादन में सहूलियत मिलती है। साथ ही पुलिस एवं पब्लिक के बीच समन्वय स्थापित हो सके। उन्होंने बताया कि शिविर के माध्यम से कई लोगों को उनका खोया मोबाईल लौटाया गया। साथ ही कई तरह के सुझाव भी आए हैं जिसपर अमल करने को लेकर संबंधित थानों एवं विभागों को निर्देशित किया गया है। वही कई सारे लोगों को गुम हुए मोबाइल प्राप्त होने से चेहरे पर मुस्कान देखने को मिली।

तोरसिंदरी में ट्रॉली के नीचे सो रहे बच्चे को ट्रैक्टर ने रौंदा

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटपानी। प्रखंड अंतर्गत तोरसिंदरी में एक सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है। जहां ट्रैक्टर के ट्राली के नीचे सो रहे एक बच्चे को ट्रैक्टर ने रौंद कर फरार हो गया। दरअसल पिछले दो दिनों से चैत्र पर्व के अवसर पर तोरसिंदरी गांव में रात्रि छऊ नृत्य का आयोजन किया गया था। जिसमें पाताहातु गांव निवासी तुराम लेयांगी (12) वर्षीय अपने बड़े भाई रंगिया लेयांगी के साथ छऊ नृत्य देखने के लिए बीते मंगलवार की देर शाम आया हुआ था। इस दौरान मौसम खराब होने के कारण पास में खड़ी एक ट्रैक्टर के ट्राली के नीचे जाकर बैठ गया। वही देर रात होने के कारण ट्राली के नीचे सो गया। जबकि उसका बड़ा भाई मेला घूमने चला गया। जहां देर रात अचानक ट्रैक्टर चालक बिना देखे गाड़ी लेकर चला गया। वहीं ट्राली के नीचे सो रहे बच्चे के ऊपर चक्का चढ़नें के कारण उसकी मौत हो गयी। रात का फायदा उठाकर ट्रैक्टर चालक गाड़ी लेकर फरार हो गया।

बीपीसीएल नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन 27 से

मेराल (आजाद सिपाही)। प्रखंड के बौराहा गांव में आगामी 27 अप्रैल से बीपीसीएल नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट सीजन 2 का आयोजन किया जायेगा। टूर्नामेंट का भव्य उद्घाटन पूर्व मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के द्वारा किया जायेगा। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए आयोजन समिति के लोगों ने बताया कि टूर्नामेंट में कुल 32 टीमें भाग लेगी। विजेता टीम को 71 हजार रुपए तथा उपविजेता टीम को 41 हजार नगद और ट्रॉफी दी जायेगी। टूर्नामेंट में भाग लेने वाली टीमों के लिए 3 हजार 5 सौ रुपये प्रवेश शुल्क रखा गया है। प्रतिभागी सभी टीम को 25 अप्रैल तक अपना निर्धारित शुल्क कमेटी को जमा करना अनिवार्य होगा। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए असरेश कुमार सिंह ने बताया कि पिछले साल की तरह इस बार भी भव्य क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया जायेगा ताकि इस क्षेत्र के प्रतिभावान युवाओं को अपने प्रतिभा को निखारने का अवसर मिल सके। उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री के अलावे कई अन्य गणमान्य अतिथि शामिल होंगे।

डीसी, एसपी और डीडीसी ने किया पलाश मार्ट का उद्घाटन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। बुधवार को समाहरणालय परिसर में जेएसएलपीएस द्वारा संचालित पलाश मार्ट का उद्घाटन जिला दण्डाधिकारी-सह-उपायुक्त शेखर जमुआर, पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार पांडेय तथा उप विकास आयुक्त पशुपतिनाथ मिश्रा ने संयुक्त रूप से किया ।

मौके पर उपायुक्त श्री जमुआर ने कहा कि दीदियों को आगे बढ़ाने के लिए यह एक अच्छी पहल है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के बहुत से उत्पाद जिसको बाजार उपलब्ध नहीं हो पाता था उन सभी उत्पाद को पलाश मार्ट के माध्यम से बाजार उपलब्ध हो रहा है, जिससे की आम नागरिक शुद्ध घरेलु वस्तुओं का आनंद भी उठा पर रहे है।

डीपीएम जेएसएलपीएस ने बताया की ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को इससे जुड़ने से काफी लाभ मिल रहा है। सभी दीदियों को अपनी आजीविका चलाने में काफी मदद मिल रही है साथ ही साथ लोगों को स्वरोजगार का अवसर भी प्राप्त हो रहा है।

विदित हो की यह झारखंड सरकार की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को अपना उत्पाद बेचने के लिए एक मंच प्रदान करना है। इस मार्ट में ग्रामीण महिलाओं द्वारा उत्पादित विभिन्न वस्तुओं को प्रदर्शित किया जाता है और बेचा भी जाता है, जिसमें दाल, तेल, साबुन, हर्बल गुलाल, मिष्ठान और अन्य स्थानीय उत्पाद शामिल हैं। पलाश मार्ट का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने में मदद करना है।

बताते चले की झारखंड सरकार की ओर से स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के माध्यम से पलाश मार्ट की स्थापना की गयी है। जिसमें ग्रामीण परिवारों की महिलाओं के द्वारा बनाए हुए उत्पाद को देश के मार्केट में बेचने का अवसर प्रदान करना है।

जेएसएलपीएस द्वारा आयोजित उद्घाटन कार्यक्रम के मौके पर उपरोक्त के अलावे डीपीएम जेएसएलपीएस विमलेश कुमार शुक्ला, जिला प्रबंधक नौकरी और कौशल नवल किशोर राजू, बीपीओ-ईपी शेखर शत्यकेतु, मेराल बिपिएम गीरिजेश शर्मा,दीदी कैफे की दीदीयों सहित अन्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

मृत बच्चों के परिजनों से मिले विधायक सत्येंद्र तिवारी, की आर्थिक सहायता

जिला प्रशासन को जल्द मुआवजा भुगतान करने का निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गत मंगलवार को सदर प्रखंड के उड़सुगी गांव के एक ही परिवार के दो सगे भाई समेत चार बच्चों की मौत की सूचना पर बुधवार को विधायक सत्येंद्रनाथ तिवारी पीड़ित परिजनों से मिलने पहुंचे। विधायक ने पीड़ित परिजनों को इस दुःख की घड़ी में ढांढस बंधाया। उन्होंने कहा कि विधि के विधान को कोई भी नहीं टाल सकता है। लेकिन इसके बावजूद अभिभावकों को अपने बच्चों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने मौके से ही जिला प्रशासन के अधिकारियों से बात कर पीड़ित परिजनों को सरकार की ओर से प्रावधानित मुआवजा को अविलंब उपलब्ध कराने की दिशा में त्वरित कार्रवाई करने को कहा। इस दौरान विधायक ने अपनी ओर से भी परिजनों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराया। विधायक ने कहा कि परिजनों को चाहे कितना भी मुआवजा क्यों न उपलब्ध करा दिया जाए, लेकिन उन मासूमों की कमी को कोई भी पूरा नहीं कर सकता है। विधायक ने कहा जिस स्थान पर बच्चों के डूबने से मौत हुई है, आखिर उतना गड्ढा किस परिस्थिति में हुआ। अब तक जिला प्रशासन के अधिकारी किस नींद में सो रहे थे। पूरे मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। मौके पर भाजपा नेता मंगलमूर्ति तिवारी, विवेकानंद तिवारी, पूर्व मुखिया अखिलेश उरांव सहित काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

रेडक्रॉस सोसाइटी ने रक्तदान शिविर का किया आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी गढ़वा के द्वारा विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन गढ़वा नीलांबर पीतांबर भवन में किया गया। रेडक्रॉस के अध्यक्ष गढ़वा उपायुक्त शेखर जमुआर, अनुमंडल पदाधिकारी गढ़वा संजय कुमार, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अशोक कुमार, रेडक्रॉस के चेयरमैन डॉ एमपी गुप्ता, वाईस चेयरमैन विनोद कमलापुरी, रेडक्रॉस सचिव डॉ ज्वाला प्रसाद सिंह, वरिष्ठ समाज सेवी अलखनाथ पांडेय और डीएसपी गढ़वा नीरज कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। इस अवसर पर उपायुक्त ने रेडक्रॉस के कार्यो और गढ़वा के रक्तदाताओं की भूरी भूरी प्रशंसा की। कार्यक्रम के शुरूआत में चेयरमैन डॉ एमपी गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत किया। रेडक्रॉस के सचिव ने रेडक्रॉस द्वारा किये जा रहे कार्यो का विवरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में रक्तदाताओं द्वारा लगभग 30 यूनिट संग्रह किया गया। कार्यक्रम का संचालन रेडक्रॉस वाईस चेयरमैन विनोद कमलापुरी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन रेडक्रॉस के उप सचिव नंदकुमार गुप्ता ने किया। मौके पर उपस्थित रेडक्रॉस सोसाइटी के कार्यकारी कोषाध्यक्ष राम नारायण प्रसाद, एक्सक्यूटिव कमेटी के रघुवीर प्रसाद, डॉ पतंजलि केशरी, उमेश कश्यप, कमलेश गुप्ता, उमेश सहाय, संतोष कुमार मेहता, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया गढ़वा के चीफ मैनेजर प्रशांत कुमार श्रीवास्तव, लीड बैंक मैनेजर सत्यदेव रंजन, ऋषिकेश, चंद्र प्रकाश दुबे एवं ब्लड बैंक के तकनीशियन प्रदीप कुमार एवं स्वास्थ्य कर्मी तथा बड़ी संख्या में रक्तदाता और सदस्यगण उपस्थित थे।

सरस्वती विद्या मंदिर में अग्निशमन सेवा सप्ताह के तहत मॉक ड्रिल का आयोजन

श्री बंशीधर नगर (आजाद सिपाही)। स्थानीय सरस्वती विद्या मंदिर श्री बंशीधर नगर में अग्निशमन सेवा सप्ताह 14 से 20 अप्रैल 2025 के तहत अग्निशमन सेवा पदाधिकारी विमल सोरेन और जन्मेजय कुमार सिंह द्वारा विद्यालय में आग पर नियंत्रण के लिए मॉक ड्रिल का आयोजन वंदना सभा में किया गया। इसमें विमल सोरेन और जन्मेजय कुमार सिंह द्वारा लकड़ी पुवाल द्वारा लगे आग, लिक्विड जैसे पेट्रोल, केरोसिन, एलपीजी द्वारा लगे आग, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में लगे आग पर कैसे नियंत्रण किया जाये इसके विभिन्न तरीकों का प्रयोग भैया-बहनों के बीच किया गया। भैया बहनों के बीच आग लगने की स्थिति में प्राथमिक उपाय, अग्निशमन यंत्रों की सही उपयोग, तथा उनका समय-समय पर जांच और रखरखाव के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी गयी। इस अवसर पर विद्यालय समिति के सदस्य संजीव कुमार सपरिवार उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य रविकांत पाठक ने भैया बहनों को संबोधित करते हुए कहा कि अग्निशमन सप्ताह मनाने का मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों को आगजनी की घटनाओं से बचाव के प्रति सजग एवं सतर्क बनाना है ताकि जान माल के नुकसान को कम किया जा सके। मौके पर, सुधीर प्रसाद श्रीवास्तव, अविनाश कुमार, सुजीत दुबे, अशोक कुमार, नीरज सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

गढ़वा में खुला 'द रोजमेरी रेस्टोरेंट'

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। शहरवासियों के लिए स्वाद और माहौल का एक नया ठिकाना बनकर उभरा है। चिनियां रोड स्थित जेपी प्लाजा में 'द रोजमेरी रेस्टोरेंट', जिसका उद्घाटन रविवार को भव्य समारोह के साथ संपन्न हुआ। उद्घाटन फीता काटकर संगीता वर्मा एवं श्यामलता देवी ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में उत्साह और पारिवारिक भावनाएं देखने लायक थीं। रेस्टोरेंट के प्रोपराइटर भाई-बहन की जोड़ी अश्मित कुमार और आकांक्षा कुमारी ने बताया कि उन्होंने पारिवारिक परंपरा और आशीर्वाद की भावना के तहत अपने बुआ के हाथों उद्घाटन करवाया। उन्होंने कहा कि 'द रोजमेरी' सिर्फ एक रेस्टोरेंट नहीं, बल्कि एक अनुभव होगा। यहां मिलने वाले व्यंजन न केवल स्वाद में बेहतरीन होंगे, बल्कि ग्राहकों को एक अलग ही फील देंगे। भारतीय और कॉन्टिनेंटल दोनों तरह के फूड ऑप्शन यहां उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि आज के दौर में लोग सिर्फ खाना नहीं, बल्कि एक अच्छा माहौल और यादगार अनुभव भी चाहते हैं। मौके पर झामुमो नेता चंदन जायसवाल, राजा सिंह, ओम प्रकाश देव, बबीता देवी, दिलीप वर्मा सहित कई गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। सभी ने नवोदित उद्यमियों के प्रयास की सराहना की और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के दौरान मिठाई और स्नैक्स के साथ मेहमानों का स्वागत किया गया। सभी ने रेस्टोरेंट के इंटीरियर और मेन्यू की भी तारीफ की। 'द रोजमेरी' रेस्टोरेंट निश्चित ही गढ़वा के खानपान और सामाजिक जीवन को एक नया आयाम देगा। परिवार, दोस्त या फिर खास लोगों के साथ लजीज व्यंजनों का आनंद लेने के लिए यह जगह जल्द ही पसंदीदा ठिकाना बन सकती है।

मंझिआंव में इलेक्ट्रिक स्कूटी आइक्यूब का शुभारंभ

आजाद सिपाही संवाददाता

मंझिआंव। मंझिआंव बकरी बाजार स्थित मिडिल स्कूल के बगल में साईं टीवीएस ने अपने शो रूम नये इलेक्ट्रिक स्कूटी । Qube का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि शारदा ऑटो प्राइवेट लिमिटेड के ओनर सुजीत साहू, एरिया मैनेजर चिराग गर्ग, एडीबीडीएम प्रेमचंद पासवान, टीवीएस क्रेडिट सर्विस लिमिटेड के एरिया मैनेजर उज्जवल नारायण की उपस्थिति में राधाकृष्ण मंदिर के महंत केशवनारायण दास, विनय पाठक के द्वारा पुरे विधिविधान के साथ पूजा-अर्चना और नारियल फोड़कर सुभआरम्भ किया गया। बताते चलें कि साईं टीवीएस मंझिआंव को लगातार दो वर्षों से झारखंड में सबसे ज्यादा टीवीएस कंपनी का बाइक बेचने का अवार्ड से सम्मानित भी किया जा चूका है। इस शोरूम के प्रोपराइटर दिलीप जायसवाल उर्फ खुशी जायसवाल ने बताया कि इस टीवीएस इलेक्ट्रिक स्कूटी आई क्यूब चार नये अलग-अलग मॉडल, और नये फीचर्स के साथ लांच किया है, जिसकी शुरुवाती कीमत 125000 से 15000 की डाउन पेमेंट के साथ आसान किस्तों में उपलब्ध है, वहीं यह स्कूटी 3 घंटे कि फुल चार्ज में 80 किमी/घंटा के साथ 100 किमी से 150 किमी तक जा सकती है।

रंका में डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती मनायी गयी

रंका (आजाद सिपाही)। भारतीय संविधान के निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती रंका प्रखंड के विभिन्न गांवों में धूमधाम और हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। रंका प्रखंड अंतर्गत सोनदाग पंचायत के हुरदाग मोड़ पर स्थापित डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर मुखिया रीमा देवी, बीडीसी रीना भारती, जितेंद्र कुमार रवि, डॉ पतंजलि केशरी, भाकपा माले नेता अख्तर अंसारी, भाजपा नेता उत्तम पांडेय ने कैंडल जलाकर और माला पहनाकर नमन किया। वहीं सिरोईखुर्द पंचायत के उंचरी गांव में रंका दक्षिणी जिला परिषद सदस्य प्रमिला देवी, बीडीसी विनय यादव ने बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर की तस्वीर पर माल्यार्पण कर नमन किया। इस मौके पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ताओं सहित काफी संख्या में महिला पुरुष और बच्चे उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री हेमंत को केंद्रीय अध्यक्ष बनाये जाने पर झामुमो के कार्यकर्ताओं ने दी बधाई

आजाद सिपाही संवाददाता

रंका। रंका अनुमंडल प्रखंड मुख्यालय स्थित झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ नेता रौशन पाठक के आवास पर झामुमो रंका प्रखंड कमेटी की एक बैठक प्रखंड अध्यक्ष जैनुल्लाह अंसारी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें पार्टी की रांची में हुई 13वीं महाअधिवेशन में शिबू सोरेन को संस्थापक संरक्षक और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को केंद्रीय अध्यक्ष बनाये जाने पर खुशी जाहिर करते हुए शुभकामना और बधाई दी गयी। वहीं पार्टी के द्वारा पूर्व मंत्री मिथिलेश ठाकुर सहित गढ़वा जिला से सबसे अधिक 17 केंद्रीय समिति सदस्य बनाये जाने पर केंद्रीय नेतृत्व का आभार व्यक्त किया गया और सभी नव नियुक्त केंद्रीय समिति सदस्यों को बधाई शुभकामनाएं दी गयी। बधाई देने वालों में प्रखंड अध्यक्ष जैनुल्लाह अंसारी, वरिष्ठ नेता रौशन पाठक, प्रखंड कोषाध्यक्ष भंडूल पाठक, कार्तिक पांडेय, खरडीहा पंचायत मुखिया प्रतिनिधि पप्पू यादव, धर्मेंद्र दूबे, आफताब आलम, संजय सिन्हा, लवली उरांव, राजीव ठाकुर, शफीक अंसारी, धनंजय यादव, विक्की पांडेय, मुकेश तिवारी, संतोष चंद्रवंशी, हसिब अंसारी सहित अन्य लोगों का नाम शामिल है।

'कॉफी विद एसडीएम' : साहित्य सृजन के लिए गढ़वा में कैसे बने अच्छा माहौल, हुआ मंथन

सामाजिक सद्भाव बनाये रखने में साहित्यकारों की होती है अग्रणी भूमिका : एसडीएम

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार ने अपने एक घंटे के साप्ताहिक संवाद 'कॉफी विद एसडीएम' में बुधवार को सदर अनुमंडल क्षेत्र के साहित्यकारों को अपने यहां कॉफी पर बुलाकर अनौपचारिक संवाद किया।

रखीं समस्याएं, दिये सुझाव : संवाद के दौरान ज्यादातर साहित्यकारों की ओर से समस्याएं और सुझाव रखे गये, जिनके समाधान और अमल की दिशा में यथासंभव पहल करने का एसडीओ संजय कुमार ने सभी को भरोसा दिलाया।

अच्छा साहित्य हमें संवेदनशील बनाता है : संवाद के दौरान वक्ताओं ने कहा कि जिस तरह संविधान और कानून हमें हमारे अधिकार और शक्तियों से परिचय कराते हैं, उसी प्रकार अच्छा साहित्य हमें नैतिकता, उत्तरदायित्व और संवेदनशीलता सिखाता है और फलस्वरूप हम एक परिपक्व नागरिक बनते हैं।

साहित्यिक गतिविधियों के लिए परिसर की जरूरत : दस से अधिक पुस्तकें लिख चुके और सृजन श्री सम्मान प्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार सुरेंद्रनाथ मिश्रा ने कहा कि पहले प्रशासनिक स्तर पर काफी मदद मिलती थी और लगातार शहर में साहित्यिक गतिविधियां चलती रहतीं थीं, महा महापुरुषों की जयंती और पुण्यतिथि पर भी आयोजन होते थे, लेकिन अब क्रम टूट गया है। उन्होंने मांग की कि जिला मुख्यालय में साहित्यिक गतिविधियां करने के लिए कोई भवन या परिसर उपलब्ध कराया जाए।

जिला स्तर पर बने साहित्यिक कैलेंडर : वरिष्ठ साहित्यकार विनोद पाठक ने कहा कि आज साहित्यिक गतिविधियां आयोजित तो होती हैं किंतु साहित्यिक सोच के लोगों का जुटान काफी मुश्किल होता है। उन्होंने कहा कि इसके लिए जिला स्तर पर पहले से एक कैलेंडर बना लिया जाए ताकि

जिले के साहित्यकारों को पता हो कि किस तिथि पर कौन सा कार्यक्रम है। ऐसा करने से उनकी उपस्थिति बढ़ सकेगी। उन्होंने कहा यदि हमारी रचनाओं में दम होगा तो श्रोता जरूर आकर्षित होंगे।

युवाओं में साहित्यिक सोच पैदा करनी होगी : रासबिहारी तिवारी ने कहा कि आज श्रोताओं में साहित्यिक अभिरुचि कम होती जा रही है, इसके लिए हमें आने वाली पीढ़ियों अर्थात युवाओं के बीच में प्रशासनिक पहल से साहित्यिक प्रतियोगिताएं आयोजित करनी चाहिए। सुरेंद्र नाथ मिश्रा, विजय पांडे व आशीष दुबे आदि ने कॉफी विद एसडीएम कार्यक्रम की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह साहित्य के प्रति सकारात्मक प्रशासनिक सोच का प्रतिफल ही है जो आज इस कार्यक्रम में साहित्यकारों को बुलाया गया।

पुस्तकालय में साहित्यकारों के लिए जगह हो : कुछ साहित्यकारों ने कहा कि अनुमंडलीय पुस्तकालय ने आज एक कोचिंग संस्थान जैसा स्वरूप ले लिया है, वहां सिर्फ युवाओं की ही मौजूदगी रहती है, किंतु वहां पर अन्य लोगों विशेषकर साहित्यकारों के लिए भी बैठकर पुस्तकें और अखबार पढने के लिए कम से कम एक कक्ष आरक्षित होना चाहिए।

स्थानीय साहित्यकारों की रचनाओं को खरीदा जाए : बैठक में साहित्यकारों ने एक मत से कहा कि स्थानीय साहित्यकारों की अच्छे स्तर की रचनाओं को प्रशासन के स्तर से भी खरीद कर अनुमंडलीय पुस्तकालय में रखवाना चाहिए ताकि उन्हें लिखने के लिए प्रेरणा मिले।

सामाजिक सौहार्द्र बढ़ाने वाले साहित्य की दरकार : संजय कुमार ने सभी मेहमानों से कहा कि यद्यपि किसी भी साहित्यकार को विषय और शब्दों के बंधन से नहीं बांधा जा सकता है, क्योंकि उसकी कल्पनाएं असीमित होती हैं, वह किसी भी विषय पर लिख सकता है, किंतु फिर भी उन्होंने सभी साहित्यकारों से अनुरोध किया कि वे अपने पसंदीदा विषय के साथ-साथ सामाजिक सौहार्द और एकता बढ़ाने वाले साहित्य सृजन में भी अपना योगदान दें। आज गांव से लेकर शहर तक हर तरफ विद्वेष का माहौल बनता जा रहा है। चाहे सोशल मीडिया हो या पारंपरिक मीडिया, हर जगह नफरत, वैमनस्य और नकारात्मकता की भरमार है। ऐसे में सामाजिक सौहार्द पर लिखना विघटित होते समाज के लिए संजीवनी का काम करेगा।

विद्यालयों में भी साहित्यिक आयोजन हों : राकेश त्रिपाठी ने कहा कि सभी विद्यालयों की बड़ी कक्षाओं में साहित्यकारों की जयंतियों, पुण्यतिथियों या हिंदी दिवस आदि जैसे मौकों पर साहित्यिक गोष्ठियां और कार्यक्रम आयोजित होना चाहिए, इससे हमारे युवाओं के बीच साहित्य को लेकर इच्छा पैदा होगी।

स्थानीय कवियों को मिले प्राथमिकता : पूनम श्री और अंजलि शाश्वत ने कहा कि जिला स्तर पर आयोजित ज्यादातर कार्यक्रमों में बाहर के कवियों या कलाकारों को बुला लिया जाता है, बेहतर हो यदि जिला के स्थापना दिवस या बंशीधर महोत्सव आदि में स्थानीय कवियों व साहित्यकारों को भी मौका दिया जाए।

पीएम श्री राजकीय मध्य विद्यालय केतार में कार्यक्रम आयोजित

केतार (आजाद सिपाही)। पीएम श्री राजकीय मध्य विद्यालय केतार में पीएम श्री के तहत विद्यालय में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन केतार पंचायत के मुखिया प्रमोद कुमार ने की। कार्यक्रम की शुरूआत मुखिया और विद्यालय के प्रधानाध्यापक देवेंद्र कुमार सहित सभी शिक्षक द्वीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में प्रदेश स्तर के एक्सपर्ट संजीव कुमार एवं विकेश कुमार तिवारी द्वारा बच्चों के बीच पीएम श्री विद्यालय के बारे में बताया गया। इस कार्यक्रम में एक भारत श्रेष्ठ भारत, कम्युनिटी पार्टिसिपेशन, बिरसा मुंडा लर्निंग फेस्टिवल, हेल्थ कैंप सहित विभिन्न प्रकार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से विद्यालय के शिक्षक प्रेम कुमार गुप्ता, संतोष कुमार, राजीव कुमार सिंह, धनंजय कुमार, दिलीप कुमार, अजय कुमार, सुधा कुमारी सहित छात्र-छात्रायें उपस्थित थे।

केतार में बाबा साहब की जयंती मनायी गयी

केतार (आजाद सिपाही)। प्रखंड के बलिगढ़ पंचायत अंतर्गत चेचरिया गांव में मंगलवार को संध्या 8:00 बजे संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी। मौके पर उपस्थित अतिथियों, जनप्रतिनिधियों तथा अंबेडकरवादी लोगों ने बाबा साहेब एवं गौतम बुद्ध के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। तत्पश्चात प्रोजेक्टर द्वारा सीरियल के माध्यम से बाबा साहेब का जीवनी को दिखाया गया और क्लब के द्वारा सभी अतिथियों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। वहीं मुख्य अतिथि केतार थाना प्रभारी अरुण कुमार रवानी ने कहा, कि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक युगांतरकारी विचारधारा थे। उन्होंने बताया की बाबा साहब छुआछूत और जाति भेदभाव एवं सामाजिक न्याय के लिए आंदोलन चलाया था। जो आज उनके विचारों को आत्मसात करने की जरूरत है।

लातेहार में गेस्ट टीचर के लिए 401 आवेदन मिले

लातेहार (आजाद सिपाही)। लातेहार जिले में कल्याण विभाग के द्वारा संचालित किये जाने वाले इएमरएस नेगाई, मंगरा एवं हेठाटोली में शिक्षकों की रिक्ति के विरूद्ध गेस्ट टीचर की सेवा अधिप्राप्ति के लिए 10 फरवरी 2025 तक आवेदन आमंत्रित किया गया था, जिसके आलोक में कार्यालय में कुल 401 (चार सौ एक) आवेदन प्राप्त हुए। प्राप्त आवेदनों के साथ संलग्न शैक्षणिक योग्यता कागजातों के आधार पर अभ्यर्थियों की सूची तैयार की गयी है, यदि किसी अभ्यर्थी को शैक्षणिक योग्यता की जारी सूची में किसी भी प्रकार की आपत्ति हो तो 23 अप्रैल 2025 तक अपना लिखित रूप से आपत्ति साक्ष्य सहित कार्यालय में जमा कर सकते हैं। प्राप्त आपत्तियों की सुनवाई कर समीक्षोपरांत चयन समिति द्वारा विहित प्रक्रिया अपनाते हुए सूची के आधार पर अंतिम रूप प्रदान किया जायेगा, उसके बाद रिक्तियों के विरूद्ध गेस्ट टीचर के चयन हेतु कार्रवाई की जायेगी।

केंद्र सरकार के खिलाफ कांग्रेस का धरना प्रदर्शन

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। जिला कांग्रेस कमेटी ने मोदी सरकार के खिलाफ एक दिवसीय आक्रोषपूर्ण धरना प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन नेशनल हेराल्ड मामले में कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के खिलाफ राजनीतिक बदले की भावना से की गई कार्रवाई के विरोध में था। जिसमे कांग्रेस जनों ने मोदी सरकार पर जमकर हमला बोला। मोदी सरकार पर विभिन्न तरह के आरोप लगाया है। जिसमे नेशनल हेराल्ड मामले में सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ आरोप पत्र दायर करना, मोदी सरकार पर राजनीतिक बदले की भावना से कार्रवाई करने का आरोप लगाया है। कांग्रेस पार्टी ने इस कार्रवाई की कड़े शब्दों में निंदा की और कहा कि वे डरने वाले नहीं हैं। लोहरदगा जिला

कांग्रेस अध्यक्ष सुखैर भगत ने कहा कि मोदी सरकार का यह कदम लोकतांत्रिक विपक्ष के विचार पर सीधा हमला है। प्रदेश प्रतिनिधि नेसार अहमद ने कहा कि मोदी सरकार अपने विरोधियों को राजनीतिक रूप से दमन करने का कार्य कर रही है। कांग्रेस पार्टी ने कहा कि वे मोदी सरकार के गलत मंसूबों का जवाब देने के लिए तैयार हैं। वे राहुल गांधी के साथ कंधा से कंधा मिलाकर ऐसी शक्तियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। मौके पर जिला परिषद अध्यक्ष रीना कुमारी भगत, सांसद प्रतिनिधि साजिद अहमद चंगू, नेसार अहमद और अन्य कई नेता और कार्यकर्ता शामिल हुए।

चोला एमएस जेनरल इंश्योरेंस कंपनी के ऑफिस में लगी आग

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। शहरी क्षेत्र के न्यू रोड स्थित चोला मंडलम एमएस जेनरल इंश्योरेंस कंपनी के ऑफिस में बुधवार के दोपहर अचानक भीषण आग गयी, आग में ऑफिस में रखे महत्वपूर्ण दस्तावेज जल कर राख हो गया। चोला एमएस के मैनेजर ने बताया की दोपहर में हमलोग ऑफिस में खोलने पहुंचे थे जब शटर खोले तब आग की लपटे नजर आयी और पूरा ऑफिस धुएं से भर गया था। फिलहाल प्राप्त जानकारी के अनुसार बताया जा रहा है की शार्ट सर्किट से आग लगी होंगी। वहीं अग्निशमक की गाड़ी मॉक ड्रिल के अभ्यास निमित्त कहीं जा रही थी। तभी फायर मैन मनीष कुमार शर्मा को आग की लपते नजर आयी। उन्होंने तुरंत अग्निशमन की गाड़ी को रोक कर तत्परता दिखाते हुए आग बुझाने का कार्य किया। आग बुझाने में कड़ी मशक्कत करना पड़ा। सदर थाना पुलिस को सुचना मिलते ही दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुंची। फिलहाल पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कर रही है।

जेएनवी जोगना में खेल प्रतियोगिता शुरू

सेन्हा/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। प्रखंड मुख्यालय स्थित जिला के पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय जोगना लोहरदगा में संकुल स्तर दो दिवसीय खो-खो और रस्सी कूद खेल प्रतियोगिता बुधवार से प्रारंभ हुआ। आयोजित प्रतियोगिता में झारखंड प्रदेश के रांची संकुल अंतर्गत सभी नवोदय विद्यालयों से लगभग 225 छात्र छात्राएं खेल प्रतियोगिता भाग ले रहे हैं। वहीं आयोजित खेल प्रतियोगिता में खो-खो और रस्सी कूद खेल प्रतियोगिता का प्रतिस्पर्धाएं होगी। जिस निमित सभी विद्यालयों से संकुल स्तर पर खो-खो के लिये दस टीम और रस्सी कूद के चार टीम बनाया गया है। वही पीएम श्री नवोदय विद्यालय के खेल शिक्षक सूरज कुमार पाण्डेय ने जानकारी देते हुए बताया कि संकुल स्तर से चयनित छात्र-छात्राएं पशिचम बंगाल के नदिया और वीरभूम में 20 से 25 अप्रैल तक आयोजित होने वाले सम्भाग स्तरीय खेल प्रतियोगिता में संकुल स्तर से 96 प्रतिभागी बच्चे-बच्चियां खो-खो और रस्सी कूद खेल प्रतियोगिता में झारखंड राज्य का प्रतिनिधित्व करेंगे। जिसे की संभाग स्तरीय खेल प्रतियोगिता में चयनित बच्चे बच्चियां राष्ट्रीय स्तर में भाग लेंगे। मौके पर पीएम श्री नवोदय विद्यालय जोगना लोहरदगा के प्राचार्य अनीश चंद्र झा, खेल शिक्षक सूरज पांडेय के अलावा खेल प्रतियोगिता में शामिल विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिका और छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

बिजली चोरी के आरोप में पांच पर प्राथमिकी

सेन्हा/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। बिजली ऊर्जा चोरी मामले में सहायक बिजली अभियंता के नेतृत्व में छापेमारी अभियान चला गया। जिसमे बुधवार को थाना क्षेत्र के अरु, जोगना और बुटी सहित अन्य गांवों में छापेमारी अभियान चला कर 5 नामजद लोगों पर बिजली विभाग के सहायक अभियंता अजू कच्छप के आवेदन पर बिजली ऊर्जा चोरी मामले पर सनहा दर्ज किया गया। वहीं छापेमारी अभियान में अरु निवासी स्व जोगा महतो का पुत्र पारसनाथ महतो, स्व हरि साहु का पुत्र बबल साहु, बुटी निवासी अयूब अंसारी का पुत्र खालिद अंसारी और काशिम अंसारी का पुत्र सजाद अंसारी के विरुद्ध सेन्हा थाना में 15 अप्रैल को सेन्हा थाना कांड संख्या 48/25 भारतीय विद्युत अभिनियम 135,137 के तहत मामला दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई किया जा रहा है। वहीं थाना प्रभारी वारिश हुसैन ने जानकारी देते हुए बताया कि बिजली ऊर्जा चोरी मामले में सहायक विद्युत अभियंता अजु कच्छप के लिखित आवेदन के आधार पर 5 नामजद के विरुद्ध सनहा दर्ज कर नियम संगत कानूनी कार्रवाई किया जा रहा है। मौके पर छापेमारी दल में अलख पुजारी, फिरोज अख्तर, सारणी पुरुष, शिवशंकर उरांव,भोला प्रसाद, करमचंद उरांव समेत विद्युत विभाग के अन्य कर्मी शामिल थे।

इ-केवाइसी नहीं कराने वाले लाभुकों का गैस कनेक्शन होगा रद्द

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के कनेक्शन के संचालन के लिए एसओपी के तहत उज्ज्वला समिति की बैठक आहूत की गयी।

बैठक में डिस्ट्रिक्ट नोडल ऑफिसर अनिरबन गंगोपाध्याय ने पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के परिपत्र के अनुसार पीएमयूवाइ कनेक्शनों से संबधित जानकारी देते हुए बताया कि लातेहार जिले में कुल 2135 लाभुक हैं जिन्होंने प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन लेने के बाद अभी तक रिफिल नहीं कराया है। लाभुकों को 30 अप्रैल तक गैस वितरक के यहां ई-केवाइसी कराना अनिवार्य है। ऐसे सभी लाभुकों को ऑयल मार्केटिंग कंपनी की ओर से नोटिस भेजे जायेंगे। ई-केवाइसी नहीं

कराने पर उनका गैस कनेक्शन रद्द कर दिया जायेगा।

बैठक में उपायुक्त ने वर्तमान में उज्जवला कनेक्शनों की जानकारी लेते हुए नियमानुसार निष्पादन करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का उद्देश्य स्वच्छ ईंधन के उपयोग को बढ़ावा देना है, ताकि महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिले एवं महिलाओं के स्वास्थ्य की भी सुरक्षा की जा सके। उन्होंने नियमित रूप से जिला स्तरीय उज्ज्वला समिति की बैठक आयोजित करने का निर्देश दिया। बैठक में आईटीडीए निदेशक प्रवीण कुमार गगराई, जिला आपूर्ति पदाधिकारी रश्मि लकड़ा और संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

बाइकों की टक्कर में दो लोग घायल

भंडरा (आजाद सिपाही)। बेड़ो लोहरदगा मुख्य सड़क के कचमची गांव के समीप बुधवार को दो बाइक की टक्कर में दो लोग बुरी तरह घायल हो गये। दो घायलों को स्थानीय ग्रामीणों ने 108 वाहन से भंडरा स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा। जहां चिकित्सकों ने घायलों का इलाज किया। घायलों की पहचान लोहरदगा कैमो पतरा टोली निवासी संतोष कुमार उरांव की पत्नी सरिता उरांव उम्र 30, पुत्र आनंद उरांव उम्र 14 के रूप मे हुई। बताया जाता है कि संतोष उरांव अपनी पत्नी सरिता उरांव और पुत्र आनंद उरांव के साथ बाइक से बेड़ो से लोहरदगा लौट रहे थे उसी दौरान कचमची के पास बिपरीत दिशा से आ रही बाइक ने ठोकर मार दी। जिससे संतोष की बाइक अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। इस घटना मे संतोष की पत्नी और पुत्र बुरी तरह घायल हो गये। जिसे ग्रामीणों के सहयोग से भंडरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया।

जल संरक्षण को लेकर स्कूल में चला जागरूकता अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार झारखंड शिक्षा परियोजना एवं यूनिसेफ के संयुक्त तत्वाधान में चलाये जा रहे जल पखवाड़ा 2025 के तहत मुख्यमंत्री उत्कृष्ट बालिका विद्यालय में जिला समाज कल्याण पदाधिकारी अल्का हेंब्रम की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में छात्राओं को जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया।

जिला समाज कल्याण पदाधिकारी के द्वारा जल पखवाड़ा पर छात्राओं को जल जनित बीमारियों, पीने के पानी के सुरक्षित संचालन के बारे में बताया गया। विद्यालय में जल पखवाड़ा की गतिविधियों पर इको क्लब के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रम तीन बार आयोजित किया जायेगा। जल पखवाड़ा 16 अप्रैल से लेकर 30 अप्रैल तक चलाया जायेगा।

22 तक मनाया जायेगा पोषण पखवाड़ा : सुषमा नीलम सोरेंग

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। झारखंड रांची सहायक निदेशक समाज कल्याण द्वारा आगामी पोषण पखवाड़ा 8 अप्रैल से 22 अप्रैल 2025 तक मनाया जायेगा। इसी विषय पर चर्चा परिचर्चा पर बुधवार को लोहरदगा कल्याण विभाग परियोजना निदेशक आइटीडीए सह प्रभारी समाज कल्याण पदाधिकारी सुषमा नीलम सोरेंग की अगुवाई में समीक्षा बैठक कल्याण कार्यालय में की गयी। बैठक में मुख्य रूप से सीडीपीओ लोहरदगा जिला एवं एल एस के साथ समीक्षात्मक बैठक कर पोषण पखवाड़ा की गतिविधियों पर दिये गये कैलेंडर के अनुसार सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में कराना सुनिश्चित करें और साथ ही साथ जन आंदोलन पोर्टल में इंट्री करने का दिया गया निर्देश। समीक्षा बैठक में कालिचरण उरांव, जफर कलाम, सीडीपीओ ज्योति कुमारी प्रसाद, नंदी रानी कच्छप, नीसु कुमारी महतो, कुसुम कुमारी, बॉबी कुमारी नायक इत्यादि मौजूद थे।

सेविकाओं को सुरक्षा बीमा कराने में सहयोग करें बैंक कर्मी : बीडीओ

आजाद सिपाही संवाददाता

सेन्हा/ लोहरदगा। प्रखंड मुख्यालय स्थित महात्मा गांधी सभागार कक्ष में बुधवार को प्रखंड स्तरीय बैंकर्स समिति का बैठक प्रखंड विकास पदाधिकारी संग्राम मुर्मू की अध्यक्षता में संपन्न हुई। आयोजित बैठक में सेविका को सुरक्षा बीमा योजना कराने में सहयोग करने पर जोर देते हुए बैंकों में अब तक प्रेषित किये गये लंबित केसीसी ऋण आवेदन प्रपत्रों को लक्ष्य के अनुरूप स्वीकृती एवं वितरण करने का निर्देश दिया गया। साथ ही बैठक में उपस्थित बैंक कर्मियों के साथ सरकार द्वारा संचालित जनकल्याण कारी योजना संबंधित चर्चा किया गया। इसके अलावे क्रेडिट डिपॉजिट रेशियो बढ़ाने पर विस्तार पूर्वक विचार विमर्श किया गया तथा बैंकों को प्रशासनिक

कार्यालय के साथ आपसी समन्वय स्थापित करने के संबंध में निर्देश देते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी संग्राम मुर्मू ने कहा सरकार के द्वारा जनकल्याणकारी योजनाएं चला कर बैंक के माध्यम से योजना का लाभ जन जन तक पहुंचाने का कार्य सौंपा गया है। साथ ही उन्होंने सभी बैंक प्रबंधकों को प्रखंड के संबंधित अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सरकार की महत्वकांक्षी योजनाओं को सफलता पूर्वक निर्वाहन करने के संबंध में जानकारी दिया गया। उन्होंने कहा कि सेविकाओं का सुरक्षा बीमा का आवेदन को क्रियान्वयन कराते हुए लाभ दें। बैठक में मुख्य रूप से बैंक ऑफ इंडिया शाखा सीठीयो, बुटी, सेन्हा, बदला ग्रामीण बैंक सीठीयो के शाखा प्रबंधकों के अलावे त्रिवेणी भगत, महिला सुपरवाइजर सुषमा कुजूर, सुजीत उरांव, मो अजहर, विफई उरांव समेत अन्य उपस्थित थे।

आरसी शूटिंग स्टेट चैंपियनशिप में सैफ अख्तर ने गोल्ड मेडल जीता

अंजुमन इस्लामिया सेन्हा ने बुके और शॉल देकर किया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

सेन्हा/ लोहरदगा। प्रखंड क्षेत्र के अंजुमन इस्लामिया सेन्हा का कार्यालय में अंजुमन इस्लामिया लोहरदगा के नाजिम-ए-आला हाजी जब्बार अंसारी, अंजुमन इस्लामिया सेन्हा के सदर मोख्तार अंसारी, सचिव मो अजहरुद्दीन अंसारी रांची जिला अंतर्गत चान्हो प्रखंड के जेएमएम संयोजक मंडली मकबूल अहमद आजाद, इमरान अंसारी, इम्तियाज अंसारी ने एयर पिस्टल खिलाड़ी सेन्हा निवासी फिरोज अख्तर अंसारी के पुत्र सैफ अख्तर को गोल्ड मेडल जीतने पर बधाई दिया। विगत दिन खूंटी जिला में 12अप्रैल से 15 अप्रैल तक तीसरा के आरसी शूटिंग स्टेट चैंपियनशिप प्रतियोगिता 2025 में गोल्ड मेडल जीत कर

सैफ अख्तर ने सेन्हा गांव सहित जिला का नाम झारखंड प्रदेश में रौशन किया है। सैफ अख्तर ने कहा कि झारखंड प्रदेश के ओपन राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में 300 प्रतियोगी खिलाड़ियों ने भाग लिया था। जिसमें सैफ अख्तर ने कुल 400 प्वाइंट में से 370 प्वाइंट लाकर प्रथम स्थान हासिल कर गोल्ड जीता है। इससे पहले 2022 ऑल इंडिया इंटर विद्यालय में सिल्वर मेडल 2022 और 2023 में स्टेट लेबल पर गोल्ड मेडल तथा 2023 में पिस्टल प्वाइंट 2-2 में गोल्ड मेडल जीता था। वही खूंटी प्रतियोगिता से घर पहुंचने पर अंजुमन इस्लामिया सेन्हा के सदर, सचिव और अन्य लोगों द्वारा बुके देकर स्वागत किया गया। वही अंजुमन इस्लामिया लोहरदगा के नाजिम ए आला हाजी जब्बार अंसारी ने कहा कि ग्रामीण स्तर के खिलाड़ी आगे बढ़ रहे हैं। जिसको प्रोत्साहित कर आगे लाने के लिए हौसला बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि लक्ष्य लेकर आगे बढ़े और दूसरों को भी बढ़ाये। इस संबंध में खिलाड़ी को आगे लाने के लिए जिले के उपायुक्त से मिलकर मामले को रखेंगे।

शंकर रविदास के हत्यारे की गिरफ्तारी की मांग को लेकर इचाक में निकला कैंडल मार्च

इचाक (आजाद सिपाही)। इचाक थाना क्षेत्र अंतर्गत इचाक मोड़ के सिझुवा हाइ स्कूल के सामने मंगलवार दोपहर 12 बजे दो बाइक सवार अपराधियों ने सलफर्नी फ्यूल्स पेट्रोल पंप के मैनेजर शंकर रविदास को दिन दहाड़े गोली मारकर उसके पास से पैसे लूट लिए और फरार हो गये थे। शंकर की मौत हजारीबाग अस्पताल ले जाने के दौरान हो गये थी। बुधवार को कुटुमसुकरी गांव के श्मशान घाट में अंत्येष्टि हुई। जिसमें बड़ी संख्या में लोग जुटे। इससे पूर्व मंगलवार रात को मृतक शंकर रविदास के शव को लेकर परिजन और ग्रामीण इचाक थाना पहुंच मुआवजे और नौकरी की मांग कर रहे थे, जहां क्षेत्र के समाजसेवी और थाना प्रभारी प्रशिक्षु आईपीएस श्रुति और एसआई संतोष कुमार सिंह के पहल पर मृतक के परिजन को पेट्रोल पंप के संचालक के द्वारा मुआवजा भी दिया गया। बुधवार शाम सैकड़ों की संख्या में क्षेत्र के युवा हाथों में तख्ती लिए इचाक बाजार में कैंडल मार्च निकाला और हत्यारे की गिरफ्तारी की मांग की।

बिजली चोरी के खिलाफ चला अभियान

भंडरा (आजाद सिपाही)। भंडरा थाना क्षेत्र अंतर्गत मसमानो पंचायत में अवैध बिजली चोरी की रोकथाम को लेकर विद्युत विभाग के सहायक विद्युत अभियंता मोहम्मद जिशान के नेतृत्व में छापेमारी अभियान चलाया गया। इस दौरान बिजली विभाग के अधिकारियों द्वारा मसमानो पंचायत के आठ लोगों के घरों में अवैध बिजली का उपयोग करते दोषी लाभुक पर जुर्माना लगाया है। साथ ही भंडरा थाना में प्राथमिकी दर्ज कर दोषियों के घर से तार को जब्त कर थाना को सुपुर्द कर दिया है।

जन शिकायत समाधान शिविर में 53 आवेदन मिले

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीह। महानिदेशक पुलिस महानिरीक्षक और जिले के पुलिस कप्तान कुमार गौरव के निर्देश पर बरवाडीह थाना परिसर में बरवाडीह, छिपादोहर और मनिका थाना टीम के द्वारा जन शिकायत समाधान शिविर के चौथा चरण के तहत शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें एसडीपीओ भरत राम बरवाडीह अंचलाधिकारी मनोज कुमार, प्रभारी थाना प्रभारी राजन अधिकारी, छिपादोहर थाना प्रभारी धीरज कुमार सिंह, मनिका थाना प्रभारी शशि कुमार और कई सब इंस्पेक्टर और एएसआइ मौजूद रहे। इस दौरान एसडीपीओ भरत राम ने बताया कि पहला कार्यक्रम 10

सितंबर 2024, दूसरा 18 दिसंबर 2024 और तीसरा 22 जनवरी 2025 को हुआ था। वहीं बुधवार यानि 16 अप्रैल को चौथी बार थाना परिसर मे समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस दौरान बरवाडीह थाना में 31, मनिका 8 और छिपादोहर के 14 मामले शामिल है। जिसमे 25 मामलो का ऑन स्पॉट निष्पादन किया गया। अधिकारियों ने सभी शिकायतों को गंभीरता से सुना और त्वरित समाधान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

बरवाडीह थाना क्षेत्र से प्राप्त शिकायतों में सेदुप गांव की दो दर्जन से अधिक महिलाओं ने महुआ चुनने के दौरान गांव के कुछ दबंगों द्वारा परेशान किये जाने और बाधा उत्पन्न करने की शिकायत की। वहीं आदर्श नगर निवासी शंभू प्रसाद ने झामुमो प्रखंड अध्यक्ष शशि भूषण तिवारी पर 77 हजार 7 सौ रुपये की ठगी का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज करायी।

शिविर में एक दर्जन से अधिक मामलों का निपटारा मौके पर ही किया गया। जबकि शेष मामलों की जांच के बाद कार्रवाई का आश्वासन अधिकारियों ने दिया।

जन शिकायत समाधान शिविर से ग्रामीणों में प्रशासन के प्रति विश्वास बढ़ा है और यह पहल जन समस्याओं के समाधान की दिशा में एक प्रभावी कदम साबित हुई है।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम राज्य पुलिस की अच्छी पहल : आइजी

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। शहरी क्षेत्र के अजय उद्यान के समीप स्थित नगर भवन में झारखंड के डीजीपी के निर्देश पर लोहरदगा पुलिस की ओर से जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रांची जोन के आइजी असीम विक्रांत मिंज शामिल हुए। जिले के पुलिस अधीक्षक हारिश बीन जमा के साथ लोहरदगा पुलिस के पदाधिकारी मौजूद रहे। इस कार्यक्रम में जिले भर के फरियादी अपनी फरयाद लेकर पहुंचे और मौखिक और लिखित रूप से शिकायत दर्ज करायी। कार्यक्रम के दौरान लोगों ने अपनी शिकायत

अधिकारियों के समक्ष दर्ज कराई और उसे त्वरित कार्रवाई के लिए अधिकारियों ने संबंधित विभाग और थानों को निर्देश भी दिया। लोगो की समस्या को त्वरित निपटारा के उद्देश्य से यह कार्यक्रम का आयोजन जिले के साथ साथ सभी थानों क्षेत्र में किया जा रहा है ताकि लोग अपनी शिकायत ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यम से दर्ज करा सके। कार्यक्रम को लेकर आइजी असीम विक्रांत मिंज ने कहा कि यह कार्यक्रम लोगों के लिए है और उनके शिकायत के समाधान के लिए किया जा रहा कार्यक्रम राज्य सरकार और झारखंड पुलिस की एक अच्छी पहल है। जिससे लोगों को लाभ होगा और उनके शिकायत पर त्वरित करवाई की जायेगी। पहले भी यह कार्यक्रम हो चुकी है जिसमे लोगो की शिकायत मिली थी। उसमे आधे से ज्यादा मामलों का निपटारा किया गया है और कार्यक्रम के माध्यम से और लोगो का शिकायतों को निपटारा किया जायेगा। इसमें शिकायतकर्ता को पुलिस की ओर से फोन जायेगी। जिसमें केस को लेकर सभी तरह की जानकारी दी जायेगी।

बीडीसी की बैठक में ली गयी प्रखंड में चल रहे विकास कार्यों की अद्यतन जानकारी

अनुपस्थित कर्मियों को शो कॉज करने का विधायक ने दिया निर्देश

विभिन्न विभागों से मिल रही शिकायतों पर प्रखंड प्रमुख भी दिखीं नाराज

वाहन जांच के दौरान लोगों को अनावश्यक परेशान ना किया जाये : विधायक

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। प्रखंड कार्यालय सभागार में बुधवार को बीडीसी की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता प्रखंड प्रमुख राजकुमारी देवी और संचालन बीडीओ सुनील कुमार वर्मा ने किया। बैठक में मुख्य रूप से विधायक संजय सिंह यादव मौजूद रहे। इस दौरान प्रखंड में चल रहे विकास कार्यो की अद्यतन जानकारी ली। उन्होंने बीडीओ और सीओ को प्रखंड क्षेत्र में संचालित स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण करने का निर्देश दिया। लगे हाथ विधायक ने बिना पूर्व सूचना के अनुपस्थित रहने पर अनुपस्थित कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की बाद कही। उन्होंने अनुपस्थित कर्मियों को शो कॉज करने का निर्देश दिया। सख्त लहजे में कहा कि काम करेंगे तभी पद रहेंगें। वहीं, पुलिस प्रशासन द्वारा वाहन जांच के दौरान अनावश्यक रूप से आम लोगों को परेशान नहीं करने का निर्देश दिया। कहा कि कार्रवाई जरूरी है, लेकिन जो दोषी है उनके खिलाफ ही कार्रवाई की जाए। पर जो निर्दोष हैं उन्हें बेवजह परेशान ना किया जाए। उन्होंने अनावश्यक रूप से परेशान करने वाले अधिकारियों-कर्मियों को चिन्हित कर अग्रेतर कार्रवाई के लिए उच्चाधिकारियों को सूचित करने की बात कही। दूसरी ओर, कई विभागों पर नाराजगी जताते हुए प्रखंड प्रमुख ने कहा कि किसानों का ऋण, मनरेगा भुगतान, जाती, जन्म-मृत्यु एवं जनवितरण से जुड़ी समस्याएं सामने आ रही है। निर्देश के बावजूद लगातार शिकायतें मिल रही है। उन्होंने संबंधित पदाधिकारियों को समस्या के निराकरण के लिए अविलंब कार्य करने की बात कही। साथ ही जनहित से जुड़े आवेदन को तुरंत स्वीकार करते हुए त्वरित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। वहीं, बीडीओ ने विभागीय कर्मियों को अधूरी विकास योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया। मौके पर सांसद प्रतिनिधि अखिलेश्वर मेहता, पूर्व जिप सदस्य मदन पासवान, उप प्रमुख इंदु देवी, मुखिया श्रवण राम, सरिता कुमारी, पंसस अजित कुमार सिंह, प्रदीप पासवान, धनंजय कुमार, स्वास्थ्य बीपीएम विभूति गुप्ता, प्रखंड कोऑर्डिनेटर राजू रंजन, मनरेगा बीपीओ चंद्रशेखर दुबे आदि मौजूद थे।

बैठक में उपस्थित विधायक संजय सिंह यादव, प्रखंड प्रमुख, बीडीओ एवं अन्य।

पीपरा-जपला सड़क की बदहाली पर सपा नेता ने जतायी नाराजगी

आजाद सिपाही संवाददाता

हरिहरगंज/पलामू। समाजवादी पार्टी के नेता कमलेश कुमार यादव ने पलामू जिले के पीपरा प्रखंड क्षेत्र के दोबटिया मोड़ एनएच 139 से पीपरा-जपला जर्जर सड़क की हालत को लेकर प्रशासन के खिलाफ नाराजगी जाहिर की है। उन्होंने सड़क के निर्माण की मांग करते हुए प्रशासन को चेतावनी दी कि अगर शीघ्र इस मुद्दे पर पहल नहीं की गयी तो वह आंदोलन करने को बाध्य होंगे। कहा कि सड़क की स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि उस पर चलने से वाहन दुर्घटनाग्रस्त होने का खतरा रहता है। ग्रामीणों को भी भारी असुविधा हो रही है। सपा नेता ने बताया कि दोबटिया मोड़ एनएच 139 से पीपरा-जपला सड़क की जर्जर स्थिति और उड़ते धूल के कणों ने स्थानीय लोगों को काफी परेशानी हो रही है। खासकर गर्मी के मौसम में सड़क पर उड़ने वाली धूल ना केवल पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती है, बल्कि इलाके में रहने वाले ग्रामीणों की सेहत पर भी प्रतिकूल असर डाल रही है। इस खराब सड़क पर चलने से कई बार पैदल चलने वालों और सवारियों को भी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आरोप लगाया कि स्थानीय प्रशासन और राज्य सरकार की अनदेखी के कारण इलाके की जनता को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यदि प्रशासन जनता की बुनियादी समस्याओं का समाधान नहीं करती तो क्षेत्र की जनता के आक्रोश का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ सड़क का मामला नहीं, बल्कि प्रशासन की कार्यप्रणाली और उनकी प्राथमिकताओं पर सवाल उठाता है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि 45 दिनों में सड़क निर्माण का कार्य शुरू नहीं हुआ तो जनता के साथ सड़क पर उतरकर आंदोलन करेंगे। सपा नेता ने सरकार से अनुरोध किया कि वह इस मुद्दे को गंभीरता से लेकर शीघ्र कार्यवाही करें, ताकि यहां के ग्रामीणों को राहत मिल सके।

पीएम श्री कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

आजाद सिपाही संवाददाता

छतरपुर/पलामू। पीएम श्री कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रम सह गोष्ठी का आयोजन किया गया। इससे पहले कस्तूरबा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किया गया। जिसके बाद कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में शामिल सामाजिक कार्यकर्ता अरविंद गुप्ता चुनमून, प्रमुख प्रतिनिधि राजन सिंह, उपप्रमुख संतोष यादव, पूर्व मुखिया राजेन्द्र यादव, वार्डन चंदू कुमारी, श्यामता सिंह ने संयुक्त रूप से किया। समारोह में कस्तूरबा विद्यालय की छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए कई सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किये। वहीं, बच्चों को स्काउट गाइड प्रशिक्षण के तहत प्रमाण पत्र भी वितरित किया गया। वहीं, नये सेशन में गए छात्राओं को गर्मी के मद्देनजर समर किट भी प्रदान किया गया। इस अवसर पर अरविंद ने कहा कि ग्रामीण इलाकों की छात्राओं में कुछ कर गुजरने का माद्दा है। यही कारण है कि विभिन्न क्षेत्रों में गांवों की लड़कियां बेहतर कर रही हैं। कस्तूरबा स्कूल की छात्राओं का प्रदर्शन बड़े स्कूलों से बेहतर है। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका प्रतिभा कुमारी ने किया। इस मौके पर वार्डन चंदू कुमारी, अनूप कुमार सिन्हा, श्यामता सिंह, शेशांक मिश्रा, जनेश्वर गुप्ता, प्रतिभा कुमारी, मुदित टेरेसा बारला, रीना कुमारी, गौरी तिवारी, सुनीता कुमारी, संमिता कुमारी, विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष आदि उपस्थित थे।

संत मरियम स्कूल में मिक्स्ड मार्शल आर्ट प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। मिक्सड मार्शल आर्ट्स एडवांस प्रशिक्षण शिविर का आयोजन संत मरियम विद्यालय के कजरी शाखा में हुआ। जिसमें संत मरियम विद्यालय के चारों शाखाओं के खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। शिविर का शुभारंभ प्रचार्य कुमार आर्दश ने किया। प्रशिक्षण शिविर में खिलाड़ियों को प्रशिक्षण मुख्य मार्शल आर्ट्स प्रशिक्षक शिहान संतोष कुमार, सकेंदर प्रजापति, नटवर पांडेय, आशुतोष कुमार, गोल्डी कुमारी, अमित प्रजापति, मखारिया आदि प्रशिक्षकों ने सेल्फ- डिफेंस, नांईन चॉक, डंडा, कटाना, शाई, श्री स्टार नाईन -चाक, काता, ग्रप- फाईट, फ्लाईग-किक आदि का प्रशिक्षण कराया। अपने संबोधन में कुमार आदर्श ने कहा कि बच्चों को प्रेरित करने के लिए विद्यालय की ओर से मार्शल आर्ट्स शिविर का आयोजन किया गया। विषेश रुप से लड़कियों को आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षित करने पर जोर दिया जा रहा है. ताकि समय आने पर खुद की रक्षा कर सके।

दिल्ली से मजदूरी कर घर लौट रहे मजदूर की सड़क हादसे में हुई मौत

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। हरिहरगंज थाना क्षेत्र के सरसोत पंचायत अंतर्गत बलरा गांव निवासी प्रवेश भुइंया (50) दिल्ली से मजदूरी कर घर लौट रहे थे। इस दौरान सड़क हादसे में उसकी मौत हो गई। घटना बिहार के औरंगाबाद जिला अंतर्गत भैरवपुर के समीप एनएच 139 औरंगाबाद और मेदिनीनगर मुख्य पथ पर घटी है। इस संबंध में बलरा गांव के ग्रामीण बृजमल पासवान सहित कई ग्रामीणों ने बताया कि प्रवेश भुइंया दिल्ली में

मजदूरी करने गया था। कई महीनों के बाद घर लौट रहा था। वह औरंगाबाद से ऑटो रिक्शा पकड़ कर घर आ रहा था। तभी भैरवपुर गांव के समीप एक अज्ञात वाहन के धक्के से ऑटो रिक्शा पलट गई। इस हादसे में प्रवेश भुइंया गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे औरंगाबाद सदर अस्पताल से रेफर करने के बाद बिहार के जमुहार अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। 14 अप्रैल को पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। परिजनों ने बटाने नदी घाट पर अंतिम दाह संस्कार किया।

हाजिरी बनाकर विद्यालय से नदारद रहते हैं शिक्षक, समाजसेवी ने की कार्रवाई की मांग

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। हरिहरगंज नगर पंचायत क्षेत्र के सतगांवा उत्क्रमित मध्य विद्यालय में कार्यरत सहायक शिक्षकों की लापरवाही को लेकर समाजसेवी रविंद्र पासवान ने गंभीर आपत्ति जताई है। उनका कहना है कि शिक्षक ड्यूटी

के दौरान स्कूल में अनुपस्थित रहते हैं। अक्सर बिना किसी सूचना के हाजरी बनाकर विद्यालय से नदारद रहते हैं और स्थानीय होने का फायदा उठा रहे हैं। इससे बच्चों की पढ़ाई पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने अधिकारियों से तुरंत ऐसे शिक्षकों के खिलाफ कार्रवाई की अपील की है।

हुसैनाबाद के होटलों में बिना ढके खुले में बिक रहे खाने-पीने के सामान, हुई कार्रवाई

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। नगर पंचायत प्रशासन की ओर से बुधवार को होटलों में साफ सफाई से संबंधित विशेष जांच अभियान चलाया गया। इस संबंध में कार्यपालक पदाधिकारी तर्निश कुमार हंस ने बताया कि इस अभियान में लगभग सभी होटलों में गंदगी के साथ खाने-पीने के सामान तैयार करने को लेकर सख्त चेतावनी देते हुए सभी के ऊपर जुर्माना भी लगाया गया। सभी होटल संचालकों द्वारा खुले में बिना ढके प्रदूषित खाद्य सामग्री को बेचा जा रहा था। इसे लेकर सभी होटल संचालकों को निर्देशित किया गया कि इस तरह के जांच अभियान लगातार जारी रहेगी और भविष्य में ऐसी गलती पाए जाने पर सारा सामान जब्त

कर लिया जाएगा। उक्त अभियान में सिटी मिशन मैनेजर राकेश कुमार सिंह, चिकित्सा पदाधिकारी देशराज गहलोत, विधि सहायक विक्रम, राजस्व निरीक्षक शिव शंकर उरांव के साथ सुपरवाइजर संजीत रवि विकास मंटू आदि शामिल थे। साथ ही हुसैनाबाद पुलिस की टीम भी इस अभियान में शामिल रही।

राहुल टीवीएस में नयी स्कूटी आइक्यूब-9 लांच

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। शहर के जपला-छतरपुर मुख्य पथ के खादी भंडार के समीप राहुल टीवीएस में कंपनी की नई स्कूटी आइक्यूब-09 का अनावरण हुआ। टीवीएस मोटर्स कंपनी के अधिकारी चिराग गर्ग ने बताया कि टीवीएस की नई स्कूटी आइक्यूब- 09 में 2.2 केडब्ल्यूएच लिथियम आयन बैटरी और बीएलडीसी हब-माउंटेड मोटर से लैस है, जो 4.4 किलोवाट की पावर और 140 एनएम का टॉर्क प्रदान

करता है। यह 4.2 सेकंड में 0 से 40 किमी/घंटा की रफ्तार पकड़ लेता है। इसकी अधिकतम गति 75 किमी/घंटा और रेंज 75 किमी है। इसे चार्ज होने में सिर्फ दो घंटे लगते हैं। बताया कि टीवीएस आइक्यूब एक लाख 4 हजार 729 के एक्स शोरूम प्राइस पर उपलब्ध है। वहीं, टीवीएस शोरूम के प्रो राहुल रमन ने बताया कि हमारे प्रतिष्ठान में नई स्कूटी दो कलर में उपलब्ध है। साथ ही ग्राहकों के बेहतर सुविधा के लिए आसान किस्तों में फाइनेंस की सुविधा मुहैया कराया जा रहा है। इस मौके पर टीवीएस मोटर्स कंपनी के एमडी ऑनर उदित साहू, राहुल टीवीएस प्रो राहुल रमन, मैनेजर शिवम कुमार, एडीबीडी एम, प्रेमचंद कुमार, उज्ज्वल कुमार, ऋषभ कुमार, मधु सिंह आदि मौजूद थे।

सामुदायिक भवन के जीर्णोद्धार को लेकर पार्षद ने कार्यपालक पदाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। विश्रामपुर नप मुख्यालय के वार्ड 16 में स्थित सामुदायिक भवन जीर्णशीर्ण हो चुका है। जिसके मरम्मत की अति आवश्यकता है। इस संबंध में वार्ड 16 की निवर्तमान पार्षद पूनम देवी ने बुधवार को नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी को एक ज्ञापन सौंपा। जिसमें पूनम देवी ने कहा कि इस सामुदायिक भवन का निर्माण 2015 में हुआ था। निर्माण के 10 वर्ष के बाद यह भवन जीर्णशीर्ण अवस्था में है। इस भवन में पानी, बिजली, स्नानघर, शौचालय सहित सभी सुविधाएं अब नगण्य हो चुकी हैं। सभी का मरम्मत कराते हुए पूरे भवन का रंग-रोगन किया जाए, ताकि पूर्व की तरह जनोपयोगी हो सके। कहा कि यह सामुदायिक भवन नप मुख्यालय के हृदयस्थली ऐतिहासिक पंचमुखी मंदिर प्रांगण में अवस्थित है। इसका मॉडलाइज हो जाने के बाद लाभ आम लोगों को मिल सकेगा। वहीं, कार्यपालक पदाधिकारी सोमा खंडौत ने पार्षद पूनम देवी को आश्वस्त किया कि इस सामुदायिक भवन का जीर्णोद्धार कराया जायेगा। जल्द ही इसकी प्रक्रिया शुरू की जायेगी।

खलिहान में लगी आग, 150 बोझा गेहूं जलकर राख

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। प्रखंड के बाघमनवा पंचायत अंतर्गत चोरटिया गांव के एक खलिहान में बुधवार को आग लग गयी। जिससे खलिहान में रखा 150 बोझा गेहूं जलकर राख हो गया। जानकारी के अनुसार चोरटिया गांव के चंद्रिका यादव के खलिहान में अचानक आग लग गयी। ग्रामीणों ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन आग पर काबू नहीं पाया जा सका। लोगों के सामने ही गेहूं के सभी बोझा जलकर खाक हो गया। फिलहाल आग लगने के कारणों का पता नहीं चल पाया है। वहीं, किसान चंद्रिका यादव ने कहा कि पूरा परिवार खेती पर ही निर्भर है। फसल जल जाने से विकट स्थिति पैदा हो गयी है।

राजू मेहता को मिला राइफल शूटिंग में कांस्य पदक

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। हुसैनाबाद उतरी क्षेत्र के जिला परिषद सदस्य और युवा बसपा नेता राजू मेहता उर्फ एसपी ने राइफल शूटिंग में कांस्य पदक जीता है। उन्होंने बताया कि यह

आयोजन जिला स्तरीय कार्यक्रम खूंटी राइफल और झारखंड स्टेट राइफल एसोसिएशन की ओर से 12 से 14 अप्रैल तक की गयी थी। जिसका फाइनल रिजल्ट 15 अप्रैल को निकला। जिसमें सभी विजेताओं को मेडल देकर सम्मानित किया गया। मौके पर खूंटी डीएफओ दिलीप कुमार यादव, झारखण्ड स्टेट राइफल एसोसिएशन के अध्यक्ष दिवाकर सिंह, सचिव उत्तम चंदन, ट्रेजर मधुर अग्रवाल आदि ने राजू मेहता को सम्मानित किया गया। वहीं, राजू ने बताया कि इस प्रतियोगिता के कुल आयाम के अंक 400 थे। जिसमें मैंने 299 अंक प्राप्त कर प्रतियोगिता के तृतीय श्रेणी में जगह बनायी। वहीं खूंटी डीएफओ ने मेडल देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की। बताया कि इस प्रतियोगिता में झारखंड के विभिन्न जिलों से सैकड़ो महिला-पुरुष प्रतिभागियों ने भाग लिया, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात हैं।

हुसैनाबाद थाने में जन शिकायत और समाधान केंद्र का आयोजन

मिली 20 शिकायतें, सात का त्वरित निष्पादन

- एसडीएम, एसडीपीओ सहित कई वरिष्ठ अधिकारियों ने सुनी जनता की समस्या

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। राज्य सरकार के पुलिस महानिदेशक एवं पलामू एसपी के निर्देश पर बुधवार को हुसैनाबाद थाना परिसर में जन शिकायत और समाधान जागरूकता अभियान के तहत अनुमंडल स्तर पर शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें हुसैनाबाद एसडीएम गौरांग महतो, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सह आइपीएस एस मोहम्मद याकूब, हैदरनगर थाना प्रभारी सह प्रशिक्षु आइपीएस दिव्यांश शुक्ला सहित कई अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने जनता की समस्याओं को सुना। इस दौरान कुल 20 शिकायतकर्ताओं ने अपनी-अपनी समस्याओं को लिखित रूप में

लोगों की शिकायतें सुनते पुलिस के अधिकारी।

दिया। जिसमें ज्यादातर मामला जमीन से संबंधित आए। जिसपर प्रशासनिक अधिकारियों ने अग्रेतर कार्रवाई करने के लिए सूचीबद्ध कर लिया। वहीं कुल सात मामलों का त्वरित कार्रवाई करते हुए उसे मौके पर ही निष्पादित कर दिया। इस अवसर पर एसडीएम ने कहा कि राज्य में ज्यादातर मामले जमीन विवाद के आ रही हैं जिसके निवारण के लिए सरकार की ओर से ऐसे कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, ताकि गरीब पीड़ित जनता सीधे उच्चधिकारियो से संवाद कर सकें और उसका निष्पादन किया जा सके। इस मौके पर मोहम्मदगंज एवं हैदरनगर के सीओ, हुसैनाबाद पुलिस निरीक्षक सुरेश मंडल, थाना प्रभारी सोनू कुमार चौधरी, हैदरनगर थाना के अफजल अंसारी, अंचल राजस्व निरीक्षक संतोष कुमार, राजस्व कर्मचारी आशीष रंजन, प्रशांत कुमार आदि मौजूद थे।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम आयोजित, कई मामलों का निष्पादन

आजाद सिपाही संवाददाता

मनातू/पलामू। जिले के तरहसी थाना परिसर सहित सभी अनुमंडल क्षेत्रों में एक साथ जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन बड़े पैमाने पर किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य जनता की शिकायतों का त्वरित एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना है, ताकि समस्याओं का समय पर निपटारा हो सके और प्रशासन एवं आमजन के बीच विश्वास की मजबूत कड़ी बन सके। इसके तहत लोगों को अपने नजदीकी शिकायत केंद्रों पर पहुंचकर समस्याएं दर्ज कराने का अवसर दिया गया। जहां संबंधित अधिकारियों द्वारा शिकायतों को गंभीरता से सुनने के बाद तुरंत कार्रवाई की जा रही है। इस पहल को आधुनिक तकनीक से भी जोड़ा गया है, ताकि देश या विदेश में रह रहे लोग भी अपनी शिकायत ऑनलाइन माध्यम से दर्ज करा सकें। पलामू पुलिस ने इस कार्य के लिए एक विशेष सेल का गठन किया है, जो व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर और फेसबुक के माध्यम से प्राप्त शिकायतों की निगरानी और त्वरित निष्पादन सुनिश्चित करेगी। इन माध्यमों से प्राप्त शिकायतों की जांच उच्च पदस्थ अधिकारियों द्वारा की जाएगी और कार्रवाई की पूरी जानकारी शिकायतकर्ता को दी जाएगी। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के लोगों की लिखित और मौखिक शिकायतों का निष्पादन संबंधित प्रखंड कार्यालय, थाना और विभागीय शाखाओं के अधिकारियों के सहयोग से किया गया। मौके पर अधिकारियों ने जनता की समस्याएं गंभीरता से सुनीं और कई मामलों में वहीं पर त्वरित समाधान भी किया गया। इस जन उपयोगी कार्यक्रम में पलामू अभियान एसपी राकेश कुमार के नेतृत्व में कई वरिष्ठ पुलिस पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पाटन अंचल के पुलिस निरीक्षक अनिल कुमार सिंह, पांकी अंचल की पुलिस निरीक्षक पूनम टोप्पो, पांकी थाना प्रभारी राजेश कुमार, लेस्लीगंज थाना प्रभारी राजू गुप्ता, पिपराटांड से पुलिस अवर निरीक्षक रामेश्वर बारी, मनातू थाना प्रभारी निर्मल उरांव और तरहसी थाना प्रभारी नीरज कुमार शामिल रहे। इस कार्यक्रम से लोगों में प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विश्वास और जागरूकता दोनों में वृद्धि देखने को मिला। स्थानीय लोगों ने इस पहल की सराहना करते हुए उम्मीद जताई कि भविष्य में भी इस तरह की योजनाएं नियमित रूप से चलाई जाएंगी, जिससे आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान मिलता रहेगा।

घाघरा पुलिस ने वाहन जांच अभियान चलाया

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। गुमला एसपी के निर्देशानुसार घाघरा पुलिस ने नवडीहा पुल के समीप एंटी क्राइम वाहन जांच अभियान चलाया। इस दौरान आने-जाने वाले वाहनों की सघन जांच की गयी। इसके साथ ही दो दर्जन से ऊपर बाइक चालकों को रोक हेलमेट, ड्राइविंग लाइसेंस वाहन से संबंधित कागजात और गाड़ी की डिक्की खुलवाकर जांच की गयी। इसके साथ ही बिना हेलमेट वाले चालकों को चेतावनी देते हुए छोड़ा गया। वहीं पुलिस ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य क्षेत्र में बढ़ते अपराध पर लगाम लगाना और सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना है। वाहन संबंधित कागजात की जांच की गयी है। इसके साथ ही पुलिस ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि लोग पुलिस से बचने के लिए हेलमेट का उपयोग न करें। बल्कि अपने जीवन को बचाने के लिए हेलमेट का उपयोग करें। नाबालिक बच्चों को बाइक ना दें। अन्यथा पकड़े जाने पर उनके गार्जियन के ऊपर कार्रवाई होगी। मौके पर पुलिस के कई जवान उपस्थित थे।

भाजपा सरकार लोकतंत्र का गला घोंट रही है : चैतू उरांव

नेशनल हेराल्ड मामले में इडी की कार्रवाई से कांग्रेसियों में रोष

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। इडी द्वारा सोनिया गांधी और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का नाम चार्जशीट में दाखिल करने के खिलाफ बुधवार को गुमला समाहरणालय परिसर में एकदिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया। यह विरोध प्रदर्शन झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के निर्देश पर गुमला जिला कांग्रेस कमिटी अध्यक्ष चैतू उरांव के नेतृत्व में आहूत हुई। मौके पर जिला श्री उरांव ने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मोदी सरकार के हालिया क्रूर कदम की स्पष्ट रूप से निंदा करती है। नेशनल हेराल्ड की संपत्ति को मनमाने और अन्यायपूर्ण तरीके से जब्त करना और पार्टी नेतृत्व के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल करना। यह कानूनी प्रक्रिया का मामला नहीं है, यह कानून के शासन का मुखौटा पहने हुए एक राज्य प्रायोजित अपराध है। हाल ही में सोनिया गांधी, राहुल गांधी और हमारी पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल करना राज्य की शक्ति का एक भयावह दुरुपयोग दर्शाता है। यह लोकतांत्रिक विपक्ष के विचार पर सीधा हमला है, सत्तारूढ़ शासन द्वारा राजनीतिक धमकी का एक भद्दा प्रयास है जो पूरी तरह से पागल हो चुका है। यह बदले की राजनीति के अलावा और कुछ नहीं है। हमने पहले भी भारत की आत्मा के लिए लड़ाई लड़ी है और हम फिर से ऐसा करेंगे। सत्य, न्याय और संवैधानिक लोकतंत्र के मूल्य हमारे लिए अविभाज्य है। सत्यमेव जयते सिर्फ एक नारा नहीं है, यह एक दृढ़ विश्वास है। युवा कांग्रेस अध्यक्ष आजाद अंसारी ने कहा कि जिस परिवार ने इस देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित किया, अपने परिवार को शहिद होते हुए देखा उनको राजनीतिक प्रतिद्वंदता के चलते दबाने का प्रयास कर रही है, लेकिन राहुल गांधी इससे डरने वाले नहीं हैं एससी जिला अध्यक्ष भुनेश्वर राम ने कहा मोदी सरकार राहुल गांधी की लोकप्रियता से डर गयी है ओबीसी अध्यक्ष बिंदेश्वर साहू ने कहा मोदी सरकार बेरोजगारी से ध्यान भटकाने के लिए राहुल गांधी पर कार्रवाई कर रही है। आफताब आलम लाडले ने कहा कि मोदी सरकार राहुल गांधी को जितना छेड़ेगी उतना ही मजबूती से उभर कर सामने आयेंगे। मौके पर फीरोज आलम, रामनिवास प्रसाद, संतोष गुप्ता, आलोक साहू संजय गोप, सुनीता तिर्की, बैंबूल अंसारी, लालमोहन साहू, इबरार अंसारी, क्रिस्टीना तिर्की, तरुण गोप, राजकमल उरांव, विमल चंद उरांव, सबिता देवी, सनियारो देवी, जयत्री देवी, मंगरी देवी सहित कई कांग्रेस के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

तालाब में डूबने से बच्ची की मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। सदर थाना क्षेत्र के पतिया गांव में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र का एक बड़ी लापरवाही उभर कर सामने आयी है। किसी प्रकार का कोई छुट्टी नहीं रहने के बावजूद आंगनबाड़ी केंद्र बंद रहने के कारण वहां पढ़ने गयी एक ढाई साल की मासूम बच्ची आयुषी कुमारी की तालाब में डूबने से मौत हो गयी है। आयुषी की मौत के बाद उसके परिवार में कोहराम मच गया है। माता-पिता ने घटना के लिए आंगनबाड़ी केंद्र की संयोजिका शारदा जायसवाल को जिम्मेवार ठहराते हुए उपायुक्त से कार्रवाई की मांग की है। मां ने कहा कि अगर आंगनबाड़ी केंद्र खुला होता तो उसकी बेटी की जान नहीं जाती। वह हर दिन आंगनबाड़ी केंद्र जाती थी और फिर छुट्टी के बाद घर लौट आती थी। केंद्र जाने के समय वह खुद उसे आधे रास्ते तक छोड़ कर आती थी। मगर बेटी की मौत के बाद संयोजिका शारदा जायसवाल गांव आकर बेटी के आंगनबाड़ी केंद्र में नामांकित नहीं होने की बात कहकर जाना और भी दुर्भाग्यपूर्ण है। जब बेटी हर दिन केंद्र जाती थी तो उसके नामंकन नहीं करने पर भी संयोजिका खुद जिम्मेवार है। पूरे घटना को लेकर पिता फिरू महतो ने बताया कि वे काफी गरीब है और प्लास्टर पुट्टी का काम कर परिवार का परवरिश करते है। फिलहाल वे पालकोट प्रखण्ड में कर रहे थे और आज ही घर लौट रहे थे। तभी रास्ते मे उन्हें बेटी की मौत हो जाने की जानकारी मिली। उन्होंने कहा कि बेटी हर दिन आंगनबाड़ी केंद्र पढ़ने जाती थी। बुधवार को भी बेटी पढ़ाई के लिए केंद्र जाने के लिये निकली थी। उसकी मां उसे आधे रास्ते तक छोड़ कर आयी थी। मगर आंगनबाड़ी केंद्र बंद रहने के कारण वह अन्य बच्चो के साथ खेलते हुए पतिया तालाब की ओर चली गयी। फिर खेलने के क्रम में तालाब में डूबने से उसकी मौत हो गयी।

सेरका से हाडुप तक सड़क नहीं बनने से ग्रामीणों में रोष, आंदोलन की दी चेतावनी

आजाद सिपाही संवाददाता

बिशुनपुर। प्रखंड के सेरका पंचायत के पूर्वी पठार में सड़क नहीं बनने का एक जटिल समस्या है। जिसके निर्माण को लेकर ग्रामीण लगातार आंदोलन रत है। इधर प्रशासन से लेकर जनप्रतिनिधि तक के आश्वासन देने के बावजूद अब तक सड़क का निर्माण नहीं हो सका। जिस कारण ग्रामीण काफी आक्रोशित हैं और एक बार पुनः सड़क पर उतरकर आंदोलन करने का मन बना लिए हैं।

इस संबंध में बुधवार को हाडूप गांव में सैकड़ों ग्रामीणों की बैठक आयोजित की गयी। जहां पर लोगों को संबोधित करते हुए बुद्धेश्वर बिरजिया के कहा कि सेरका पंचायत के 80% लोग आज भी सड़क जैसी महत्वपूर्ण बुनियादी सुविधा से वंचित है। जिसको लेकर लगातार हम लोग आंदोलन करते आ रहे हैं। इसी बीच लोकसभा चुनाव का जोरदार बहिष्कार किया गया, परंतु अंचल अधिकारी शेखर वर्मा एवं गुमला उपायुक्त के द्वारा चुनाव के तुरंत बाद सड़क निर्माण कराये जाने का आश्वासन दिया गया। जिस कारण ग्रामीणों ने वोट बहिष्कार करने का निर्णय वापस लिया परंतु अब तक सेरका से हाडूप तक का सड़क निर्माण नहीं हो सका है ना ही टेंडर की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है। बैठक के बाद सभी लोग प्रखंड कार्यालय पहुंचे जहां पर उन्होंने प्रखंड विकास पदाधिकारी सुलेमान मुंडरी एवं अंचल अधिकारी शेखर वर्मा से मिलकर सेरका से हडुप तक बनाए जाने वाले सड़क निर्माण की जानकारी मांगी परंतु सही संतुष्टि भरा जवाब नहीं मिलने के कारण ग्रामीण सड़क पर उतरकर आंदोलन करने का मन बना रहे हैं। ग्रामीण द्वारा बताया गया कि इस बार सड़क पर उतरकर जोरदार आंदोलन किया जायेगा। जिसमें सेरका पंचायत के आदिम जनजाति एवं आदिवासी समुदाय के लोग शामिल होंगे। जो अपने बाल बच्चों के साथ सड़क में ही खाना, पीना एवं तंबू लगाकर रहने का काम करेंगे और सड़क मार्ग को अवरोध कर आंदोलन करेंगे।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम से जनता का बढ़ रहा है विश्वासः आइजी

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। गुमला के नगर भवन में आयोजित चतुर्थ जन शिकायत समाधान कार्यक्रम में बुधवार को कुल 48 मामले आये। पुलिस महानिरीक्षक (मानवाधिकार) पटेल मयूर कन्हैया लाल ने शिकायतों की सुनवाई की और मामलों के त्वरित निष्पादन के लिए संबंधित थाना प्रभारी को अग्रसारित कर एसपी को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। कहा कि जन शिकायत समाधान कार्यक्रम से पुलिस के प्रति जनता का विश्वास बढ़ रहा है। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने जन समस्या के त्वरित निष्पादन के लिए कार्यक्रम को जनता के लिए हितकारी बताया। इस अवसर पर पद्मश्री छुटनी देवी, समाजसेवी चिंता मुनी उरांव ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए अंधविश्वास और नशापान के खिलाफ छेड़े गये जन जागरण अभियान में पुलिस को सहयोग करने की बात कही। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव रामलाल गुप्ता ने कहा कि जन समस्या समाधान कार्यक्रम के माध्यम से अब तक 414 समस्याओं का समाधान हुआ है। कार्यक्रम में शिकायतों की संख्या शून्य हो जाए तो कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध होगी। एसपी शंभु कुमार सिंह ने अतिथियों ओर प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अब तक के उपलब्धियों की चर्चा की। कहा इससे पहले तीन बार के कार्यक्रम में 414 आवेदन प्राप्त हुए जिनमें से 316 मामलों का निष्पादन किया जा चुका है। शेष शिकायतें जमीन और कोर्ट से संबंधित है। उन्होंने गुमशुदा बच्चों एवं महिला सुरक्षा कानून, पीडितों को मुआवजा, आन लाइन एफआइआर, डायल 112 और 1930, एससी, एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम आदि की जानकारी दी और निःसंकोच नजदीकी थाना में अपनी समस्या रखने की बात कही। सिसई थाना रोड निवासी अरुणा कुमारी ने भाई बंटवारे को लेकर देवर द्वारा प्रताड़ित करने, घर से निकालने आदि की समस्या रखी। कार्यक्रम में एसडीपीओ थाना प्रभारी आदि उपस्थित थे।

आर्मी जवान की सड़क दुर्घटना में मौत

गुमला (आजाद सिपाही)। जम्मू कश्मीर राज्य के उधमपुर में तैनात आर्मी जवान 26 वर्षीय आर्मी जवान संतोष उरांव का सड़क दुर्घटना में मौत हो गयी। संतोष की मौत के बाद उसके परिवार में कोहराम मच गया। आदिवासी समुदाय का सदस्य संतोष घर का अकेला कमाने वाला सदस्य था। उसके अविवाहित अवस्था में हुई मौत ने परिवार को झकझोर कर रख दिया। मृतक जवान संतोष घाघरा थाना क्षेत्र के कोही पाठ गांव का रहने वाला था। हाल के वर्षो में वह आर्मी ज्वाइन किया था। साथ ही वर्ष 2021 से वह उधमपुर के 152 ए डी रेजिमेंट में तैनात था। यह दुर्घटना सदर थाना क्षेत्र के टोटो पेट्रोल पंप के पास मंगलवार को देर रात हुई है। इस दुर्घटना में उसके दो दोस्त बबलू उरांव और संतोष उरांव गंभीर रूप से घायल हो गये हैं। दोनों घायलों को सदर अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए रांची रिम्स रेफर कर दिया गया है। परिजनों के मुताबिक दोनो का रिम्स में इलाज जारी है और उनकी स्थिति काफी गंभीर बनी हुई है।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, एन0आर0ई0पी0, लातेहार

शुद्धि-पत्र

इस कार्यालय के द्वारा प्रकाशित ई–निविदा संख्या 01/2025-26/EE/NREP/LATEHAR एवं PR 349997 Rural Development (25-26).D में प्रकाशित निविदा में निम्न संशोधन किये जाते हैं।

1. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय –22.04.2025 अपराह्न 5:00 बजे तक

शेष सभी शर्ते पूर्ववत रहेगी।

कार्यपालक अभियंता,
एन0आर0ई0पी0, लातेहार

PR 350450 NREP(25-26)#D

लायंस क्लब ने नेत्र जांच और लेंस प्रत्यारोपण शिविर लगाया

गुमला (आजाद सिपाही)। लायंस क्लब ऑफ गुमला के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय नेत्र चिकित्सा एवं लेंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कुल 22 लोगों ने अपना पंजीकरण कराया था, जिनमें से 10 लोगों की आंखों में मोतियाबिंद के लक्षण पाये गये। सभी 10 मरीजों का कल सफल ऑपरेशन कर लेंस प्रत्यारोपण किया गया। सभी मरीजों को आवश्यक दवाइयां एवं चश्मा प्रदान कर उन्हें छुट्टी दे दी गयी। साथ ही सभी को आगामी 22 अप्रैल, मंगलवार को फॉलो-अप के लिए पुनः बुलाया गया है। इस शिविर में रांची के सुप्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डॉ नवल, सहायक नेत्र चिकित्सा पदाधिकारी सदानंद महतो, आशीष कुमार, संदीप कुमार एवं मंगल जी द्वारा जांच एवं ऑपरेशन की प्रक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न की गई। इस अवसर पर लायंस क्लब के अध्यक्ष लायन राजकुमार अग्रवाल, सचिव ला. अशोक कुमार जायसवाल, कोषाध्यक्ष अनिल अग्रवाल, पीआरओ योगेंद्र प्रसाद साहू, एमजेएफ डॉ. लायन शंकर लाल जाजोदिया, पदम कुमार साबू, शशि किरण जयसवाल सहित कई गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

अनियंत्रित होकर टेंपो पलटा, चालक घायल

कामडारा (आजाद सिपाही)। कामडारा थाना क्षेत्र के सुरहु मोड़ के समीप टेंपो पलटने से चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार बुधवार को शाम 6:30 बजे के आसपास सुरहु बड़काटोली निवासी डेविड तोपनों उम्र 22 वर्ष कामडारा से अपने घर जा रहा था। इसी बीच सुरहु मोड़ के समीप टेंपो असंतुलित होकर पलट गयी जिससे चालक डेविड तोपनों के सर पर गंभीर चोट लगी है। घटना की सुचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंच कर घायल युवक को इलाज के लिए कामडारा सी एच सी में भर्ती कराया। वही इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए रांची रेफर रेफर कर दिया गया है।

छत्तीसगढ़ से तीन वारंटी गिरफ्तार

गुमला (आजाद सिपाही)। डुमरी थाना कांड संख्या 38/2013, एसटी नं 191/2016 से संबंधित तीन स्थायी वारंटी अभियुक्तों को विधिवत गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार अभियुक्तों के नाम लक्ष्मणदेव यादव उम्र 53 वर्ष, सुखसागर यादव उम्र 47 वर्ष तथा मुनेश्वर यादव उम्र 40 वर्ष है। सभी अभियुक्त मीरचाइपाट गांव, थाना डुमरी के हैं। जबकि वर्तमान में मनोरा, थाना पुलिस चौकी मनोरा, जिला - जसपुर, छत्तीसगढ़ में रह रहे हैं। तीनों अभियुक्तों को मनोरा, जसपुर (छत्तीसगढ़) से गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। यह कार्रवाई कानून एवं व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

विवाह प्रमाण पत्र के लिए ऑनलाइन आवेदन शुरू

मिशन बदलाव की मांग पर उपायुक्त ने लिया त्वरित संज्ञान

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। गुमला जिले में आम लोगों को अब विवाह पंजीकरण के लिए कोर्ट-कचहरी के चक्कर नहीं लगाने होंगे। मिशन बदलाव टीम की पहल पर उपायुक्त गुमला ने शादीशुदा प्रमाण पत्र के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश संबंधित विभागों को दे दिया है। मिशन बदलाव टीम की ओर से जिला सचिव सैय्यदा खातून और नगर अध्यक्ष ज्योति वर्मा के नेतृत्व में उपायुक्त को एक मांग पत्र सौंपा गया था, जिसमें बताया गया कि जिले के प्रखंड एवं नगर क्षेत्रों में विवाह प्रमाण पत्र बनवाने के लिए आम जनता को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से बिचौलियों और दलालों की वजह से लोगों को मानसिक और आर्थिक कष्ट झेलना पड़ता है। इस पर उपायुक्त गुमला ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तुरंत नगर परिषद पदाधिकारी को कॉल कर ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया बहाल करने और जनता की सुविधा के लिए काउंटर शुरू करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने यह भी निर्देश दिया कि सभी प्रज्ञा केंद्रों में पति-पत्नी का आधार कार्ड, एक पासपोर्ट साइज संयुक्त फोटो, दो से तीन गवाहों के आधार कार्ड की जेरॉक्स प्रति दस्तावेज के साथ ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

मिशन बदलाव टीम ने उपायुक्त महोदय का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस निर्णय से गरीब एवं आम जनता को काफी राहत मिलेगी और वे आसानी से सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। उपायुक्त से मिलने वालों में ज्योति ग्लोरिया कुजूर, जानकी तिर्की, मीना देवी, मुनीता तिर्की सहित मिशन बदलाव के कई सक्रिय सदस्य उपस्थित थे।

Government of Jharkhand
Directorate of Tourism
MDI Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi-4
Ph.-0651-2400493, Fax-0651-2400492, E-mail:dirjharkhandtourism@gmail.com

Ref. No. Tou/ Dir/Yoj/24/2024 - 496 **Dated:- 16/04/2025/**

Notice Inviting Stakeholders Consultation for Discussion on Revenue Model & Package Pricing for ECO Retreat Netarhat

The Department of Tourism, Jharkhand, is planning to organize the **ECO Retreat Netarhat 2025** (November 15, 2024 – January 15, 2025), a two-month-long tent city festival, on a **Revenue Sharing Model or H1 Bidder Model**.

To ensure an effective and sustainable financial model, we invite key stakeholders to a consultative meeting to **deliberate and finalize the revenue-sharing structure and package pricing strategy** for this initiative. Your insights and expertise will be invaluable in shaping a successful partnership framework.

Meeting Details: ■ Date: **21.04.2025** ■ Time: **12:00PM** ■ Venue: **Office of Director, Tourism, Government of Jharkhand, Second Floor School Education Building, MDI Building, Dhurwa, Ranchi 834004**

Online Meeting Link can be downloaded from dept. website www.tourism.jharkhand.gov.in/

Interested Opertors/ Bidders may download the brief document from **16/04/2025, 17:00 Hours** onwards from the Department of Tourism website:–www.tourism.jharkhand.gov.in/ and submit their confirmation for joining the discussion.

All subsequent notifications, changes and amendments will be posted only on the website www.tourism.jharkhand.gov.in

DoT reserves the right to cancel this invitation with or without amendments to this invitation, without liability or any obligation for such invitation and without assigning any reason.

Director, Tourism.

PR.NO.350529 Tourism, Art Culture Sports And Youth Affairs (25-26):D

स्पोर्ट्स

एलिट 11 ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 10 ओवर में 5 विकेट पर 133 रन बनाये। जिसमें जावेद अली ने 33 गेंदों में 74 रन की धमाकेदार पारी खेली।

एलिट 11 ने गेट-टूगेदर क्रिकेट प्रतियोगिता का खिताब जीता

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। शहीद तेलंगा खड़िया स्टेडियम गुमला में आइपीएल की तर्ज पर आयोजित गेट टू गेदर क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में एलिट 11 ने फ्लाइंग फाल्कन को 67 रनों से हराकर शानदार जीत दर्ज की और खिताब अपने नाम किया। एलिट 11 ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 10 ओवर में 5 विकेट पर 133 रन बनाए। जिसमें जावेद अली ने 33 गेंदों में 74 रन की धमाकेदार पारी खेली। जबकि फ्लाइंग फाल्कन की ओर से तंजीम और कमल कुमार ने 2-2 विकेट चटकाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए फ्लाइंग फाल्कन की टीम 9.3 ओवर में 66 रन पर सिमट गई। जिसमें मनोहर उरांव ने 17 और अहमद राजा ने 12 रन बनाए। एलिट 11 की ओर से आयुष राज ने 4 विकेट, जबकि सैयद इमाम ने 3 विकेट झटके। विजेता और उपविजेता टीम को विशाल ट्रॉफी और नकद पुरस्कार दिये गये।

Govt. of Jharkhand
Directorate of Sports & Youth Affairs
(Department of Tourism, Art Culture, Sports & Youth Affairs)
Gate No. 28, Birsa Munda Football Stadium, Morabadi, Ranchi - 834008
E-mail Id - directorsportsjharkhand@gmail.com

Corrigendum – 1

(NIT No. 11/2025-26 Dated 11.04.2025)

Sub: Corrigendum No.1 to the referred NIT No. 11/2025-26 dated 11th April 2025 (PR No. 350219 Dated 11.04.2025) against the RFP of Hiring of Event Management Agency for SAAF Senior National Championship 2025.

The following changes are incorporated to the RFP:

S.N.	RFP Clause Reference	Clause as per RFP	To be read as
1.	Section-III, Sl. No. 2	Evaluation Criteria	Attached as Annexure 'A'
2.	Section VI (b) 1.03 Transportation	Hiring Charge Per Day	Hiring Charge for 12 hour per Day
3.	Section VI (c) BOQ for Event/venue operation (Workforce)	As per RFP	Attached as Annexure 'B'
4.	Section VI (I) BOQ for Overlays, Sl. No. 3	Panel Cabins, quantity - 5	Porta cabins, quantity - 4
5.	Section VI (I) BOQ for Overlays, Sl. No. 4, Double Storey structure	Quantity – 2	Quantity - 1
6.	Section VI (I) BOQ for Overlays, Sl. No. 13, Metal Chair with cushion	Chair with Leatherette Upholstery with Back support and side arms.	Chair with Leatherette Upholstery with Back support
7.	Section VI (m), Sl. No. 1.01 Printing of Coffee Table Books/Picture Books	Quantity -100	Quantity – 30
8.	Section VI (n)	Newly Inserted	Attached as Annexure 'C'
9.	Section IX	Newly Inserted	Attached as Annexure 'D'

Note:

1. Comprehensive information regarding the corrigendum is available on website – **sports.jharkhand.gov.in**
2. Tender Fee: There will be No price/fee shall be charged for the bidding document.
3. Successful bidders are required to submit GST Certificate of Jharkhand within 7 days of the award of contract. Payment for any bills submitted by the bidder will be processed only if the GST number mentioned in the bill is registered for the state of Jharkhand.
4. All other terms and conditions mentioned in tender document will remain unchanged.

Sd/-
Director
Directorate of Sports & Youth Affairs
Jharkhand, Ranchi

PR 350526 (Art Culture Sports and Youth Affairs) 25-26 (D)

जैनामोड़ में हुआ पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा का भव्य स्वागत

आजाद सिपाही संवाददाता

जैनामोड़/बेरमो। रांची से गिरिडीह जाने के क्रम में राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं निवर्तमान केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा बुधवार को जैनामोड़ में कुछ देर के लिए रूप से था। जहां फोर लाइन चौक पर उनका कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया। अर्जुन मुंडा ने बताया कि कुछ दिन पहले बीएसएल प्रबंधन की ओर से बोकारो विस्थापित युवाओं द्वारा किए जा रहे हैं आंदोलन में लाठी चार्ज के दौरान प्रेम कुमार महतो का निधन हो गया था। आज उनके आवास पर जाकर दुख एवं संवेदना व्यक्त करने के बाद गिरिडीह के लिए निकले थे। इस मौके पर बोकारो के पूर्व विधायक बिरंची नारायण, भाजपा के बोकारो जिला पूर्व अध्यक्ष रोहित लाल सिंह, भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश महामंत्री अर्जुन सिंह, प्रखंड अध्यक्ष मनोज ठाकुर, शंकर रजक, सुभाष महतो, अनिल स्वर्णकार, संजय सिंह, जय नारायण मरांडी, बालेश्वर मुर्मू, रघुनाथ टुडू, सुनील मंडल, विक्रम गोस्वामी, बैद्यनाथ नायक, सुमित जायसवाल, अनीता गुप्ता, राकेश मधु, महेंद्र महतो आदि मौजूद थे।

तेज रफ्तार हाइवा के धक्के से स्कूटी सवार गंभीर रूप से घायल

आक्रोशित लोगों ने झरिया-धनबाद मुख्य मार्ग जाम कर किया हंगामा

आजाद सिपाही संवाददाता

धनसार। झरिया-धनबाद मुख्य मार्ग पर दुःखहरनी मंदिर के समीप बुधवार को तेज रफ्तार हाईवा ने स्कूटी को अपनी चपेट में ले लिया। जिससे स्कूटी सवार झरिया के चार नंबर निवासी विनोद केसरी उर्फ पप्पू (40) गंभीर रूप से घायल हो गये। उधर, घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने करीब दो घंटे तक झरिया-धनबाद मुख्य मार्ग को जगह-जगह जाम कर दिया। लोगों का कहना था कि आए दिन कोयला ट्रांसपोर्टिंग हाईवा की चपेट में आकर लोगों की जान जा रही है। दर्जनों लोग गंभीर रूप से घायल हो चुके हैं। इसके बाद भी जिला प्रशासन एवं जनप्रतिनिधि मुख्य मार्ग पर कोयला परिवहन पर रोक लगाने में असमर्थ है। कोयला ट्रांसपोर्टिंग कंपनी की मिली भगत से ओवरलोड गाड़ियां तेज रफ्तार से राजापुर परियोजना होते हुए दुःखहरणी मंदिर मार्ग से रेलवे साइडिंग पर चलती है। कई बार स्थानीय लोगों के आक्रोश को देखते हुए वैकल्पिक मार्ग से कोयला ट्रांसपोर्टिंग करने का आश्वासन बीसीसीएल प्रबंधन द्वारा दिया जा चुका है। बावजूद इसके कुछ दिन के अंतराल में दोबारा मुख्य मार्ग से कोयला ट्रांसपोर्टिंग शुरू कर दिया जा रहा है। जिससे आए दिन दुर्घटना घटती रहती है। उधर, लोगों के आक्रोश को देखते हुए मौके पर पहुंची झरिया पुलिस ने सकारात्मक पहल का आश्वासन देकर लोगों को शांत कराया और सड़क जाम हटवाया। वहीं घायल विनोद केसरी के इलाज की व्यवस्था करने की बात कही। बतातें चलें कि व्यवसायी विनोद केसरी की धनबाद के रांगाटांड़ में कॉस्मेटिक की दुकान है। विनोद केसरी अपनी दुकान खोलने रांगाटांड़ जा रहे थे। तभी दुःखहरनी मंदिर के समीप तेज रफ्तार हाईवा ने टक्कर मार दिया। जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गये। स्थानीय लोगों की मदद से इलाज के लिए उन्हें एक निजी नर्सिंग होम भेजा गया। उधर, पुलिस ने हादसे के लिए जिम्मेदार हाइवा को जब्त कर लिया है।

सड़क जाम कर हंगामा करते अक्रोशित लोग।

राजनीति से प्रेरित होकर इडी कर रही है काम : ब्रजेंद्र सिंह

धनबाद (आजाद सिपाही)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और सोनिया गांधी के विरुद्ध नेशनल हेराल्ड केस में मंगलवार को आरोप पत्र दाखिल करने के प्रतिवाद में कांग्रेस की ओर से बुधवार को देशभर में विरोध प्रदर्शन किया गया। इसी कड़ी में एआइसीसी के सदस्य ब्रजेंद्र प्रसाद सिंह ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार ईडी को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रही है। जिस राज्य में विपक्षी पार्टियों की सरकार है या केंद्र की राजनीति में जो विपक्ष में है उनके विरुद्ध केंद्र सरकार ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग को धड़ल्ले से इस्तेमाल कर बेवजह परेशान कर रही है। अगर केंद्र सरकार के विरोध में किसी नीतिगत फैसले पर भी कोई विपक्षी पार्टी के लोग आवाज बुलंद करते हैं तो उनको इडी, सीबीआइ या आयकर विभाग की मदद से उनकी आवाज बंद करने का प्रयास किया जाता है जो लोकतंत्र के लिए खतरा है। ब्रजेंद्र सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार दादागिरी पर उतर आयी है। इसी के विरोध में प्रदर्शन किया जा रहा है, ताकि भविष्य में इस तरह की ईडी और सीबीआई द्वारा कोई कार्रवाई किसी पर ना हो सके।

कोई गैस रिसाव नहीं हुआ : गौतम मजी

सिंदरी (आजाद सिपाही)। हिंदूस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (हर्ल) सिंदरी में अमोनिया गैस रिसाव होने की सूचना पूरे सिंदरी में फैल गयी थी। ह्वाट्सएप सहित अन्य में खबरें भी छआई रही। इस खबर की पुष्टि के लिए हर्ल सिंदरी यूनिट प्रमुख गौतम मजी से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि कोई गैस रिसाव नहीं हुआ है। शटडाउन के कारण प्लांट मंगलवार से पूरी तरह बंद है। कोई लिकेज नहीं है। हो सकता है प्लांट मरम्मति के कारण पाइप में रह गया गैस हवा में आया होगा. जिसकी वजह से गैर रिसाव की आशंका हो रही है। प्लांट 15 दिन तक शटडाउन रहेगा। विभागीय स्तर से इसे देखा जा रहा है।

विनोद बिहारी महतो के पौत्र डब्ल्यू महतो का निधन, शोक

धनबाद (आजाद सिपाही)। झारखंड के पुरोधा बिनोद बिहारी महतो और पूर्व सांसद राजकिशोर महतो के पुत्र राजेश कुमार उर्फ डब्ल्यू महतो का बुधवार को धनबाद के हीरापुर स्थित बिनोद बिहारी महतो आवास में निधन हो गया। वे 53 वर्ष के थे। उनके पार्थिव शरीर तेलीपाड़ा मुक्ति धाम ले जाया गया। उधर, विनोद बिहारी महतो के पौत्र डब्ल्यू महतो के निधन से क्षेत्र में शोक की लहर है। वे पिछले छह महीने से बीमार चल रहे थे। उनका इलाज कोलकाता में चल रहा था। बीच-बीच में धनबाद अशर्फी अस्पताल में भी उनका इलाज होता था। उनको सांस लेने में तकलीफ थी। वहीं, निधन की खबर सुनकर उनके आवास चिरागोड़ा पर लोगों का तांता लग गया। वहीं, सिंदरी के भाजपा नेता सह पूर्व विधायक इंद्रजीत महतो की पत्नी तारा देवी भी शोक प्रकट करने चिरागोड़ा पहुंची थी। उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ उनके परिजनों से मुलाकात कर दुःख की घड़ी में ढांढस बंधाया।

मामूली विवाद में चाकू से हमला, हालत गंभीर

धनबाद (आजाद सिपाही)। भूली थाना अंतर्गत आजाद नगर के समीप बुधवार की सुबह पड़ोस के युवकों ने मामूली विवाद में एक व्यक्ति को चाकू मार दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे इलाज के लिए शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल लाया गया। जहां स्थिति गंभीर बतायी जा रही है। जानकारी के मुताबिक भूली के आजाद नगर निवासी हरेंद्र यादव को पुरानी रंजिश में पड़ोस के श्री यादव, बेटे उमेश यादव और दिनेश यादव ने कृष्ण मंदिर के समीप चाकू मार दिया। जिसके बाद स्थानीय लोगों की मदद से हरेंद्र को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया।

शरीयत को संविधान से ऊपर बताने वाले मंत्री के खिलाफ भाजपा का प्रदर्शन, पुतला फूंका

तोपचांची (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार में मंत्री हफीजुल हसन द्वारा शरियत को संविधान से उपर बताने को लेकर दिए विवादित बयान के विरोध में बुधवार को भाजपा तोपचांची मंडल की ओर से सुभाष चौक पर प्रदर्शन किया गया। इस दौरान मंत्री का पुतला फूंकते हुए सरकार से बर्खास्त करने की मांग की गई। अपने संबोधन में भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष विकास महतो ने कहा कि जब पूरा देश संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती मना रहा था, उसी समय राज्य के मंत्री हफीजुल हसन का यह कहना कि 'संविधान से ऊपर शरियत है, बेहद निंदनीय है। कहा कि यह बयान मंत्री की संकीर्ण सोच और संविधान के प्रति अपमानजनक दृष्टिकोण को दर्शाता है। विकास महतो ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से ऐसे मंत्री को तत्काल मंत्रिपरिषद से हटाने की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि कार्रवाई नहीं हुई, तो भाजपा पूरे राज्य में आंदोलन करेगी। इस मौके पर रामायण भगत, गिरिजा शंकर उपाध्याय, मंडल अध्यक्ष निवास तिवारी, पूर्व मंडल अध्यक्ष आशुतोष पाल, रणबीर चौबे, शिव पुजन उपाध्याय, सुरेश महतो, दिलीप दास, जय नारायण साव, लालू साव, राकेश दास, छोटन साव, दिनेश महतो, अमित गोस्वामी, मनोज रजक, अजय कुमार, अजित चौधरी, आकाश चौबे और अरविंद ठाकुर आदि उपस्थित थे।

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन

राजगंज/झरिया/जोड़ापोखर (आजाद सिपाही)। राजगंज थाना क्षेत्र के बीजीएम गार्डेन में बुधवार को बाघमारा पुलिस अनुमंडल का जन शिकायत समाधान कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसकी शुरूआत बाघमारा डीएसपी पुरुषोत्तम सिंह और इंस्पेक्टर मुकेश चौधरी ने किया। इसमें राजगंज, तोपचांची, कतरास, बरोरा, खरखरी, सोनारडीह, रामकनाली, तेतुलमारी, भाटडीह, महुदा और महिला थाना के प्रभारी-अधिकारी मौजूद रहे। कार्यक्रम में जमीन विवाद का मुद्दा छाया रहा। साथ ही मंइयां समान, वृद्धा पेंसन, नाली विवाद, छेड़छाड़, मारपीट आदि के मामले पहुंचे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से तोपचांची थाना क्षेत्र के लेदाटांड में मारपीट और हत्या का मामला छाया रहा। भुक्तभोगियों का आरोप था कि पुलिस नामजद को गिरफ्तार नहीं कर रही। जबकि पुलिस ने साक्ष्य दिखा कर बताया कि गिरफ्तारी की कोशिश की जा रही है। मगर उनलोगों ने अपना मोबाइल बंद कर दिया है। इसी कारण लोकेशन नहीं मिल पा रहा है। दूसरा मामला जमीन विवाद का उठा। जिसमें कतरास के तिलाटांड निवासी विनोद कुमार सिंह नामक व्यक्ति ने दीप नारायण सिंह, उनके पिता भरत रावत, भतीजा सूरज सिंह और समरेश सिंह पर जमीन के फर्जी कागजात बनाकर जमीन हड़पने और जबरन दखल करने का आरोप लगाया है। वहीं, डीएसपी ने बताया की कई तरह की शिकायतें आ रही है जिसमें पुलिस संबंधित और अन्य विभागों से संबंधित मामले लिए जा रहे हैं। पुलिस संबंधित शिकायतों का निराकरण जल्द से जल्द किया जा रहा है। साथ ही अन्य विभागों की शिकायतों को उन विभागों में भेजा जा रहा है। दूसरी ओर, धनबाद पुलिस की ओर से जोरापोखर थाना क्षेत्र के जामाडोबा टाटा कम्यूनिटी सेंटर में बुधवार को जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन सिंदरी के एसडीपीओ आशुतोष कुमार सत्यम ने किया। इस अवसर पर जोरापोखर के पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी राजेश प्रकाश सिन्हा, सिंदरी के संजय कुमार, झरिया इंस्पेक्टर शशिरंजन, पंकज भूषण, साइबर थाना प्रभारी उषा रानी सहित सिंदरी अनुमंडल के सभी थाना प्रभारी एवं अधिकारी उपस्थित थे। इस दौरान विभिन्न थाना क्षेत्रों के फरियादियों पत्र देकर ने अपनी-अपनी शिकायत दर्ज कराई। जिसमें झरिया में पांच, जोरापोखर के तीन, भौंरा के दो, सिंदरी से एक और बलियापुर थाना में एक फरियादी ने अपनी शिकाय दर्ज कराई है।

झारखण्ड सरकार, गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग

झारखण्ड आन्दोलनकारी चिन्हितीकरण आयोग

72वीं औपबंधिक सूची
जिला– राँची (पार्ट–4)

क्र0	आवेदनकर्त्ता की विवरणी	गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड, राँची के संकल्प संख्या–1938, दिनांक–20.04.2021 के आलोक में प्रदत्त कंडिका
	विवरण :–चिन्हित झारखण्ड आन्दोलनकारी मुमताज अहमद खान एवं सीतारानी जैन द्वारा माननीय सदस्य श्री नरसिंह मुर्मू के समक्ष दर्ज बयान तथा पहचान के आधार पर।	
140.	1. आवेदन क्र0–159/25 2. आवेदक–बेला बलवंती एक्का, पिता–स्व0 अलोईस एक्का 3. ग्राम–टंगरा टोली, पिस्का मोड़, पोस्ट–हेहल, थाना–सुखदेवनगर, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–54 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायें हाथ में घाव का निशान।	कंडिका–2(ix)
141.	1. आवेदन क्र0–160/25 2. आवेदक–रंजनी कन्डुलना, पिता–स्व0 मिखाएल कन्डुलना 3. ग्राम–ललित ग्राम, कॉलोनी, पोस्ट–रातु, थाना–रातु, प्रखण्ड–रातु 4. लिंग–महिला, आयु–52 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें हाथ के केहुनी पर तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
	विवरण :–चिन्हित झारखण्ड आन्दोलनकारी काशीनाथ महतो एवं उमेश कुमार महतो द्वारा माननीय सदस्य श्री भुवनेश्वर महतो के समक्ष दर्ज बयान तथा पहचान के आधार पर।	
142.	1. आवेदन क्र0–161/25 2. आवेदक–कामेश्वर महतो, पिता–साहेबराम महतो 3. ग्राम–लुपूंग, पोस्ट–अनगड़ा, थाना–अनगड़ा, प्रखण्ड–अनगड़ा, 4. लिंग–पुरूष, आयु–52 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायें हाथ में घाव का निशान।	कंडिका–2(ix)
	विवरण :– चिन्हित झारखण्ड आन्दोलनकारी लक्ष्मीनारायण महतो एवं रतन लाल महतो द्वारा आयोग के माननीय सदस्य श्री भुवनेश्वर महतो के समक्ष आवेदन पर दर्ज बयान एवं पहचान के आधार पर।	
143.	1. आवेदन क्र0–162/25 2. आवेदक–बलराम महतो, पिता–श्रीधर महतो 3. ग्राम–सताकी, पोस्ट–सताकी, थाना–अनगड़ा, प्रखण्ड–अनगड़ा, 4. लिंग–पुरूष, आयु–45 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
144.	1. आवेदन क्र0–163/25 2. आवेदक–हरिहर प्रसाद महतो, पिता–भीखु महतो 3. ग्राम–तुन्कु, पोस्ट–दावाडु, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–सिल्ली 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें आंख के पास कटा का निशान।	कंडिका–2(ix)
145.	1. आवेदन क्र0–164/25 2. आवेदक–सुशील कुमार अग्रवाल, पिता–स्व0 रतन लाल अग्रवाल 3. ग्राम–बरियातु रोड, पोस्ट–बरियातु, थाना–बरियातु, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–पुरूष, आयु–64 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें कोहनी में कटा का दाग।	कंडिका–2(ix)
146.	1. आवेदन क्र0–165/25 2. आवेदक–गुरूचरण साहु, पिता–कुलेश्वर साहु 3. ग्राम–बनसिया, पोस्ट–बनसिया, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–राहे 4. लिंग–पुरूष, आयु–59 वर्ष, पहचान चिन्ह–छाती पर तिल का दाग।	कंडिका–2(ix)
147.	1. आवेदन क्र0–166/25 2. आवेदक–मो0 खेजाबुद्दीन, पिता–मो0 मियाजान अंसारी 3. ग्राम–कुटाम, पोस्ट–छोटामुरी, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–सिल्ली 4. लिंग–पुरूष, आयु–51 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
148.	1. आवेदन क्र0–169/25 2. आवेदक–पशुपति महतो, पिता–आनन्द महतो 3. ग्राम–लाधुप, पोस्ट–बनसिया, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–राहे 4. लिंग–पुरूष, आयु–56 वर्ष, पहचान चिन्ह–बाये हाथ में जला हुआ दाग।	कंडिका–2(ix)
149.	1. आवेदन क्र0–170/25 2. आवेदक–गुही राम महतो, पिता–स्व0 बनु महतो 3. ग्राम–लोवादाग, पोस्ट–टी0वी0 रामपुर, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–सिल्ली 4. लिंग–पुरूष, आयु–70 वर्ष, पहचान चिन्ह–पैर में कटा दाग।	कंडिका–2(ix)
150.	1. आवेदन क्र0–171/25 2. आवेदक–चंचला भोगता, पति–दुर्योधन भोगता 3. ग्राम–पिपरदाग, पोस्ट–टी0वी0 रामपुर, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–सिल्ली 4. लिंग–महिला, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–बाये हाथ में गोदना।	कंडिका–2(ix)
151.	1. आवेदन क्र0–246/25 2. आवेदक–नवीन चन्द्र पाल, पिता–गिरधारी प्रजापति 3. ग्राम–डिमरा, पोस्ट–सोना डिमरा, थाना–बारलंगा, प्रखण्ड–गोला 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिना पैर में कटा दाग।	कंडिका–2(ix)
152.	1. आवेदन क्र0–172/25 2. आवेदक–हेमन्त कुमार महतो, पिता–रघुनाथ महतो 3. ग्राम–इतिहासा, पोस्ट–टुटकीनवाडीह, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–सिल्ली 4. लिंग–पुरूष, आयु–52 वर्ष, पहचान चिन्ह–पैर में कटा दाग।	कंडिका–2(ix)
153.	1. आवेदन क्र0–173/25 2. आवेदक–शिवचरण कुम्हार, पिता–स्व0 गोवर्धन कुम्हार 3. ग्राम–कोंचो, पोस्ट–दुरमीनवाडीह, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–सिल्ली 4. लिंग–पुरूष, आयु–53 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायें गाल पर तिल का दाग।	कंडिका–2(ix)
154.	1. आवेदन क्र0–174/25 2. आवेदक–ब्रजेश्वर प्रसाद, पिता–केदार प्रसाद 3. ग्राम–छोटामुरी, पोस्ट–छोटामुरी, थाना–सिल्ली, प्रखण्ड–सिल्ली 4. लिंग–पुरूष, आयु–50 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें हाथ पर तिल का दाग।	कंडिका–2(ix)
	विवरण :– चिन्हित झारखण्ड आन्दोलनकारी श्रीमती प्रतिभा पाण्डेय, संजीव सिन्हा एवं रमेश कुमार साहु द्वारा आयोग के माननीय सदस्य श्री भुवनेश्वर महतो के समक्ष आवेदन पर दर्ज बयान एवं पहचान के आधार पर।	
155.	1. आवेदन क्र0–175/25 2. आवेदक–प्रभा देवी, पति–देवराज विश्वकर्मा 3. ग्राम–रातू रोड, पोस्ट–हेहल, थाना–सुखदेवनगर, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–65 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
156.	1. आवेदन क्र0–176/25 2. आवेदक–जगरानी कुजूर, पति–लुयिस कुजूर 3. ग्राम–इन्द्रपुरी रोड नं0 01, रातू रोड, पोस्ट–हेहल, थाना–सुखदेवनगर, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–76 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें पैर में जले का निशान।	कंडिका–2(ix)
157.	1. आवेदन क्र0– 177/25 2. आवेदक–कबूतरी देवी, पति–किशुन लोहरा 3. ग्राम–न्यू कॉलोनी, पोस्ट–धुर्वा, थाना–जगरनाथनगर, प्रखण्ड–नामकोम 4. लिंग–महिला, आयु–74 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
158.	1. आवेदन क्र0– 178/25 2. आवेदक–शिवमूरत यादव, पिता–रामकृत यादव 3. ग्राम–न्यू कॉलोनी, पोस्ट–धुर्वा, थाना–जगरनाथनगर, प्रखण्ड–नामकोम 4. लिंग–पुरूष, आयु–63 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
159.	1. आवेदन क्र0– 179/25 2. आवेदक–चंदुवा उराईन, पति–बुधवा गाड़ी 3. ग्राम–न्यू कॉलोनी, जगरनाथपुर, पोस्ट–धुर्वा, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकोम 4. लिंग–महिला, आयु–49 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
160.	1. आवेदन क्र0– 180/25 2. आवेदक–जगू नायक, पिता–पंचम नायक 3. ग्राम–न्यू कॉलोनी, जगरनाथपुर, पोस्ट–धुर्वा, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकोम 4. लिंग–पुरूष, आयु–76 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
161.	1. आवेदन क्र0– 181/25 2. आवेदक–गायत्री देवी, पति–गणेश साहु 3. ग्राम–हरिओम नगर, धुर्वा, रांची, पोस्ट–धुर्वा, थाना–धुर्वा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–50 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
162.	1. आवेदन क्र0– 182/25 2. आवेदक–निर्मला उपाध्याय, पति–स्व0 सुरेन्द्र उपाध्याय 3. ग्राम–हरमू, पोस्ट–हरमू, थाना–अरगोड़ा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–73 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
163.	1. आवेदन क्र0– 183/25 2. आवेदक–किरण मिश्रा, पति–अरूण कुमार मिश्रा 3. ग्राम–डी0–55, अशोक नगर, हरमू, पोस्ट–हरमू, थाना–अरगोड़ा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–65 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
164.	1. आवेदन क्र0– 184/25 2. आवेदक–नवीन कुमार मिश्रा, पिता–स्व0 त्रिगुणा मिश्रा 3. ग्राम–डी0–55, अशोक नगर, हरमू, पोस्ट–हरमू, थाना–अरगोड़ा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–पुरूष, आयु–53 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायें अंगूठा के बगल में कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
165.	1. आवेदन क्र0– 185/25 2. आवेदक–सरोज पाण्डेय, पति–स्व0 बी0के0 पाण्डेय 3. ग्राम–बी0एच0–82, हरमू, पोस्ट–हरमू, थाना–अरगोड़ा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–79 वर्ष, पहचान चिन्ह–आंख के बायें कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
166.	1. आवेदन क्र0– 186/25 2. आवेदक–उर्मिला पंडित, पति–स्व0 राम अयोध्या पंडित 3. ग्राम–एच0–27, आदर्श नगर, पोस्ट–धुर्वा, थाना–धुर्वा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–62 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
167.	1. आवेदन क्र0– 187/25 2. आवेदक–विनीता सिंह, पति–स्व0 रामप्रताप सिंह 3. ग्राम–बी0–1606/2, एच0ई0सी0, धुर्वा, पोस्ट–धुर्वा, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकोम 4. लिंग–महिला, आयु–59 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
168.	1. आवेदन क्र0– 188/25 2. आवेदक–दीनानाथ सिन्हा, पिता–स्व0 शिवनाथ सिन्हा 3. ग्राम–बी0–1412/सेक्टर–2, धुर्वा, पोस्ट–धुर्वा, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकोम 4. लिंग–पुरूष, आयु–64 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायें गाल पर तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
169.	1. आवेदन क्र0– 189/25 2. आवेदक–अमित कुमार, पिता–स्व0 राजेश्वरी मोहन 3. ग्राम–सी0डी0–25/सेक्टर–2, धुर्वा, पोस्ट–धुर्वा, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकोम 4. लिंग–पुरूष, आयु–53 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
170.	1. आवेदन क्र0–190/25 2. आवेदक–ऐरन मिंज, पति–सिबानूस मिंज 3. ग्राम–मौसीबाड़ी, जगरनाथपुर, पोस्ट–धुर्वा, थाना–धुर्वा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–77 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
171.	1. आवेदन क्र0–191/25 2. आवेदक–फ्रांसिना पॉल, पति–स्व0 अल्बर्ट पॉल 3. ग्राम–रेलवे कॉलोनी, चुटिया, रांची, पोस्ट–चुटिया, थाना–चुटिया, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–69 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें हाथ में तिल।	कंडिका–2(ix)
172.	1. आवेदन क्र0– 192/25 2. आवेदक–नीता पाण्डेय, पति–स्व0 अशोक पाण्डेय 3. ग्राम–अरगोड़ा–105, पर्ल ओरकिड, पोस्ट–अरगोड़ा, थाना–अरगोड़ा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–66 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें गाल पर तिल।	कंडिका–2(ix)
173.	1. आवेदन क्र0– 193/25 2. आवेदक–बुधन देवी, पति–बेंजामिन सथिया दास 3. ग्राम–मौसीबाड़ी, जगरनाथपुर, पोस्ट–धुर्वा, थाना–धुर्वा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–69 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
174.	1. आवेदन क्र0– 194/25 2. आवेदक–शान्ति देवी, पति–उमाशंकर नायक 3. ग्राम–मौसीबाड़ी, जगरनाथपुर, पोस्ट–धुर्वा, थाना–धुर्वा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–59 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
175.	1. आवेदन क्र0– 195/25 2. आवेदक–बुलू नायक, पिता–स्व0 छेदी नायक 3. ग्राम–बर झोपड़ी, जगरनाथपुर, पोस्ट–धुर्वा, थाना–धुर्वा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–पुरूष, आयु–62 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
176.	1. आवेदन क्र0– 196/25 2. आवेदक–रीना देवी, पति–ललन यादव 3. ग्राम–टंकी साईड, धुर्वा, पोस्ट–धुर्वा, थाना–धुर्वा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–51 वर्ष, पहचान चिन्ह–नाक में दोनों तरफ मासा।	कंडिका–2(ix)
177.	1. आवेदन क्र0– 197/25 2. आवेदक–पानपति देवी, पति–उपेन्द्र सिंह 3. ग्राम–शर्मा रोड, धुर्वा, पोस्ट–धुर्वा, थाना–धुर्वा, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–60 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
178.	1. आवेदन क्र0– 198/25 2. आवेदक–मेरी तिर्की, पति–पीयुस तिर्की 3. ग्राम–सपारोम, पोस्ट–सपारोम, थाना–नगड़ी, प्रखण्ड–नगड़ी 4. लिंग–महिला, आयु–56 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
179.	1. आवेदन क्र0– 199/25 2. आवेदक–सीता देवी, पति–पज्जू लोहरा 3. ग्राम–नयासराय, पोस्ट–हेहल, थाना–नगड़ी, प्रखण्ड–नगड़ी 4. लिंग–महिला, आयु–60 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
180.	1. आवेदन क्र0– 200/25 2. आवेदक–आभा सिन्हा, पति–स्व0 निर्मल कुमार सिन्हा 3. ग्राम–श्री कॉम्पलेक्स, महावीर चौक, अपर बाजार पोस्ट–जी0पी0ओ0, थाना–कोतवाली, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–60 वर्ष, पहचान चिन्ह–भौं पर कटा का निशान।	कंडिका–2(ix)
181.	1. आवेदन क्र0– 201/25 2. आवेदक–वीणा वर्मा, पति–स्व0 ओंकार प्रसाद वर्मा 3. ग्राम–25 श्रद्धानन्द रोड, रांची, पोस्ट–जी0पी0ओ0, थाना–कोतवाली, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–महिला, आयु–78 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिने होंठ के उपर मासा।	कंडिका–2(ix)
182.	1. आवेदन क्र0– 202/25 2. आवेदक–रीता चौधरी, पति–कपिलदेव चौधरी 3. ग्राम–कांके, पोस्ट–कांके, थाना–कांके, प्रखण्ड–कांके 4. लिंग–महिला, आयु–60 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
183.	1. आवेदन क्र0– 341/25 2. आवेदक–संगीता जयसवाल, पति–स्व0 रामशरण जयसवाल 3. ग्राम–सिसई मदौली, पोस्ट–सिसई, थाना–सिसई, प्रखण्ड–सिसई 4. लिंग–महिला, आयु–64 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिने आंख पर तिल।	कंडिका–2(ix)
184.	1. आवेदन क्र0– 342/25 2. आवेदक–अमृता भगत, पति–स्व0 बन्धना भगत 3. ग्राम–लट्ठा टोली, पोस्ट–घटगांव, थाना–गुमला, प्रखण्ड–गुमला 4. लिंग–महिला, आयु–50 वर्ष, पहचान चिन्ह–आंखो पर दाग।	कंडिका–2(ix)
185.	1. आवेदन क्र0– /25 2. आवेदक–देविका सिंह, पति–सतीश कुमार सिंह 3. ग्राम–कदमा, पोस्ट–कदमा, थाना–कदमा, प्रखण्ड–कदमा 4. लिंग–महिला, आयु–67 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
186.	1. आवेदन क्र0– 148/25 2. आवेदक–रूमा सिंह, पति–रवीन्द्र प्रसाद सिंह 3. ग्राम–गिरिडीह, पोस्ट–गिरिडीह, थाना–गिरिडीह, प्रखण्ड–गिरिडीह 4. लिंग–महिला, आयु–76 वर्ष, पहचान चिन्ह–कपाल पर तिल।	कंडिका–2(ix)
187.	1. आवेदन क्र0– 149/25 2. आवेदक–पूनम देवी, पति–शंकर राम रवानी 3. ग्राम–पालगंज, पोस्ट–पालगंज, थाना–पीरटांड, प्रखण्ड–पीरटांड 4. लिंग–महिला, आयु–50 वर्ष, पहचान चिन्ह–उपर होंठ पर तिल।	कंडिका–2(ix)
	विवरणः– चिन्हित झारखण्ड आन्दोलनकारी सुबोध लकड़ा एवं पुष्कर महतो के द्वारा आयोग के माननीय सदस्य श्री भुवनेश्वर महतो के समक्ष आवेदन पर दर्ज बयान एवं पहचान के आधार पर।	
188.	1. आवेदन क्र0– 203/25 2. आवेदक–मोहन मराण्डी, पिता–स्व0 रायसिंह मराण्डी 3. ग्राम–चाईबासा टोली, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–53 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें बाजू में कटे का निशान।	कंडिका–2(ix)
189.	1. आवेदन क्र0– 204/25 2. आवेदक–मनसुख पुर्ती, पिता–स्व0 याकुब पुर्ती 3. ग्राम–हटिया, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–52 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें आंख के नीचे चेचक का निशान।	कंडिका–2(ix)
190.	1. आवेदन क्र0– 205/25 2. आवेदक–जुनास बन्डो, पिता–स्व0 फ्रांसिस बन्डो 3. ग्राम–कृष्णा नगर नीचे हटिया, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–51 वर्ष, पहचान चिन्ह–छाती में तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
191.	1. आवेदन क्र0– 206/25 2. आवेदक–प्रताप मेलगन्डी, पिता–स्व0 नारायण मेलगन्डी 3. ग्राम–चाईबासा टोली, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–50 वर्ष, पहचान चिन्ह–पेट में तिल कर निशान।	कंडिका–2(ix)
192.	1. आवेदन क्र0– 207/25 2. आवेदक–आदम मुन्डू, पिता–स्व0 सामुएल मुन्डू 3. ग्राम–चाईबासा टोली, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–56 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिना पैर में घाव का निशान।	कंडिका–2(ix)
193.	1. आवेदन क्र0– 208/25 2. आवेदक–बिनोद सोय, पिता–स्व0 लाण्डु सोय 3. ग्राम–चाईबासा टोली, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–50 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें अंगुली में तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
194.	1. आवेदन क्र0– 209/25 2. आवेदक–सोमनाथ जेराई, पिता–शिव शंकर जेराई 3. ग्राम–चाईबासा टोली, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें हाथ में कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
195.	1. आवेदन क्र0– 210/25 2. आवेदक–अंतु मराण्डी, पिता–स्व0 रायसिंह मराण्डी 3. ग्राम–चाईबासा टोली, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–ललाट में तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
196.	1. आवेदन क्र0– 211/25 2. आवेदक–सुजीत कुमार राम, पिता–मंगरू राम 3. ग्राम–डॉन बास्को रोड, देवीनगर, हेसाग, पोस्ट–हटिया, थाना–जगरनाथपुर, प्रखण्ड–नामकुम 4. लिंग–पुरूष, आयु–51 वर्ष, पहचान चिन्ह–माथे में बायें तरफ कट।	कंडिका–2(ix)

नोट :– 1. यह सूची पूर्णरूपेण औपबंधिक है।
2. यह सूची आयोग के द्वय सदस्यों द्वारा स्थानीय जांच शिविर/कार्यालय में जांच कर आवेदन पर दर्ज बयान के आधार आवेदन प्रपत्र की कण्डिका 14(ग) के आलोक में प्रकाशित की गयी है।
3. इस सूची में किसी प्रकार की त्रुटि पाये जाने पर दस (10) दिनों के अन्दर आयोग को आपत्ति कर सकते हैं।
4. आश्रित होने पर मृत्यु प्रमाण पत्र तथा आश्रित संबंधी प्रतिवेदन संलग्न करना आवश्यक है।

(भुवनेश्वर महतो) सदस्य | (नरसिंह मुर्मू) सदस्य | (दुर्गा उराँव) अध्यक्ष

PR 350400 Home (25-26)_D

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 17 अप्रैल, 2025
www.azadsipahi.in
12

छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों ने मार गिराये दो हार्डकोर नक्सली

आजाद सिपाही संवाददाता

रायपुर। छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों को बड़ी कामयाबी मिली है। कोंडागांव जिले में सुरक्षाबलों के साथ बुधवार को हुई मुठभेड़ में दो नक्सली मारे गये हैं। दोनों पर कुल 13 लाख रुपये का इनाम घोषित था। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले के किलम-बरगुम क्षेत्र के जंगल में हुई मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने पूर्वी बस्तर डिवीजन के डिविजनल कमेटी सदस्य हलदर और एरिया कमेटी सदस्य रामे को ढेर कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि हलदर पर आठ लाख रुपये और रामे पर पांच लाख रुपये का इनाम था। उन्होंने बताया कि कोंडागांव और नारायणपुर जिले की सीमा में

स्थित किलम -बरगुम क्षेत्र के जंगलों में नक्सलियों की उपस्थिति की सूचना पर कोंडागांव जिला रिजर्व गार्ड और बस्तर फाइटर्स के दल को मंगलवार को नक्सल विरोधी अभियान पर रवाना किया गया था। अधिकारियों ने बताया कि अभियान के दौरान सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ में अब तक दो नक्सलियों के शव बरामद किये गये हैं। उन्होंने बताया कि मुठभेड़ स्थल से एक एके-47 राइफल, अन्य हथियार, विस्फोटक और नक्सली सामान बरामद किया गया है।

अधिकारियों ने बताया कि क्षेत्र में नक्सलियों के खिलाफ अभियान जारी है। इससे पहले मंगलवार को मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले में पांच लाख रुपये के इनामी नक्सली ने सुरक्षाबलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले में 34 साल के रूपेश मंडावी उर्फ सुखदेव ने पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है। उन्होंने बताया कि नक्सली ने माओवादियों की खोखली और अमानवीय विचारधारा तथा नक्सली संगठन के भीतर बढ़ते मतभेदों से निराश होकर तथा राज्य सरकार की नयी आत्मसमर्पण और पुनर्वास नीति से प्रभावित होकर आत्मसमर्पण करने का फैसला किया है।

स्कूली पाठ्यक्रम में सड़क सुरक्षा का सबक होना जरूरी: नितिन गडकरी

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। भारत में सड़क दुर्घटनाओं की स्थिति को लेकर केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने हाल ही में कुछ भयावह आंकड़े जारी किये हैं। इस दौरान उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि इस स्थिति में सुधार लाने के लिए हमें आने वाली पीढ़ी को इस संबंध में जागरूक करना होगा और उन्हें सड़क सुरक्षा के अभियान से भी जोड़ना होगा। नितिन गडकरी ने इस विषय को लेकर भारत के शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ एक बैठक की है। बैठक के दौरान सड़क सुरक्षा के विषय को मौजूदा शिक्षा प्रणाली से जोड़ने पर चर्चा की गयी। केंद्रीय मंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में इसकी जानकारी दी है। गडकरी ने कहा कि 2023 में स्कूलों और शिक्षण संस्थानों के पास 11 हजार से ज्यादा युवाओं की जान चली गयी। इनमें से 10 हजार की उम्र 18 वर्ष से भी कम थी। नितिन गडकरी ने लिखा, यह आंकड़े चिंताजनक हैं और इस पर तत्काल एक्शन लेने की जरूरत है।

भावी पीढ़ी को जागरूक करना उद्देश्य

नितिन गडकरी ने आगे कहा, शिक्षा मंत्रालय के समर्थन के साथ हम सड़क सुरक्षा अभियान को पूरे भारत के स्कूलों के साथ जोड़ने के लिए तैयार हैं। इसका उद्देश्य हमारी भावी पीढ़ियों को सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूक करना है। उन्होंने बताया कि बैठक के दौरान उन्होंने स्कूलों के आसपास सुरक्षा स्थापित करने, स्कूल के समय बच्चों के प्रवेश और निकास के लिए सख्त प्रोटोकॉल लागू करने और स्कूल बसों और वैन में सुरक्षा मानकों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करने की तत्काल आवश्यकता पर भी चर्चा की।

अगले सप्ताह दिल्ली में पीएम मोदी से मिलेंगे अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और उनकी पत्नी उषा वेंस अगले सप्ताह भारत की यात्रा करेंगे। इसकी घोषणा अमेरिका के उपराष्ट्रपति कार्यालय की तरफ से की गयी है। जानकारी के मुताबिक जेडी वेंस 18 अप्रैल से 24 अप्रैल तक इटली और भारत की यात्रा करेंगे। उपराष्ट्रपति कार्यालय की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि अमेरिकी उपराष्ट्रपति दोनों देशों के नेताओं के साथ साझा आर्थिक और भू-राजनीतिक प्राथमिकताओं पर चर्चा करेंगे।

जोश जरूरी, पर संसद में संयम भी चाहिए: किरेन रिजिजू

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। विपक्ष की तरफ से केंद्र सरकार पर सदन में जबरन विधेयकों को पास करने के आरोपों पर केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने विपक्षी दलों के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि कई बार जब विधेयकों पर मतभेद होते हैं, तब ऐसे आरोप लगाये जाते हैं। साथ ही रिजिजू ने तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा से जुड़ी एक पुरानी घटना का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि राजनीति में युवा जोश और स्थिरता जरूरी है, लेकिन धैर्य और अनुभव भी उतना ही जरूरी होता है। संसद में शालीनता और सम्मान बनाये रखना हर सदस्य की जिम्मेदारी है। एक पॉडकास्ट में रिजिजू ने संसद के अपने अनुभव का हवाला देते हुए कहा कि मैं 2004 से संसद में हूं। मैंने कभी भी अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल नहीं किया, खासकर वरिष्ठों के साथ। उन्होंने कहा कि अटल जी से मैंने सीखा कि समय के साथ सम्मान और वरिष्ठता मिलती है, जल्दी करने से नहीं। उन्होंने महुआ मोइत्रा के 'डरिये मत' वाले बयान को लेकर भी अपनी प्रतिक्रिया दी। रिजिजू ने कहा कि भावुक भाषण और अनादर के बीच एक पतली रेखा होती है, जिसे पार करना संसदीय गरिमा के खिलाफ है। रिजिजू ने संसद में जज बीएच लोया की मौत का जिक्र करने को लेकर महुआ मोइत्रा की टिप्पणी पर भी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि वह बहुत ज्यादा उत्तेजित हो गयी थीं। उन्होंने एक संवेदनशील मुद्दे को जोड़कर हमारे एक वरिष्ठ मंत्री पर आरोप लगाया, इसलिए मुझे जवाब देना पड़ा। लेकिन उन्होंने इसे धमकी समझा। अध्यक्ष को तय करना है कि क्या कार्रवाई करनी है। रिजिजू ने कहा कि संसदीय कार्य मंत्री के रूप में विपक्ष और सरकार के बीच तालमेल बिठाना एक चुनौतीपूर्ण काम है। उन्होंने कहा, मैं कांग्रेस और अन्य दलों के नेताओं से बात करता हूं, उनके घर भी जाता हूं। कई बार तीखी बहस होती है, लेकिन यही संसदीय लोकतंत्र की खूबी है।

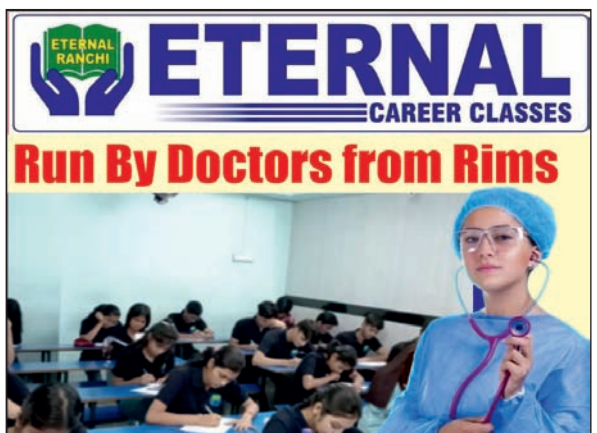

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**